देश की मिट्टी
देश की हवा
देश का पानी
देश की दवा



Jhansi
Baidyanath
ASLI AYURVED





औषधि विज्ञान

For Registered Medical Practitioner/Pharmacies/Medical Institutions

PDF Scanner ACE Scanner

विषय-सूची

मूल्य 15.00 रुपये

(केवल चिकित्सक एवं चिकित्सालयों के लिए)

प्रमुख रोगानुसार बैद्यनाथ औषधियाँ

ACE Scanner

PDF Scanner ACE Scanner

PDF Scanner ACE Scanner

एक दृष्टि

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की मर्यादाओं का पालन एवं औषधियों के निर्माण कार्य में आयुर्वेद को जिन्दा बनाये रखने में अभी भी बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की बड़ी मान्यता है। आयुर्वेद की औषधियों को यूँ तो हर फार्मेसी बना रही हैं और आयुर्वेद के नाम पर अंधाधुंध पैसा बटोर रही हें और आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की उन्नति की जगह अवनति का एवं विनाश का कारण बन रही हैं।

श्री बैद्यनाथ आयर्वुद भवन के संस्थापक वैद्यों में शिरोमणि आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान स्व. वैद्य श्री रामनारायण शर्मा शास्त्री जी ने बड़ी कठिन तपस्या के बाद इस आयु रक्षक एवं आयुर्वेद औषधि निर्माणशाला की नीव डाली, उसी नीव पर आयुर्वेद रूपी पक्की दीवारें बनी चली आ रही हैं, और उसी प्रकार से बरकरार आयुर्वेद की औषधियों का शास्त्रोवृत विधि से निर्माण होता चला आ रहा है।

श्री बैद्यनाथ भवन की औषधियों की गुणवत्ता तो जानकार वैद्य ही जाने। जैसे हीरा की परख जौहरी ही जानता है। कठिन परिस्थितियों में अर्थात आधुनिकता की चकाचौंध में भी बैद्यनाथ भवन ने आयुर्वेद की शास्त्रोक्त औषधियों के निर्माण में आयुर्वेद की मौलिकता की मर्यादा को निभाया है।

जिस विधि से आयुर्वेद शास्त्रों में औषधियों का निर्माण लिखा है उसी विधि से निर्माण हो रहा है। क्या बैद्यनाथ आधुनिकता का सहारा नहीं ले सकता, क्या उसके पास धन नहीं? सब कुछ जानता है परन्तु अर्थर्ववेद का उपवेद देवलोक में भी प्रिय आयुर्वेद की उन्नति और उसकी मौलिकता, उसकी नींव उसके सिद्धान्तों का उल्लंघन करके उसको गिराना नहीं चाहता। उसे बहुत ऊँचे सतर पर देखना चाहता है और प्रतिष्ठान का यह प्रयास दिनों–दिन निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है।

ACE Scanner

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लिमिटेड द्वारा आयुर्वेद के विकास व प्रचार में नये सोपान

आयुर्वेद :-

आयुर्वेद स्वास्थ्य और चिकित्सा की सबसे प्राचीन वैज्ञानिक पद्धति है। आयुर्वेद का अर्थ आयु का वेद है जो भारतीय जलवायु, रहन सहन, खान पान और जीवन पद्धति पर आधारित चिकित्सा शास्त्र है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य के 3 स्तम्भ बताए गए हैं। त्रयः उपस्तम्भा इत्याहारः स्वप्नों ब्रम्हचर्यमिति अर्थात आहार स्वप्न अर्थात विश्राम औ ब्रम्हचर्य अर्थात संयम। आयुर्वेद जहाँ स्वाभाविक रूप से स्वस्थ्य रहने पर जोर देता है वही आयुर्वेदीय दवाएं रोगों की जड़ का उच्छेदन करती हैं तथा अन्य पैथियों की दवाओं की तरह अन्य दुष्प्रभाव या दूरगामी विकृतियां पैदा नहीं करती। अपनी इस अद्वितीय विशेषता के कारण आज के प्रगतिशील वैज्ञानिक समय में भी आयुर्वेद व आयुर्वेदीय दवाओं की लोकप्रियता बहुत समुदाय के अंतर्मन में बरकरार हैं। अन्य पैथियों व दुष्प्रभावी दवाओं से लोग ऊबकर आयुर्वेद की ओर आकृष्ट हो रहे हैं और अपना रहे हैं। पश्चिम के प्रबुद्ध वर्ग में आयुर्वेद के प्रति रूझान बढ़ रहा है। आज आयुर्वेद एवं यूनानी दवाऐं करोड़ों रूपए की विदेशों में निर्यात हो रही है।

बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की स्थापना

अंग्रेजों के शासन काल में आयुर्वेद–विरोध का जो दुष्चक्र सुनियोजित ढंग से विरोधियों द्वारा किया जा रहा था, उससे पीड़ित युवा आयुर्वेद स्नातक वैद्य पं. रामनारायण शर्मा जी ने गहन आयुर्वेद के प्रेम से अविभूत होकर सन् 1918 में बिहार के बैद्यनाथ धाम (देवदार कस्बे) में अपने आयुर्वेद चिकित्सालय का नाम श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन अति शुभ मुहूर्त में रखकर चिकित्सा कार्य छोड़कर औषधि निर्माण कार्य में बड़े मनोयोग से जुट गये। निरन्तर बढ़ती लोकप्रियता के कारण जनता की व्यापक आयुर्वेद सेवा के उद्वेश्य से प्रतिष्ठान को सन् 1921 ई. में बैद्यनाथ फैक्ट्री कलकत्ता में स्थापित करने से व्यापक सफलता अर्जित हुई और निर्माण तथा वितरण को सम्पूर्ण भारत में अधिक सुव्यवस्थित करने के लिए वर्ष 1940 ई. में पटना (बिहार) 1941 ई. को झांसी (उ.प्र.) में, सन् 1942 में नागपुर (महाराष्ट्र) तथा सन् 1958 ई. में नैनी (इलाहाबाद), वृहत निर्माणशालाएं स्थापित कर साथ–साथ शोधकार्य (रिसर्च) अनुसंधान निरन्तर चलाया गया। जिसमें व्यापक सफलता के साथ–साथ आयुर्वेदीय अनुभूत/पेटेण्ट, औषधि उत्पाद निर्माण केन्द्र की स्वतंत्र आवश्यकता को देखते हुए बद्दी (हिमाचल) सौसर (म.प्र.), जौनपुर, सूरजपुर आदि सुव्यवस्थित स्थानों पर सन् 1995 ई. तक निर्माण और वितरण केन्द्रों की पूर्ण व्यवस्था के पश्चात आज देश में 900 बिक्री तथा 80,000 (अस्सी हजार) से अधिक एजेंसियों के माध्यम से देश के कोने–कोने में बैद्यनाथ आयुर्वेदिक औषधियाँ उपलब्ध करायी जाती है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ दवाओं के व्यवसाय से जीविकोपार्जन करने वाले परिवारों की संख्या आज लाखों में है। औषधि (दवाओं) के निर्माण कार्य में सभी फैक्ट्रियों में आज भारत सरकार की जी.एम.पी. उत्तम निर्माण प्रक्रिया व्यवस्था के तहत जो भारत सरकार ने नयी नीति निर्धारण में अपनायी है, के अनुसार योग्य और अनुभवी आयुर्वेदज्ञ एवं पूर्ण प्रशिक्षित डिप्लोमा धारक आयुर्वेद स्नातक कार्यरत् हैं। आज बैद्यनाथ एक आई.एस.ओ. 9002 कम्पनी भी है।

अनुसंधान एवं निर्माण दक्षता :-

आयुर्वेद के विविध अंग उपांगों के विकास और प्रमुख रोगों के उन्मूलन के लिए विशुद्ध गुणकारी नई–नई दवाओं के लिए प्रमाणित अनुसंधान की श्रृंखला को जीवंत रखने की व्यापक योजनाओं पर विशेषज्ञों की टीमें अनवरत रूप से कार्यरत रहती हैं। जिनके सुपरिणामों से आयुर्वेद व रोगाक्रांत मानव–समाज लाभान्वित हो रहा है। 50 से अधिक सुयोग्य रसायन–शास्त्रियों तथा फार्मैसिस्टों की देखरेख में मूल–द्रव्यों की शुद्धता एवं गुणवत्ता की परीक्षा तथा उत्पादनों के जांच के लिए सुसज्जित परीक्षणशालाएं संलग्न हैं। जहाँ द्रव्यों की गुणवत्ता की जांच और उनकी सफाई, कुटाई, पिसाई, छनाई से लेकर दवा तैयार होने तथा पैकिंग तक की तमाम प्रक्रियाओं में अनेक छोटी–बड़ी मशीनों एवं आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। मशीनों के व्यवहार में यह पूरी तरह ध्यान रखा जाता है कि मूल द्रव्यों एवं उत्पादनों की गुणवत्ता पर तनिक भी प्रतिकूल प्रभाव न पड़ें।

मौलिकता के साथ आधुनिकता :-

आयुर्वेद की मौलिक विशेषताओं पर ध्यान रखने के साथ–साथ विज्ञान की नवीनतम खोजों तथा उपलब्धियों को अंगीकार करने की हमारी सुविचारित नीति है। इसलिए सभी निर्माणा शालाएं आधुनिक साधनों से भी सुसज्जित हैं और आवश्यकतानुसार ऐसे सभी आवश्यक उपकरण लगाए गए हैं, जिनमें आयुर्वेद की मौलिकता कायम रखते हुए भी समय व श्रम की बचत होती हैं और उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। निर्माण संबंधी प्रक्रियाओं में शास्त्रीय विधि–विज्ञान को पूरी तरह अपनाया जाता है। तथा शीघ्र उत्पादन के लिए समय–सीमा का अतिक्रमण नहीं किया जाता।

वनौषधि वाटिकाएं :-

शुद्ध और गुणकारी औषधि द्रव्यों की उपलब्धता के लिए जहाँ वनौषधि से गुणकारी जड़ी बूटियाँ संग्रहीत करने की हमारी निजी व्यवस्थाएं हैं वहीं प्रतिष्ठान की कई–कई एकड़ों में फैली निजी वनौषधि–वाटिकाएं भी हैं। अधिक उत्तम वनौषधियों की खोज के लिए हमारी वनौषधिय–विशेषज्ञ, दल पिछले 50 वर्षों से प्रति वर्ष योजनाबद्ध रूप से दुर्गम वनौषधि–स्थलों की यात्राएं करते हैं। अब तक उत्तराखण्ड, कश्मीर, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, चित्रकूट, विंध्याचल, नीलगिरि व आसाम के दुर्गम वन–प्रदेशों में कई–कई बार लम्बी खोजों के बाद 450 से अधिक ऐसी दुष्प्राप्त वनौषधियों का अन्वेषण किया गया जो

ACE Scanner

पहले केवल शास्त्रों में ही वर्णित थी।

आयुर्वेदोन्नति में योगदान :-

मूर्धन्य आयुवेद मनीषियों को सम्मानित करके उन्हें आयुर्वेद–सेवा के लिए उत्साहित किया जाता है। आयुर्वेद महाविद्यालय में आयुर्वेद अनुसंधानों, आयुर्वेद–अस्पतालों आदि को पर्याप्त आर्थिक सहयोग तथा आयुर्वेद अध्ययनतरत छात्र–छात्राओं के लिए छात्रवृत्तियाँ भवन द्वारा नियमित दी जाती है और विश्वविद्यालय के माध्यम से सर्वाधिक अंक प्राप्त श्रेणी में उत्तीर्ण बी.ए.एम.एस. (आयुर्वेदाचार्य) को भवन के संस्थापक पं. रामनारायण शर्मा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया जाता है। देश के मूर्धन्य आयुर्वेदज्ञों को एकत्र करके शास्त्र चर्चा परिषदों के आयोजनों में आयुर्वेद के अनेक जटिल विषयों में सर्वमान्य निर्णय लिए गए, वे आयुर्वेद की श्री–वृद्धि में अनूठे अध्याय है।

शास्त्र-चर्चा परिषदों का संक्षिप्त विवरण :-

आयोजन–वर्ष व माह स्थान विषय

1– दिसम्बर, 1950 पटना–पंचमहाभूत

2– मई 1953 हरिद्वार–द्रव्य, गुण, रस, वीर्य, विपाक प्रभाव

3– जुलाई 1950–दिल्ली, शरीर, संध्या शब्द विनिश्चय

4– नवम्बर 1958–रतनगढ़ श्वास–जटिल रोग

5– जून 1958 लक्ष्मणझूला–महास्त्रोतस्

6– 1978 हैदराबाद–ब्राह्यचर्मरोग

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय :-

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लिमिटेड सर्वाधिक आयुर्वेदीय औषधियों का विश्वसनीय निर्माता होने के बावजूद प्रारम्भ से ही स्वाभाविक, जीवन–चर्या अपनाने का प्रचार–प्रसार करता आ रहा है। आयुर्वेद के इस मूल–मंत्र को भारतीय जन–मानस में आत्मसात् कराने के लिए जहाँ ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतुओं के आहार–विहार पर आधारित आयुर्वेदीय नियम–सिद्धांतों पर लाखों पुस्तकें भारत के कोने–कोने में प्रति वर्ष मुफ्त वितरित करता है, वहीं भारत व्यापी स्तर पर स्वास्थ्य प्रदर्शनियों का भी आयोजन करता आ रहा है तथा बाढ़, सूखा या विशेष दुर्घटनाओं व दैवीय आपदाओं के समय चिकित्सा–शिविर लगाकर दवाओं व अन्न–वस्त्र भी मुफ्त वितरित करता है। उत्तम स्वास्थ्य साधना के प्रति भारतीय जनता विशेषकर युवकों को उत्प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर "बैद्यनाथ श्री" प्रतियोगिताओं के माध्यम से लोगों को पुरूस्कृत किया है। होनहार स्वास्थ्य–साधनों को आर्थिक योगदान और पौष्टिक आहार की व्यवस्था नियमित रूप से चल रही है। देश के अनेक नगरों में भवन द्वारा संचालित निःशुल्क धर्मार्थ औषधालयों में मुफ्त औषधि–वितरण के अलावा स्वास्थ्य केन्द्रो का संचालन करते हुए भारतीय जनता को

PDF Scanner ACE Scanner

आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों के आधार पर स्वाभाविक रूप से स्वस्थ्य रह कर उत्तम स्वास्थ्य साधना के लिए अभिप्रेरित किया जाता है। प्रायः सभी बैद्यनाथ बिक्री केन्द्रों पर मुफ्त चिकित्सा परामर्श देने की सुविधा है।

कुछ वर्ष पूर्व नागपुर में संत तुकड़ों जी कैसर अस्पताल को बैद्यनाथ धर्मशाला समर्पित की गयी है।

आयुर्वेदोत्थानमूलक साहित्य का प्रकाशन :-

भवन के द्वारा प्रकाशित 64 दुलर्भ ग्रंथ आयुर्वेदीय चिकित्सा के संदर्भ में मूल्यवान व, उपादेय तो हैं ही, इनमें स्वाभाविक स्वास्थ्य के विषय में उपयोगी दिशा–निर्देशों का भी समावेश है। अनेक ग्रंथ आयुर्वेद के विभिन्न विश्वविद्यालयों के उच्च पाठयक्रमों के लिए स्वीकृत हैं। प्रतिष्ठान के संस्थापक वैद्यराज पंडित रामनारायण जी शर्मा के द्वारा दीर्घकालीन अनुभव एवं अथक परिश्रम से लिखित स्वास्थ्य एवं आयुर्वेदीय चिकित्सा के व्यवहारिक ज्ञान पर आधारित ग्रंथ रत्न 'आरोग्य–प्रकाश' की लोकप्रियता इस तथ्य से प्रमाणित हो गयी है कि उसका हिन्दी के अलावा अंग्रेजों मराठी व गुजराती में अनुवाद हो चुका है। तथा अब तक 3 लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। वैद्यनाथ प्रकाशनों में से "आयुर्वेद सार संग्रह" भारत सरकार के औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 के प्रथम शिडयूल के अंतर्गत औषधि निर्माण के लिए स्वीकृत है।

उपयोगीमासिक सचित्र आयुर्वेद :-

आयुर्वेद की बहुमूल्य निधियों से जन–जन को लाभान्वित करने, आयुर्वेद–विकास और शोध/रिसर्च संबंधी उपलब्धियों को प्रकाश में लाने और आयुर्वेद जगत को विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराने के उद्देश्य से पिछले 56 वर्षों से भवन के द्वारा "सचित्र आयुर्वेद" मासिक का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

स्वास्थ्य की महत्ता के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट करके रोग–रहित स्वस्थ्यता की प्राप्ति के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए आयुर्वेद के आदि प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि की जयन्ती को "स्वास्थ्य दिवस" के रूप में देश के कोने–कोने में मनाने का जो श्रीगणेश भवन के द्वारा लगभग 70 वर्ष पूर्व किया गया था, आज वह अन्यान्य औषधि–निर्माताओं, वैद्यों व आयुर्वेद प्रेमियों के द्वारा भी प्रति वर्ष उल्लास पूर्वक मनाया जाता है जिसमें लोगों को स्वास्थ्य की महिमामयी गरिमा से परिचित कराया जाता है।

इस शुभ अवसर पर श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा.लि. देश के अनेकों आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञ वैद्य मनीषियों को अपने बिक्री केन्द्रों एवं निर्माणशालाओं में आमंत्रित कर उन्हें समारोह पूर्वक सम्मानित करता है। प्रतिवर्ष श्री धन्वन्तरि जयन्ती समारोह में शताधिक आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाता है।

PDF Scanner ACE Scanner

रिसर्च ट्रस्ट की स्थापना

देश–विदेश में आयुर्वेद को प्रमुखता देने के उद्देश्य से देश के सबसे बड़े देशी दवाओं के निर्माता बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संस्थापक स्व. पं. रामनारायण शर्मा ने 1979 में श्री रामनारायण शर्मा वैद्य आयुर्वेदरिसर्च ट्रस्ट की स्थापना की थी।

आयुर्वेद का प्रसार एवं प्रमाणित आयुर्वेदीय दवाओं के निर्माण के बहु–आयामी कार्यक्रमों पर अनुसंधान किया जाए व अन्वेषणों का आयोजन किया जाए एवं देश–विदेश में आयुर्वेद मनीषियों को उनकी आयुर्वद सेवा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को प्रेरित एक उत्साहित करने के लिए ट्रस्ट की स्थापना की थी। स्थापना के समय ही स्वर्गीय वैद्य जी आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए आयुर्वेद के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वैद्य, हकीम, चिकित्सकों को एक लाख रूपए का पुरस्कार देने की घोषणा की थी। वैद्य जी की घोषणानुसार बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि. 1982 से हर साल एक लाख का पुरूस्कार दे रहा है और आगे भी देता रहेगा।

ट्रस्ट की स्थापना की चौथे वर्ष 1982 में आचार्य दामोदर शर्मा गौड़ को उनके "अभिनव शारीरमष ग्रंथ पर तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री वी. शंकरानंद के द्वारा वर्ष 1983 में वैद्य हरीदत्त शास्त्री, बम्बई को उनकी कृति "देह तत्वाग्नि विज्ञानष पर वर्ष 1984 में आचार्य प्रियवृत्त शर्मा, वाराणसी को उनकी कृति "फ्रूट्स एण्ड वेजीटेबिल्स इन एशेन्ट इंडियाश पर और वर्ष 1985 में स्वर्गीय रणजीत राय देसाई, सूरत को आयुर्वेदीय साहित्य में उल्लेखनीय उनकी मौलिक कृति का चयन के योगदान के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा प्रदान किया गया।

वर्ष 1986 के लिए गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय जामनगर के पूर्व कुलपति वैद्य विनायक धनयानंद जी ठक्कर को वर्ष 1987 के पुरूस्कार को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को दो दिवंगत आयुर्वेद विशेषज्ञों स्व. विश्वनाथ द्विवेदी व स्व.जे.देशपांडे को आधा आधा दिया गया। वर्ष 1988 का पुरूस्कार डॉ. ज्योति मित्र प्रो. सिद्धांत आयुर्वेदिक स्नातकोत्तर केन्द्र हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी को उनकी मौलिक शोध कृति ष्बुद्ध साहित्य में आयुर्वेदश विषय के मौलिक शोध प्रकाशन पर प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव द्वारा प्रदान किया गया।

वर्ष 1989 का पुरस्कार राजवैध पं. बृहस्पतिदेव त्रिगुणा, नई दिल्ले को आयुर्वेद में उल्लेखनीय अर्न्तराष्ट्रीय चिकित्सा कार्योन्नति पर एवं वर्ष 1990 का पुरस्कार आचार्य वैद्य रामनिवास शर्मा, हैदराबाद को आयुर्वेद में उल्लेखनीय कार्योन्नति पर, वर्ष 1991 का पुरस्कार स्व. आचार्य श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी हाथरस (उ.प्र.) आयुर्वेद में उल्लेखनीय कार्योन्नति पर, 1992 का पुरस्कार आचार्य वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय वाराणसी के आयुर्वेद में उल्लेखनीय कार्योन्नति पर, वर्ष 1993 का पुरस्कार आचार्य वैद्य शिवकरण शर्मा छंगाणी

ACE Scanner

नागपुर (महाराष्ट्र) को आयुर्वेद की उत्कृष्ट सेवा के लिए वर्ष 1984 का पुरस्कार वैद्य पं. श्रीराम शर्मा, मुम्बई को आयुर्वेद की उत्कृष्ट सेवा के लिए। वर्ष 1995 का पुरस्कार डॉ. पी. एन.वी. कुरूप–जामनगर (गुजरात) को उनके द्वारा आयुर्वेद की उत्कृष्ट सेवा के लिए उपरोक्त आयुर्वेद मनीषियों को क्रमशः भारत के केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री एवं प्रधानमंत्री जी के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया और भविष्य में निरन्तर आयुर्वेद की अक्षुण्य सेवा के लिए प्रतिष्ठान के संस्थापक आयुर्वेद ऋषि स्व. वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा की "अमर–कीर्ति" के रूप में दिया जाता रहेगा। अब इस पुरस्कार की राशि एक लाख पचास हजार (डेढ़ लाख) रूपये कर दी गयी है। "वैद्य रामनारायण शर्मा आयुर्वेद रिसर्च ट्रस्ट" उपरोक्त पुरस्कार के अतिरिक्त आयुर्वेद की चिकित्सा विधा को सर्वोन्नत प्रयास के लिए भी प्रोत्साहित करता है। अतः वैद्य समुदाय को आहूत किया जाता है कि उत्साह पूर्वक आयुर्वेद में नवीन खोज मौलिक कीर्ति का सम्पादन लेखन कर ट्रस्ट की सेवाओं से लाभान्वित हों।

वैद्य सहायता केन्द्र (बैद्यनाथ रिसर्च फाउण्डेशन) :-

वर्ष 2000 ई. को वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा शताब्दी वर्ष में आयुर्वेद चिकित्सकों एवं समन्वय चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सा विशेषज्ञों से निरन्तर सम्पर्क साधना द्वारा आयुर्वेद की चिकित्सा सेवा का आंकलन करना तथा विशुद्ध आयुर्वेद पद्धति अनुरूप चिकित्सा करने वाले चिकित्सकों को बैद्यनाथ फाउण्डेशन द्वारा शोधकार्य से उत्पादित नवीन आयुर्वेदिक अनुभूत/पेटेण्ट योगों को अपनाने तथा विशिष्टता के लिए विचार–विमर्श द्वारा बौद्धिक एवं व्यवहारिक समन्वय से चिकित्सा क्षेत्र में आयुर्वेदोन्नति की दृष्टि से चिकित्सकों से चिकित्सक द्वारा जनसम्पर्क के लिए प्रतिष्ठान ने सुयोग्य आयुर्वेदाचार्यो की प्रान्तवार टीमें गठित कर दी है। जिन्हें जे.पी.एस (जूनियर प्रोडक्ट स्पेशलिस्ट) एस.पी.एस. (सीनियर प्रोडक्ट्स स्पेशलिस्ट) नाम दिया गया है जबकि अन्य औषधि निर्माता नॉन मेडीकल स्नातक/ग्रेजुएट्स को एम.आर. (मेडीकल रिप्रजेन्टेटिव) द्वारा चिकित्सकों से सम्पर्क साधना करते हैं।

PDF Scanner ACE Scanner

रस-भस्मों की विशेषता

अल्पमात्रोपयोगित्वादरूचेरप्रसंगतः।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वादौषधेभ्योधिको रसः।

रस अपनी तीन मौलिक विशेषताओं के कारण औषधियों में सर्वोत्तम है।

1– अल्पमात्रा–प्रयोग
2– स्वाद में रूचिपूर्णता और
3– शीघ्रातिशीघ्र रोगनाश।

स्पष्ट है कि किसी औषधि का काढ़ा एक से दो छटांक तक की मात्रा में दिया जाय, तब कहीं लाभ होता हैं, परन्तु रस औषधि की 125 मि.ग्रा. से 250 मि.ग्रा. की खुराक से ही पूरा लाभ हो जाता है। चूर्ण, बटी, चटनी, अवलेह आदि अन्य सभी औषधियाँ लाभ पाने के लिए अधिक मात्रा खानी पड़ती है। केवल रस–भस्मों में यह अद्वितीय विशेषता है कि यह अल्पमात्रा में पूरा प्रभाव करती है।

रोग को शीघ्र नष्ट कर आरोग्य प्रदान करना इन औषधों को अपनी ही विशेषता है। रस अपने प्रभावों का चमत्कार 1–2 घण्टे में ही दिखा देता है। डॉक्टरों एलोपेथी की चमत्कारिक आशुगुणकारी दवाओं के प्रचार से प्रभावित इस जमाने में यदि रस–चिकित्सा न होती तो वैद्यक समाप्त ही हो गई होती यह रस औषधों का ही प्रभाव है कि डॉक्टर द्वारा लाइलाज कहकर छोड़े हुए असाध्य रोगियों को भी योग्य वैद्य अच्छा करके यशस्वी होते है।

आयुर्वेद शास्त्र में भी "उत्तमो रसवैद्यस्तु मध्यमो मूलकादिभि" कहकर रस औषधों से चिकित्सा करने वाले वैद्य को उत्तम तथा काष्ठादिक औषधों से चिकित्सा करने वाले वैद्य को मध्यम बताया गया है। इससे भी रस–भस्मों की विशेषता सिद्ध है।

भस्मों की उत्तमता

आयुर्वेद शास्त्र में भस्मों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों में काढ़ा आदि काष्ठौषधियों की भांति भस्मों का प्रयोग मामूली रोगों तक में किया जाता है। जुकाम या सर्दी लगने पर बनंप्सा की तरह अभ्रक भस्म दी जाती है, जिससे रोगी जल्दी ठीक हो जाता है। काष्ठौषधियों के साथरस या भस्म का प्रयोग बहुत ही चमत्कारिक फल दिखाता है। पाण्डु, संग्रहणी, शोथ, खून की कमी आदि में लौह मण्डूर भस्म के मुकाबले लाभ करने वाली कोई अन्य दवा नहीं। स्वर्ण भस्म के सिवा दूसरी किस दवा में इतनी ताकत है कि राज्यक्ष्मा से रोगी की रक्षा करें। हीरा, मोती या प्रवाल भस्म के समान ह्दय को मजबूत करने वाली कौन सी दवा है प्रमेह या धातुपुष्टि के लिए वंग भस्म के समान दूसरी औषधि है ही नहीं। इसी प्रकार सभी रस–भस्म रामबाण की भाँति अचूक लाभ करने वाली होती है। धातुयें बैद्यनाथ रस, भस्म और कूपीपक्व रसायनें सर्वोत्तम होती है क्योंकि उन्हें उत्तम श्रेणी के द्रव्यों के संयोग से पूर्ण शास्त्रीय विधि–विधान से दीर्घ अनुभवी विशेषज्ञों की देखरेख में निर्माण कराया जाता है। यहाँ आयुर्वेद के कुछ प्रमुख रस–भस्म और कूपीपक्व रसायनों का परिचयात्मक विश्लेषण दिया जा रहा हे।

ACE Scanner

बैद्यनाथ रस-भस्मों का निर्माण-प्रबन्ध

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा.लि. आज भारत में देशी दवाओं का सबसे विशाल प्रतिष्ठान है और रस–भस्मों में निर्माण में यह जो सर्वोपरि विशेषज्ञ माना जाता है, इसका कारण यही है कि बैद्यनाथ रस–भस्मों का निर्माण सर्वथा शास्त्रोक्त रीति से ही किया जाता है। गाँव में स्थित भस्म–निर्माणशाला में 25 गुजफुट और 10'10, 20–20 मन से अधिक तैयार होती हैं। मनों के परिमण में बनने के कारण भस्मों का स्टाक तो काफी रहता ही है, वे पुरानी होकर ही बिकती है। यह सर्वविदित है कि भस्में जितनी पुरानी होंगी, उतनी ही अधिक लाभप्रद होंगी। एक–आधा सेर परिमाण में तैयार करने वाली पुरानी भस्मों का स्टॉक कैसे रख सकते हैं।

भस्म और कूपीपक्व रसायनों के विशेषज्ञ आयुर्वेदाचार्यों की देख–रेख में, बैद्यनाथ औषधि भस्में निर्माण होकर कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर, बद्दी (सोलन) के कारखानों में आ जाती है। यहाँ बड़ी सावधानी और सफाई के साथ रस–भस्मों की शीशियों में पैक करके बिक्रयार्थ भेजा जाता है। पैकिंग ऐसे ढंग से की जाती हैं कि बेचने वाला किसी तरह का गोलमाल उसमें नहीं कर सकता। कीमती भस्में 500 मि.ग्रा. तक के छोटे पैकिंग में प्रस्तुत की जाती है। जिससे खरीदने वाले को असुविधा न हो। 3 ग्राम (चार आना भर) भस्म की जरूरत हो तो एक तोला की शीशी लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। बैद्यनाथ भस्मों की सबसे बड़ीं विशेषता यह है कि सारे भारत में एक समान स्तर, एक से पैकिंग और एक से मूल्य में मिलती हैं।व्यापारी भाव में छपे मूल्य से अधिक पैसे नहीं ले सकता। बैद्यनाथ रस–भस्मों का मूल्य इतना जायज है कि असली चीज उससे कम में तो मिलना ही संभव नहीं। निर्माण में बहुत बड़े परिमाण में एक साथ बनाने से मूल द्रव्य,उत्पत्ति स्थान से सीधा मँगाने से और निर्माण में सुविधा होने से, प्रारम्भिक लागत कम पड़ती है इसलिए बैद्यनाथ रस–भस्मों का मूल्य कम होता है। इससे भी सस्ता मूल्य रखकर जो रस–भस्मों की वास्तविकता पहचानना कठिन है। एक ही उपाय है कि रस भस्म लेते समय यह देख लें कि वे जिसकी बनी हैं वह कारखाना साधन सुलभ एवं विश्वासी है या नहीं।

रस-भस्मों के स्टॉक की आवश्यकता है

दवा विक्रेताओं और चिकित्सकों बैद्यों के पास सदा ही रस–भस्मों का पर्याप्त स्टाक मौजूद रहना जरूरी है। पता नहीं किस समय किस रस–भस्म की अत्यन्त आवश्यकता आ पड़े। ऐन मौके पर यदि रोगी को उचित दवा न मिले तो मृत्यु तक हो जाती है। पत्र लिखकर दवा मँगने पर रोगी को कुछ का कुछ हो सकता है। इसलिए हर रोग के लिए एक–दो रस और सभी भस्में सदा रखना ही चाहिए। चालू रस–भस्मों का पूरा संग्रह न हो, वह बिना हथियार वाले सिवाही के समान होता है, जिससे असफल होना पड़ता है। जो वैद्य और दुकानदार बाहरी तड़क–भड़क में व्यय करते हैं और औषधों का स्टाक पूरा नहीं रखते वे कभी सफल नहीं होते। ऊपरी साज–सज्जा में जो व्यर्थ हो, उसको औषधों का स्टाक बढ़ाने में लगाना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में रस भस्मों का स्टाक रखना इस दृष्टि से भी

ACE Scanner

लाभकर होता है कि रस–भस्म जितने पुराने होते जाते हैं उनकी गुणकारिता उतनी ही बढ़ती जाती है। वे ऐसी वस्तु नहीं जिनके अधिक दिनों तक रखने में खराब होने या अन्य किसी तरह की हानि होने की आशंका हो। शास्त्रों में कहा गया है कि "पुराणा स्युर्गुणैर्युक्ता आसवा धातवों रसा"–अर्थात् आसव धातु की भस्में और रस पुराने होने से अधिक गुण करते हैं। इसलिए रस–भस्मों का पूरा संग्रह रखने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए।

अनुपान-सम्बन्धी जानने योग्य बातें

(1) भस्मों और रसों की जो मात्रा लिखी गयी है, वह पूरी उम्र वालों के लिए है। बालक और कमजोर आदमी को आधी मात्रा देनी चाहिए। छोटे बच्चों को जिनकी उम्र 1 साल की हो, चौथाई मात्रा या वैद्य की सलाह लेकर कम–बढ़ मात्रा देनी चाहिए।

(2) भस्मों की मात्रा कम–से–कम 1 रत्ती को और अधिक–से–अधिक 3 रत्ती है। इसलिए साधारण अवस्था में इसके बीच की मात्रा लेनी चाहिए और ताकतवर को पूरी तथा रोग की प्रबल अवस्था में किसी अनुभवी वैद्य की सलाह लेकर मात्रा निश्चित करनी चाहिए।

(3) लाल मिर्च, तेल, गुड़, गर्म मसाला आदि चीजें तथा गरिष्ट (देर से हजम होने वाला) या वासी भोजन न करना चाहिए। दूध, घी, मक्खन आदि पौष्टिक चीजें खाना चाहिए और ब्रह्मचर्य का पालन करना उत्तम है।

रस निकालने की विधि

बहुत–सी दवाओं का अनुपान स्वरस (रस) के साथ होता है। स्वरस की विधि तीन प्रकार की है :–

प्रथम विधि–किसी ताजी हरी जड़ी–बूटी या पत्ती को कूटकर उसको कपड़े से निचोड़ लेने पर स्वरस तैयार हो जाता है। इसे आधा तोला से 2 तोला (5 से 20 मिली.) तक लेना चाहिए।

दूसरी–विधि–यदि हरी जड़ी–बूटी न मिले तो वैसी हालत में सूखी औषधियां को कूटकर दुगुने पानी में 24 घण्टे भिंगोकर छान लेने पर वह भी स्वरस की जगह व्यहार होता है। इसे 1 से 4 तोला (10 से 40 मिली.) तक लेना चाहिए।

तीसरी–विधि–सूखी दवा को कूटकर पानी में उबालना और जब चौथाई भाग जल बच जाय तब छानकर उसे स्वरस की जगह काम में लेना चाहिए। इसे 1 तोला से 4 तोला (10 से 40 मिली.) तक लेना चाहिए। जिस दवा में केवल स्वरस का अनुपान हो वहाँ दवा को पीस कर स्वरस के साथ मिलाकर लेना जहाँ रस और मधु दोनों लिखा हो वहाँ दवा को मधु में घोंटकर रस मिला कर लेना चाहिए।

प्रत्येक औषधि के नाम के आगे कोष्टक में उस ग्रन्थ/शास्त्र (पुस्तक) का नाम अंकित किया गया है जिसके आधार पर उस औषधि उत्पादन का निर्माण किया गया है। जैसे–अभ्रक भस्म के आगे कोष्टक में "रसराज सुन्दर" लिखा है। इससे यह ज्ञात कराया गया कि "रसराज सुन्दर" नाम के ग्रन्थ (पुस्तक) में वर्णित विधि के अनुसार निर्माण किया गया है।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ औषधि विज्ञान

शास्त्रोक्त औषधियों के साथ मानक ग्रन्थों के नाम –संकेत, परिचय, औषधि निर्माण आधार ग्रन्थ की नाम तालिका–

आधार ग्रन्थ का सांकेतिक नाम	पूरा नाम	आधार ग्रन्थ का नाम	सांकेतिक एवं पूरा नाम
रा.रा.सु.	रसराज सुन्दर	यो०चि०	योग चिन्तामणि
आ०सा०सं०	आयुर्वेद सार संग्रह	सि०भै०म०मा०	सिद्धभैषज्य मणिमाला
र०सा०सं०	रसेन्द्र सार संग्रह	र०र०सं०	रस रत्न समुच्य
र०त०सा० व सि०प्र०सं०	रसतंत्र सार व सिद्धप्रयोग संग्रह	र०म०	रसामृत
		अ०प्र०	अर्क प्रकाश
सि०सं०	सिद्धयोग संग्रह	च०सं०	चरक संहिता
र०यो०सा०	रसयोग सागर	यो०र०	योग रत्नाकर
भा०भ०र०	भारत भैषज्य रत्नाकर	र०रा०सु०	रसराज सुन्दर
आ०प्र०	आयुर्वेद प्रकाश	आरो०प्र०	आरोग्य प्रकाश
र०तं०	रस तंरगिणी	च०द०	चक्रदत्त
र०मृ०	रसामृत	र०च०	रस चण्डाशु
सि०प्र०सं०	सिद्धप्रयोग संग्रह	नि०र०	निघण्टु, रत्नाकर
भै०र०	भैषज्य रत्नावली	भा०प्र०	भाव प्रकाश
र०यो०सा०	रसयोग सागर	शा०सं०	शारंगधन संहिता
वै०जी०	वैद्य जीवन	अनुभूत	पटेण्ट प्रोपराइटरी

औषधि योगों (कम्पाउण्डों) में विशेष औषधि द्रव्य का सांकेतिक नाम परिचय

औषधि घटक/ सांकेतिक विशेष द्रव्य	पूरा नाम/ विशेष घटक द्रव्य	औषधि घटक/ सांकेतिक विशेष द्रव्य	पूरा नाम/ विशेष घटक द्रव्य
मो०यु	मोती युक्त	के०यु	केशर युक्त
स्व०यु०	स्वर्ण युक्त	स्व०मो०यु०	स्वर्ण मोती युक्त
ना०के०यु०	नाग केशर युक्त	के०अ०यु०	केशर, अम्बर युक्त

ACE Scanner

बैद्यनाथ भस्म तथा पिष्टी

एलोपैथिक, चिकित्सा में जिस प्रकार से इन्जेक्शन तत्काल लाभदायक माने जाते हैं, आयुर्वेदिक चिकित्सा–प्रणाली में भस्म के प्रयोग उससे भी अधिक फलप्रद सिद्ध होते हैं। शीघ्र एवं उत्तम फल–प्राप्ति के लिए आयुर्वेदिक भस्मों की विशुद्धता, द्रव्यों की उत्तमता, निर्माण सम्बन्धी शास्त्रीय दक्षता एवं समय और साधनों की आवश्यकता होती है। अतः सभी वैद्य या फार्मेसी वाले भस्मों को यथार्थ रूप में तैयार नहीं कर पाते । बैद्यनाथ भस्मों की श्रेष्ठता तथा प्रमाणिकता सिद्ध हो चुकी है, जिसके कारण निम्नलिखित है।

1. बैद्यनाथ भस्मों की भस्म क्रिया में कण्डों (उपलों) का ही व्यवहार किया जाता है।

2. इन्हें उन्हीं मूल तत्वों व्यवहार किया जाता है जिनके धातुत्व, और उपधातुत्व का परीक्षण कर लिया गया हो, ताकि निम्न या मिलावट वाले द्रव्यों से भस्म न बने।

3. बैद्यनाथ– रसायनशाला के अध्यक्ष, पारद के संस्कार और भस्मों की विशेषता के लिए देश भर में प्रसिद्ध है।

4. भस्म और पिष्टी का निर्माण पूर्ण शास्त्रीय विधि से प्रचुर मात्रा में होता है और विपुल स्टाक रहता है।

बैद्यनाथ अभ्रक भस्म (रसराज सुन्दर)

अभ्रक भस्म एक खनिज भूगर्भीह (पृथ्वी की सतह) एवं पर्वतों में पाया जाने वाला काला पत्थर है। शास्त्रों में काला अभ्रक (कृष्णाभ्रक) को ही श्रेष्ठ बताया गया है। आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित उत्तम धान्य अभ्रक शोधन विधि द्वारा अभ्रक का शोधन कर उत्तम पुटविधान से अग्नि में इसकी भस्म बनायी जाती है। उत्तम भस्म वही होती है जिसमें चमक न हो निश्चन्द्र (चमकहीन) भस्म बनाने के लिए वैद्य लोग इसकी विधिवत् अनेक पुट देकर चमकहीन (निश्चन्द्र) लाल भस्म तैयार करते हैं। अभ्रक भस्म लौह तत्वयुक्त विशेष होने से इसको रक्ताल्पता वात पित्त कफ दोष प्रकोप में अनुपान भेद से यह अनेक रोग नाशक व रक्तवर्धक रसायन है। यह भस्म शरीर में सर्वप्रथम शोणित वर्तली (हिमोग्लोविन) रक्तकण (आर०बी०सी०) की वृद्धि कर शरीर को निरोग करने में श्रेष्ठ है।

अभ्रक भस्म की सेवन मात्रा –

125 मिग्रा0 से 250 मिग्रा0 रोगानुसार उचित अनुपान के साथ बच्चों को चौथाई से आधी मात्रा में सेवन कराया जाता है।

बलवृद्धि के लिए –

अभ्रक भस्म को विदारिकन्द एवं धातुपोष्टिक चूर्ण के साथ गौ के धारोण दूध के साथ दें।

हृदय रोग में –

मोतीपिष्टी 125 मिग्रा0 अर्जुनछाल चूर्ण 500 मिग्रा0 मधु के साथ मिलाकर दें।

वातव्याधि में –

अभ्रक भस्म के साथ सोंठ पुष्कर मूल चूर्ण अथवा 1 ग्राम अश्वगंधादि चूर्ण के साथ मधु

PDF Scanner ACE Scanner

दूध के साथ दें।

अश्मरी / पथरी (स्टोन) मूत्राघात, मूत्रकृच्छ रोग में इलायची गौ दूध भूमि आंवला चूर्ण 1 से 2 ग्राम की मात्रा में मिश्री दूध या जल के साथ दें।

त्रिदोष, प्रमेह, कुष्ठ, उदर रोग, राजयक्ष्मा, पाण्डु, कामला, ग्रहणी, शूल, श्वास, आम, मन्दाग्नि, ज्वर, गुल्म, अर्श मानसिक दुर्बलता, मृगी, उन्माद, हृद्रोग, प्रसूत आदि में लाभकारी है। 125 से 250 मि.ग्रा. दिन में दो से चार बार तक रोगानुसार, बलाबल देखकर देनी चाहिये।

बैद्यनाथ अकीक पिष्टी (आयुर्वेद सार संग्रह)

वातरोगजन्य उन्माद, मूर्छा, पुराना शुष्क कास, सभी प्रकार के रक्तस्राव, रक्त प्रदर, पुराने व्रण, (घाव) अश्मरी (पथरी) को नष्ट करती है। 125 से 375 मि. ग्रा. मक्खन या मधु से रोगानुसार दें।

बैद्यनाथ कपर्दक भस्म (र.सा.स.)

पेट का दर्द, अफरा, परिणाम शूल, अम्लपित्त (एसीडिटी) संग्रहणी से उत्पन्न रोग, गुल्म, मन्दाग्नि, कर्णस्राव में लाभदायक है। 250 से 500 मि.ग्रा. तक आवश्यकतानुसार मक्खन अथवा मधु से देनी चाहिये।

बैद्यनाथ कहरवा पिष्टी (आयुर्वेद सार संग्रह)

पित्त विकार, हृदय–दुर्बलता, रक्तातिसार, रक्त प्रदर, रक्तपित्त, वमन, प्रवाहिका (पेचिस) अर्श, सिर दर्द, चक्कर आदि रोगों में लाभकारी है।

250 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा. मोती पिष्टी का मिश्रण विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म (र.त. सा.व.सि.प्र.सं.)

हड्डियों की मजबूती, बच्चों के सूखा रोग, स्त्रियों के श्वेत प्रदर, प्रमेह, बहुमूत्रादि, विकारों में लाभदायक है। यह कैल्शियम की कमी से होने वाले रोगों में भी उपयोगी है।

250 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा. तक शहद से सुबह-शाम दें।

बैद्यनाथ जहरमोहरा खताई भस्म एवं पिष्टी (आयुर्वेद सार संग्रह)

यह विषनाशक है, अजीर्ण, वमन (उल्टी के) दाह (जलन) विसूचिका हैजा, अतिसार, यकृत विकार, दिल की घबराहट, जीर्ण ज्वर, बालकों के हरे पीले दस्त में तथा सूखा रोग में इसका सेवन अत्यन्त लाभदायक ह। 250 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा. में 2 से 4 बार आवश्यकतानुसार दें। बच्चों को 60 मिग्रा. से 120 मिग्रा.।

बैद्यनाथ टंकण भस्म (आयुर्वेद सार संग्रह)

इसको हिन्दी में सुहागा भी कहते हैं तथा इसका अंग्रेजी नाम बोरेक्स है, यह भूटान ईरान नेपाल आदि देशों से आता है। यहां के क्षारीय तत्वों में इसका निर्माण होता है। कच्ची अवस्था में इसका रंग सफेद–पीला होता है। इसमें जलीय अंश 1/2 मात्र होता है। यह सोडियम बायफोरेट रसायन संघटन एन०ए०2बी०407 आई०आई०एच०2ओ है। इस पर गंधकाम्ल (सल्फर एसिड)–की क्रिया से टंकणाम्ल (बोरिक एसिड) प्राप्त होता है।

PDF Scanner ACE Scanner

आयुर्वेद में इसको शास्त्रोक्त विधि द्वारा शोधित कर भस्म बनाते हैं। टंकण भस्म का उपयोग वात–कफज, रोगों में विशेष किया जाता है जैसे– सर्दी, जुकाम, वात ज्वर श्वास–कास में इसका उपयोग सितोपलादि चूर्ण, तालीसादि चूर्ण के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से भी उपयोग कराया जाता है। इसे मुंह के छालों में मधु (शहद) में मिलाकर रूई की फुरेरी से लगाते हैं। टंकण भस्म की विशेषता यह है कि यह जन्म के समय भी मधुदृब्राह्मी पत्र चूर्ण के साथ शिशु के कण्ठ (गले) व जिव्हा (जीभ) पर लगाने से शिशुओं को किसी प्रकार का प्रतिषेध (इन्फैक्शन) नहीं होता और स्वर को साफ करता है। शरीर में यदि खाज–खुजली तथा घाव हो जाए तो यह त्वचा रोगों में कपूर व घी अथवा तैल के साथ लगाने से घाव, फोड़ा–फुसी व खुजली में लाभकारी होती है इसके अतिरिक्त दमा में टंकण भस्म मधु के साथ चाटने से दमा में राहत मिलती है। सर्पविष में टंकण भस्म को जल (पानी) के साथ सेवन करने से पीड़ित व्यक्ति को राहत मिलती है तथा वत्सनाय, कुचला, संजिया आदि स्थावर विष में टंकण भस्म घी के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है। एक भाग टंकण भस्म और 3 भाग राई को मिश्रण कर 1 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन दो बार लेने से नारू (तिली) का बढ़ना व एठन मिट जाती है।

बच्चों की काली खांसी में टंकण भस्म 250 मिग्रा0 की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। टंकण भस्म को गिलोय सत्व के साथ सेवन कराने से प्लीहा/तिल्ली रोग में लाभ होता है।

मुख की झाँई में –

टंकण भस्म को चन्दन के साथ पीसकर चेहरे पर लेप करने से चेहरे/फेश की झांई मिटती हैं।

प्रमुख गुण व सेवन मात्रा :–

सर्दी, जुकाम, मुँह के छाले, निमोनिया, सूखी अथवा तर खाँसी, कफ, ज्वर, इन्फ्लुएन्जा में लाभदायक है। 125 मि.ग्रा. 500 मि.ग्रा. तक शहद या गर्म जल के साथ आवश्यकतानुसार देना चाहिये। बच्चों को 30 से 60 मि.ग्राम।

वैद्यनाथ ताम्र भस्म (र.सा.स.)

उदर रोग, प्रमेह, अजीर्ण, विषम ज्वर, सन्निपात, कफोदर, यकृत विकार, हिचकी, अफरा, अतिसार, मासार्बुद, कुष्ठ रोग में लाभदायक है। 65 से 125 मि.ग्रा. तक दिन में दो बार या आवश्यकतानुसार दें।

वैद्यनाथ त्रिवंग भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

मूत्र विकार, प्रमेह, शुक्रस्थान, गर्भाशय, मधुमेह, नपुंसकता, प्रदर, सोमरोग, गंवला, दूषित द्रव्ययुक्त (घातु, बार बार पेशाब होने में लाभदायक है। 125 से 250 मि.ग्रा. तक आवश्यकतानुसार दें।

वैद्यनाथ नाग भस्म (र.सा.स.)

मधुमेह, नेत्ररोग, गुल्म, प्लीहा वृद्धि, प्रदर, अतिसार रक्त गुल्म, आमाशय की वृद्धि से होने

ACE Scanner

वाले अम्लपित्त, मंदाग्नि, अपच, गण्डमाला, धातुक्षय, यकृत दोष आदि में लाभदायक है। 125 से 250 मि. ग्रा. तक आवश्यकतानुसार दें।

वैद्यनाथ प्रवाल पिष्टी (आ.सा.स.)

क्षय, पित्त विकार, रक्त पित्त, कास, श्वास, विष, नेत्ररोग, शिरोरोग, यकृत विकार, वमन आदि में लाभदायक है। 250 मि.ग्रा. से 750 मि.ग्रा. तक मक्खन और मधु से रोगानुसार दें।

वैद्यनाथ प्रवाल भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

उच्च कोटि का कैल्शियम है। 250 मिग्रा से 500 मिग्रा तक मधु से दें। पुराना बुखार, खाँसी, रक्त पित्त, अम्ल पित्त, तृषा बाल रोग आदि में लाभकारी है। 250 मि.ग्रा. से 500 मि. ग्रा. तक मधु से दें।

वैद्यनाथ वंग भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

प्रदर, प्रमेह, धातुक्षीणता, बहुमूत्र, वीर्य स्राव, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, कास–श्वास, रक्तपित्त, पाण्डु कृमि, मन्दाग्नि, क्षय आदि में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक मक्खन और मधु से रोगानुसार दें।

वैद्यनाथ वैक्रान्त भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

धातुओं की निर्बलता, क्षय, प्रमेह, वातपित्त, कफ, प्रकोप, पुराने बुखार, खाँसी, शारीरिक क्षीणता कुष्ठ, त्रिदोषघ्न, आदि में लाभकारी है। 15 से 60 मिग्रा. तक मधु से दें।

वैद्यनाथ मण्डूर भस्म (रसेन्द्र सार संग्रह)

रक्ताल्पता, (एनीमिया) पाण्डु, कामला, कुम्भ कामला, हलीमक, बाल यकृत, मन्दाग्नि में लाभकारी है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक मधु अथवा त्रिकुट, सोंठ, मिर्च पीपल से दें।

वैद्यनाथ मधुमण्डूर भस्म (योगरत्नाकर)

पाण्डु–रोग, यकृत विकार, रक्तवर्धक, इसमें अधिक पुट लगने के कारण मण्डूर भस्म की अपेक्षा यह विशेष गुणकारी है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक रोगानुसार दें।

वैद्यनाथ मयूरचन्द्रिका भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

श्वास, हिक्का, वमन (उल्टी) में विशेष लाभकारी है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुमान से दें।

वैद्यनाथ माणिक्य भस्म (सि.यो.सं.)

नपुंसकता, धातुक्षीणता, हृदयरोग, वातपित्त विकार, पित्त विकार, वातदोष, क्षय रोग, धातुओं को पुष्ट बनाती है तथा रक्त चाप में लाभकारी है। 65 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक मलाई, मक्खन, मधु, च्यवनप्राश आदि अनुपान से रोगानुसार सेवन करायें।

वैद्यनाथ मुक्ता शुक्ति पिष्टी एवं भस्म (सिद्ध योग संग्रह द.र.रा.सु.)

क्षय, श्वास, खाँसी, जीर्ण ज्वर, नेत्रदाह, हृदयरोग, पित्तज दाह, अरूचि, पित्तज परिणाम शूल, यकृत, वमन, पित्तातिसार, आमाशय के दोष आदि में विशेष लाभकारी है।

PDF Scanner ACE Scanner

250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ मोती पिष्टी (रस तरंगिणी)

धातुक्षीणता, क्षय, हृदय की निर्बलता, कास, श्वास, जीर्ण ज्वर, उन्माद, रक्तपित्त, दिमाग की कमजोरी, सिर दर्द, पित्त वृद्धि, दाह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ, नेत्ररोग में लाभकारी है। 62 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ मोती पिष्टी सर्वोत्तम नं. १ (आ.सा.सं.)

नं०–1 मोती उसे कहते हैं जिसमें किसी प्रकार का छेद अथवा खुरदरापन नहीं होता। इसमें कैल्शियम (सुधा) तत्व प्रचुर मात्रा में होता है। आयुर्वेद मतानुसार यह लघु–सूक्ष्म गुण मधुर रस मधुर विपाक एवं शीतवीर्य (शीतल) है। यह त्रिदोष प्रकोप रोग नाशक है। यह अपने गुण से कफ दोष को तथा रस से वातदोष को और अपनी प्रमुखता से पित्त दोष को शमन करता है।

मोती समुद्री तटवर्ती स्थानों पर पाया जाता है जैसे–फारस की खाड़ी, लंका तथा भारत में सौराष्ट्र (जामनगर) आदि स्थानों से आता है। मोती प्रवाल आदि मधु के साथ लेखांज्जन के रूप में भी लगाया जाता है। यह विशेषकर नेत्र ज्योतिवर्धक, हृदय दौर्बल्यनाशक रक्तरोधक (बहते खून को रोकने) में एवं अम्लपित्त, ज्वर तथा मसूरिका (मीजल्स फीवर) जीर्ण ज्वर–मंथरक ज्वर (टाइफाइड फीवर) तथा मेघाशक्ति (दिमागी ताकत) वर्धक है।

प्रमुख गुण व सेवन मात्रा –

अच्छे बारीक बसरई मोती (छोटे, अविद्द पानीदार दाने) की पिष्टी बनाने पर यह सर्वोत्तम नं.1 कहलाती है। नम्बर 1 पिष्टी साधारण की अपेक्षा अधिक गुणदायक है। (रोगानुसार) मोती पिष्टी नं. 1, 62 से 125 मि.ग्रा. तक दें।

बैद्यनाथ मोती भस्म (आ.सा.सं.)

चित्त भ्रम, घबराहट, धड़कन, स्मृति भंग, अनिद्रा, नेत्ररोग आदि में लाभकारी है। हृदय को बल देती है, अति सौम्य हैं। 62 से 125 मिग्रा तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ मोती भस्म (चंद्रपुटित) (आ.सा.सं.) –

वारीक बसरह मोती नं0–1 की भस्म रोग शमन करने में मोती पिष्टी नं0–1 से भी उत्तम होती है किन्तु विशेष दुर्बल व्यक्ति के लिए सुपाच्य बनाने के उद्देश्य से भस्म बनायी जाती है। अग्नि संयोग होने से मोती की शीतलता कम हो जाती है। शीतगुण प्रधानता के लिए मोती भस्म में गुलाब जल एवं गोदुग्ध भावित (मिलाकर) कर रात्रि के समय चन्द्रमा की चांदनी में सुखाया जाता है। इससे इस भस्म में शीतल गुण प्रधानता बढ़ जाती है। इसे मोती भस्म चन्द्र पुटित के नाम से जाना जाता है।

सेवन मात्रा एवं गुण धर्म –

मोती भस्म, चंद्रपुटित में सौम्यता, और शीतलता अधिक बढ़ जाती है। यह मोती पिष्टी से भी सौम्य शीतल होती है। इसके गुण मोती पिष्टी के समान ही है। 62 से 125 मिग्रा. दिन में दो बार, शहद, मक्खन, मिश्री गुलकंद, ऑवला, मुरब्बा, अथवा च्यवनप्राश से

PDF Scanner ACE Scanner

रोगानुसार प्रयोग करना चाहिए।

वैद्यनाथ यशद भस्म (र.रा.सु.)

कफ पित्तशामक, दाह, प्रदर, पित्तज, प्रमेह, खाँसी, अतिसार, संग्रहणी, धातुक्षय, जीर्णज्वर, पाण्डु, श्वास, नेत्ररोग की उत्तम दवा है। कण्ठमाला, अपची अन्तरिन्द्रिय के रोग में लाभकारी है।

125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. अथवा रोगानुसार दें।

वैद्यनाथ रौप्य (चाँदी) भस्म (रसेन्द्र सार-संग्रह)

शारीरिक दुर्बलता, वात पित्त के विकारों उदर की वायु विकृति, प्लीहा वृद्धि, धातुक्षीणता, अपस्मार, हिस्टीरिया, प्रमेह आदि में लाभकारी। 62 से 125 मिग्रा तक रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ लौह भस्म (रस तरंगिणी)

लोहा के तीन प्रकार हैं– मुण्ड, कान्त और तीक्ष्ण, शास्त्रों में तीक्ष्ण लौह और कान्त लौह के औषधि कार्य में श्रेष्ठ बताया है। लोहे के बुरादा अथवा चूरा को आग पर तपा–तपाकर तिल तैल गोमूत्र एवं कांजी मट्ठा, कुल्थी के काढ़े में 7–7 बार क्रमशः बुझा लेने से लोहा धातु शुद्ध हो जाता है। उसके बाद 7 घण्टे ग्वारसाठा रस में गोमूत्र में 7 फुट त्रिफला क्वाथ में 7 फुट 12 वां भाग हिंगुल के साथ आग में 12 घण्टे जलाने से लौह भस्म बन जाती है। वैसे आयुर्वेद शास्त्र में अनेकों विधियां हैं।

लौहभस्म में रोगानुसार अनुपान–

1– शरीर पुष्टी के लिए 250 मिग्रा0 लौह भस्म 500 मिग्रा0 बड़ी पीपल असगंध अथवा चौ0प्र0 पीपल 500 मिग्रा0 के साथ मधु दूध से दें।

2– पाण्डु–रक्ताल्पता में–लौह भस्म 125 मिग्रा0 अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 पुनर्नवारस कुमारी आसव अथवा लिवरेक्स सीरप के साथ दें।

लौह भस्म खांसी में– लौह भस्म 250 मिग्रा0 प्रवाल भस्म 125 मिग्रा0 कासामृत हर्बल व मधु के साथ दें।

वातरोग में– लौह भस्म 125 मिग्रा0 सोंठ चूर्ण 500 मिग्रा0 मधु महारास्नादि काढा के साथ दें।

पित्तरोग में– लौह भस्म 125 मिग्रा0 मिश्री 3 ग्राम को घी के साथ दें। कफ रोग में– लौह भस्म 250 मिग्रा0 पीपल अथवा चौसठ प्रहरी पीपल 500 मिग्रा० मधु के साथ दें।

मन्दाग्नि (भूख की कमी) में– लौह भस्म 250 मिग्रा0 दाख (मुनक्का) व पीपली अथवा चौसठ प्रहरी पीपल के साथ दें।

जीर्ण ज्वर में– लौह भस्म 125 मिग्रा०, यशद भस्म 60 मिग्रा0 पीपल अथवा चौ0प्र0 पीपल 500 मिग्रा0 के साथ मधु से दें।

मूत्रकृछ (मूत्राघात)– लौह भस्म 125 मिग्रा0 शुद्ध शिलाजीत 500 मिग्रा0 ताजा अथवा

ठण्डे दूध के साथ दें।

श्वास में– लौह भस्म 125 मिग्रा0 अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 में मिलाकर घी के साथ दें।
पंक्तिशूल (भोजन के बाद उदर शूल) में– लौह भस्म 125 मिग्रा0 त्रिफला चूर्ण 2 ग्राम के साथ घी के साथ दें।

सेवन मात्रा एवं प्रमुख गुण धर्म– पाण्डु पित्त विकार, उन्माद, धातु दौर्बल्य संग्रहणी, मन्दाग्नि, प्रदर, मेदवृद्धि, कृमि, कुष्ठ, उदर रोग, आम विकार, क्षय, ज्वर, हृदय रोग, बवासीर, रक्तपित्त, अम्लपित्त, शोथ आदि में अत्यन्त लाभकारी है। 62 से 375 मिग्रा. तक मधु के साथ अथवा रोगानुसार दें।

वैद्यनाथ शंख भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

परिचय–

शंख एक समुद्री कीड़ा का बाहरी खोल (कवच) है। जो शंख सफेद चमकीला व शंखनाभी (बीच का हिस्सा) अधिक हो ऐसे शंख के टुकड़ों को औषधि भस्म के लिए उत्तम माना गया है शंख भस्म में प्राकृतिक सेन्द्रिय कैल्शियम की तीक्ष्ण मात्रा विशेष होती है, इसलिए इस भस्म को त्वचा के फोड़े–फुसियों और मुहांसों में मधु अथवा तिल तैल में मिलाकर लेप करने से लाभ होता है। शंख के टुकड़ों को मिट्टी के घड़े में जल व नीबू रस के साथ उबालने तथा धोकर रखने से शंख शुद्ध हो जाता है फिर इसे भस्म विधि से भस्म बनाया जाता है। शंख भस्म विशेषकर (पेट) के रोगों में लाभदायक होता है।

सेवन मात्रा व प्रमुख गुणधर्म –

उदर वात, यकृत, प्लीहा–वृद्धि, गुल्म अजीर्ण, मन्दाग्नि, अफरा, शूल, अतिसार, संग्रहणी में लाभकारी है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक आवश्यकतानुसार सुबह शाम दें।

वैद्यनाथ संगेयशव पिष्टी (आयु. सार-संग्रह)

हृदय की धड़कन, उष्णता, भूख कम लगना, सिर में दर्द, कमजोरी, शुक्र का पतलापन, स्वप्न दोषादि, मस्तिष्क की दुर्बलता नाशक, बुद्धिवर्द्धक है।

250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक आवश्यकतानुसार सुबह–शाम सेवन हेतु दें।

वैद्यनाथ स्फटिका भस्म (आयुर्वेद सार संग्रह)

सब प्रकार के ज्वर, विषम ज्वर (मलेरिया), निमोनिया, खाँसी, कुक्कर खाँसी, रक्तपित्त, प्रमेह, (सुजाक) व्रण (घाव) मुँह में छाले पड़ना, रक्तशोधक आदि में उपयोगी है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक दिन में दो तीन बार देना चाहिए।

वैद्यनाथ स्वर्णभस्म (सिद्ध योग संग्रह)

वीर्य, बल, स्मृति, कान्ति, धातुक्षीणता, जीर्ण ज्वर, मन्द ज्वर, पुराना श्वास, कास, दाह, पित्त रोग, दृष्टि क्षीणता, प्रदर नपुंसकता, क्षय (राजयक्ष्मा) आदि में विशेष लाभकारी है। 8 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक अथवा रोगानुसार दें।

ACE Scanner

बैद्यनाथस्वर्णमाक्षिक भस्म (रसेन्द्र सार संग्रह)

रसायन, योगवाही, शामक, शक्तिवर्द्धक, पित्तनाशक, शीतवीर्य, स्तम्भक, रक्तवर्द्धक, अनिद्रा, दिमाग की कमजोरी, पाण्डु, कामला, खून बढ़ाने में उपयोगी है। 125 मिग्रा. से 375 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ हजरूलयहूद भस्म (सिद्ध योग संग्रह)

मूत्रावरोध, मूत्रकृच्छ, शर्करा, पथरी की प्रारम्भिक अवस्था पेशाब साफ करने में बहुत लाभदायक है। 375 मिग्रा. से 750 मिग्रा. तक दिन में दो तीन बार दें। बैद्यनाथ हरिताल (गोदन्ती) भस्म (आ.सा.सं.) वातरक्त, कुष्ठ, उपदंश (गर्मी), चर्मरोग, उर्ध्वश्वास, विषम ज्वर, शीतांग, कफ वात, सन्निपात भगन्दर आदि में लाभकारी है। 250 मिग्रा. से 500. तक रोगानुसार दें।

बैद्यनाथ - कूपीपक्व रसायन

गुण–वृद्धि के लिये हमारे यहाँ संस्कारित पारद से ही समस्त औषधियाँ बनाई जाती है। इस पर भी जहाँ द्विगुण और षडगुण शब्द आये हैं। वहाँ उनकी विशेष उपयोगिता समझनी चाहिए। इस क्रिया से औषधि की शक्ति निश्चय ही बहुत बढ़ जाती है।

बैद्यनाथ चन्द्रोदय अन्तर्धूम (सि.यो.सं.)

इससे दिल और दिमाग को ताकत मिलती है। नाड़ी की गति क्षीण होने पर इससे तुरन्त लाभ होता है। यह बहिर्धूम से अधिक लाभकारी है। रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ ताम्र सिन्दूर (र.सा.सं.)

कफ, खाँसी, श्वास, पाण्डु (पीलिया), शोथ (सूजन), कुष्ठ, रक्त शोधक, कीटाणु नाशक हृदय और रक्तवाहिनी नाड़ियों को बल देता है। 125 मिग्रा. मधु के साथ सुबह शाम दें!

बैद्यनाथ ताल सिन्दूर (सिद्धभैषज्यमणिमाला)

रक्तशोधक, जन्तुघ्न, कफ, कुष्ठनाशक, उष्णवीर्य, वातविकार, वात रक्त, मलेरिया, चर्मरोग में लाभकारी है।

बैद्यनाथ पूर्णचन्द्रोदय (र.तं.सा.व.सि.प्र.सं.)

स्नायु मण्डल की दुर्बलता, नाड़ी की क्षीणता, शीतांग, फेफड़े के विकार आदि में लाभकारी है। तीन साल तक के बच्चों को 30 मिग्रा. चार से दस वर्ष तक की उम्र वालों को 60 मिग्रा. दस वर्ष से ऊपर 125 मिग्रा. पूरी मात्रा है।

बैद्यनाथ मकरध्वज (रसतरंगिणी)

बल, वीर्य, शक्ति, हृदय और मण्डल, वजन बढ़ाने की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। शीघ्रपतन, नपुंसकता, (नामर्दी) में भी विशेष गुणकारी महौषधि है। 65 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक अवस्थानुसार रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ स्वर्णमकरध्वज (आ.सा.सं.)

स्वर्णभस्म, मकरध्वज, लौह भस्म, बंग, यशद और केशर आदि बहुमूल्य द्रव्यों पर प्रक्रिया द्वारा तथा वयः स्थापक औषधियों की भावना से यह रसायन तैयार किया जाता है। यह

ACE Scanner

हृदय, दौर्बल्य, स्मरण का ह्रास, राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था, 40 वर्ष के बाद ही शारीरिक और मानसिक क्षतिपूर्ति और युवावस्था कायम रखने के लिए बहुत लाभकारी औषधि है, मधु, मक्खन अथवा दूध या चिकित्सक के परामर्शानुसार अनुपान के साथ उपयोग करें। दिन में केवल एक गोली सेवन करें।

बैद्यनाथ सिद्धमकरध्वज स्पेशल (आयुर्वेद सार संग्रह)

यह बहुमूल्य उपादानों के सम्मिश्रण द्वारा आयुर्वेद का सुप्रसिद्ध रसायन तैयार होता है। शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य को मिटाकर शरीर में नई शक्ति का संचार करता है। पौरुष को बढ़ाने तथा शरीर को कान्तिमय बनाने के लिए सुप्रसिद्ध है। धातुदौर्बल्य, नामर्दी, शीघ्रपतन, आदि को दूर कर स्तम्भन बढ़ाता है।

बैद्यनाथ मल्ल सिन्दूर (सिद्ध भैषज्य मणिमाला)

वात, कफ, विकार, आमवात, श्वास, दमा, रक्तशोधक, फेफड़े में जमे हुए कफ में लाभकारी है। 30 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ रजत सिन्दूर (आ.सा.सं.)

यह रस रस रक्त आदि सप्त धातुओं का पोषण करके दिल दिमाग स्वस्थ रखता है। पेट में वायु सचय नहीं होने देता, दौर्बल्य मस्तिष्क एवं हृदय की दुर्बलता, कार्य, प्रमेह, मन्दाग्नि आदि की सिद्ध फलप्रद महौषधि है। 62 मिग्रा. से 125 मिग्रा. अथवा रोगानुसार मक्खन, मलाई, मिश्री आदि के साथ दें।

बैद्यनाथ रससिन्दूर (रसतरंगिणी)

उरस्तोय, निमोनिया, सन्निपात, संग्रहणी, कास, दमा, कफ, विकारों, श्वास आदि में लाभकारी है। 62 मिग्रा. से 125 मिग्रा. तक दें।

बैद्यनाथ शिला सिन्दूर (रसामृत)

इसके सेवन से रक्त विकार, फोड़े–फुन्सी आदि चर्म रोग ठंडी लगकर आने वाले बुखार और शीतांग सन्निपात में बहुत अधिक लाभ होता है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक सुबह और शाम दें।

बैद्यनाथ समीर पन्नग रस (र.त.सा.व.सि.प्र.सं.)

सन्निपात में नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर इससे लाभ होता है यह स्नायुमण्डल को बलवान बनाने की श्रेष्ठ दवा है। कफ बढ़ जाने पर इसका उपयोग बड़ा काम करता है। 62 से 250 मिग्रा. तक पान के रस और मधु के साथ सुबह और शाम या रोग की अवस्थानुसार दें।

बैद्यनाथस्वर्ण सिन्दूर (भै.र.)

इसके सेवन से बल, पौरूष स्मरण शक्ति और कान्ति की वृद्धि होती है। साधारण व सन्निपात ज्वर, खाँसी और मन्दाग्नि में लाभदायक है। 125 मिग्रा. मधु से अच्छी तरह से घोंटकर चटाना चाहिए।

बैद्यनाथ स्वर्ण समीरपन्नग (सि.यो.सं.)

यह साधारण समीर पन्नग की अपेक्षा विशेष गुणदायक है गुण मात्रा और अनुपान साधारण की तरह ही है।

बैद्यनाथ स्वर्णराज बंगेश्वर (स्वर्णबंग) (रसामृत)

यह शरीर की कमजोरी एवं असयमजनित बीमारियों को दूर कर मूत्र विकारों में लाभकारी है। तथा वीर्यवर्द्धक, उत्तेजक, और वंग के समस्त गुणों से युक्त है। यह प्रमेह, नामर्दी, शीघ्रपतन, शुक्रस्राव और मूत्र–वीर्य विकारों को जल्दी ठीक कर देता है। जीर्ण सूजाक और श्वेत प्रदर में इससे अच्छा लाभ होता है। 125 मिग्रा. से 375 मिग्रा. तक दें।

बैद्यनाथ व्याधिहरण रसायन (सि.प्र.सं.)

यह नये पुराने सब प्रकार के उपदंश (आतशक) और उससे पैदा होने वाले रक्त विकार, सन्धिवात, गठिया, कुष्ठ, नासा वं मुख व नाडीव्रण, अण्डवृद्धि, वृक्कशोथ आदि में लाभकारी है।

बैद्यनाथ शोधित द्रव्य

बैद्यनाथ शोधित शिलाजीत (र.त.सा.व सि.प्र.सं.)

यह पौष्टिक, बलदायक और रक्तवर्द्धन की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ शोधित गन्धक (रसेन्द्र सार संग्रह)

कण्डू कुष्ठ, विसर्प, दर्दनाशक, अग्नि दीपक, फोड़े–फुन्सी आदि में उपयोगी है। चिकित्सक के परामर्श से लें।

रस रसायन

आयुर्वेदीय चिकित्सा में रसों को अति श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। हमारे वैद्यों के पास यदि रस चिकित्सा न होती, तो एलोपैथी के सामने उनका ठहरना कठिन था। यदि वैद्यों के पास प्रधान रस न हो तो उन्हें शस्त्रहीन योद्धा समझना चाहिए।

बैद्यनाथ अगस्ति सूतराज रस (योगरत्नाकर)

अतिसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि और संग्रहणी में बहुत उपयोगी है। पुराने आमातिसार में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। एक–एक गोली दिन में तीन बार रोगानुसार चावल के धोवन, बेल के मुरब्बे नागर मोथे का रस या कुटजारिष्ट के साथ दें।

बैद्यनाथ अग्निकुमार रस (भैषज्य रत्नावली)

शरीर की पाचन–अग्नि के होने से अजीर्ण मन्दाग्नि, संग्रहणी, कब्ज, पेट में दर्द, पेट भारी रहना, टट्टी, पतली होना आदि शिकायतें इसके सेवन से बहुत जल्दी मिट जाती है। एक से दो गोली तक दिन में तीन बार देवें।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ अग्निसंदीपन रस (भैषज्य रत्नावली)

इसमें मन्दाग्नि, अजीर्ण, अम्लपित्त, और मुँह में खट्टा पानी आने में लाभकारी है। एक से दो गोली तक सुबह शाम दें।

वैद्यनाथ अमर सुन्दरी बटी (योग चिन्तामणि)

इसमें 2 नाम है। गुण धर्म एक है। अमर सुन्दरी रस है या बटी रस का ग्रन्थ नाम (योग चिन्तामणि) है। अमर सुन्दरी बटी सभी प्रकार के वात रोग की प्रसिद्ध दवा है। यह उन्माद, मृगी, श्वांस, खाँसी, बवासीर और सन्निपात में भी अच्छा लाभ करती हैं। एक से दो गोली तक गरम जल से दें।

वैद्यनाथ अमीर रस (सिद्ध भैषज्य मणिमाला)

रक्तशोधक, कठिन आमवात, आतशक, के कीटाणुओं को जल्दी नष्ट करता है। सूजाक, गर्मी आदि लाभकारी है। यह दवा उग्रवीर्य है। अतः छोटी उम्र वालों को तथा कमजोर लोगों को सावधानीपूर्वक सेवन करानी चाहिए। सुबह शाम दिन में दो बार 62 मिग्रा. तक मुनक्का में रखकर सेवन करें।

वैद्यनाथ अर्शकुठार रस (रसेन्द्र सार संग्रह)

बवासीर में अर्शकुठार रस से अच्छा लाभ होता है। यदि बवासीर अधिक पुराना नहीं है तो मस्से जल्दी सूख जाते है। इससे दस्त साफ आकर रोग में लाभ मिलता है। एक या दो गोली सुबह ताजे फल से दें।

वैद्यनाथ अश्वकंचुकी रस (सिद्धयोगसंग्रह)

अजीर्ण, पेट दर्द, गुल्म, आमवात आदि रोगों में जुलाव लेने की आवश्यकता होती है, या पेट में धीरे–धीरे, मल इकटठा होने पर जुलाब के लिये अच्छी दवा है। चिकित्सक के परामर्श से सेवन करें।

वैद्यनाथ आनन्द भैरव रस (ज्वर) (रसेन्द्र सार संग्रह)

बुखार को पकाकर उतार देता है। सर्वाग बेचेंनी, वेदनायुक्त, इन्फलुएन्जा आदि सब प्रकार के बुखार को शीघ्र कम करता है। 1 से 3 गोलियाँ तक पान या अदरक से रस और मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ आनन्द भैरव रस (कास) (र.रा.सु.)

यह आनन्द भैरव रस (कास) विशेषकर कफ–वात जनित खांसी जुकाम एवं कफ प्रधान श्वास रोग के दौरे के साथ जब नया कफ भी बन रहा होता है उस समय श्वास मार्ग कफ से भर जाता है। खांसी होने पर कफ अधिक निकलता रहता है। ऐसी अवस्था में आनन्द भैरव रस (कास) का उपयोग पान रस अथवा अदरक रस के साथ मधु मिलाकर देना चाहिए । अधिक अजीर्ण–अपच की अवस्था में जब अतिसार / दस्त अधिक हो रहे हों उस समय कुटजारिष्ट के साथ आनन्द भैरव रस का सेवन विशेष लाभदायक होता है। इससे पाचन क्रिया सुधर जाती है और भूख भी लगती है। आनन्द भैरव रस (कास) कफ प्रधान

ACE Scanner

खांसी की उत्तम औषधि है।

श्वास, कफ के विकारों, खाँसी में इससे अच्छा लाभ होता है। सन्निपात दमा में और गुल्म रोग तथा संग्रहणी में भी इसका उपयोग किया जाता है। 1 से 2 गोली तक आवश्यकतानुसार अदरख और शहद के साथ दें।

बैद्यनाथ आमवातारि रस (भैषज्य रत्नावली)

आमावात रोग में जब हाथ–पैरों में या सारे बदन में सूजन हो तब इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है। 1 से 3 गोली तक सुबह–शाम रेंडी के तेल में मिलाकर गर्म जल से (गुनगुना) देना चाहिये।

बैद्यनाथ आरोग्यवर्धिनी बटी (रसरत्न समुच्चय)

आरोग्य वर्द्धनी वटी को रस अध्याय में इसलिए गिना गया है क्योंकि इसमें कज्जली (शुद्ध पारद–शुद्ध गन्धक) लौह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म प्रमुख हैं और रसायन गुण, शुद्ध शिलाजीत–गग्गल, त्रिफला, नीमपत्र स्वरस, कटकी चूर्ण सर्वाधिक होने से उत्तम दीपन पाचन शरीर के स्त्रोतों को शोधन करने वाली रक्तशोधक, रक्तवर्धक, हृदय को बलदायक मेद (चर्बी) को कम करने वाली मल–मूत्र प्रर्वतक, यकृत/लीवर, प्लीहा, वृक्क/गुर्दे, गर्भाशय, आंत्र (इन्टस्नल) आदि किसी भी शरीर के अन्दरूनी और बाहरी शोथ/सूजन को कम करने वाली जलोदर, जीर्णज्वर, पाण्डु, शीत–पित्त, एलर्जी आदि अनेकों त्वचा विकार नाशक भी है।

आरोग्यवर्द्धिनी का रोगानुसार अनुपात–

किसी भी प्रकार की सूजन (शोथ) में तथा जलोदर गौ–बकरी अथवा ऊंटनी के दूध के साथ दें।

यकृत/लीवर, प्लीहा रोग में पुर्ननवारिष्ट रोहितकारिष्ट के साथ दें।

वात जन्य हृदय शोथ और शूल हो तो दशमूल क्वाथ, दशमूल अर्क अथवा पुनर्नवारिष्ट या क्वाथ के अनुपान से प्रयोग करें। जीर्ण फुफ्फुस धराकला शोथ (प्लूरसी) में भारंगी मूल पुनर्नवामूल वासा चूर्ण अथवा क्वाथ आसव–अरिष्ट के साथ सेवन करावें। मेद (चर्बी) फैट कम करने के लिए गाय के दूध के पथ्य पर रखकर महामंजिष्ठादि क्वाथ (शा0सं0) के अनुपान से दें। अन्य रोगों में जल के साथ दें।

सेवन मात्रा एवं विशेष गुणधर्म–

अजीर्ण, मलावरोध, रक्त विकार, पाण्डु, कामला, ज्वर, शोथ, यकृत रोगों (लीवर) की बहुत उपयोगी दवा है। रक्ताल्पता, उदासीनता तथा बालकों में लीवर बढ़ने आदि में विशेष लाभकारी है। सेवन मात्रा 1 से दो गोली बच्चों को आधी मात्रा में दें।

बैद्यनाथ इच्छाभेदी रस (भै.र.)

पक्वाशय मल संचय विशेष होने पर आंते (इण्टरस्टनल) दूषित होने से ही सेन्द्रीयविष उत्पन्न होता है फिर वह विष सम्पूर्ण शरीर में अपना दुष्प्रभाव कर रक्त–मांसादि धातुओं को विकृत कर चर्म रोग कुष्ठ आदि तथा चकत्ते, खुजली, रक्तदोष, कुष्ट, अजीर्ण

अपतानक, अपस्मार, कृमि, मलवृद्धि, कफ प्रधान, रोग–जलोदर आदि रोग में चिकित्सा से पूर्व कोष्ठ शोधन किया जाता है। इस क्रिया के लिए इच्छाभेदी रस का उपयोग किया जाता है। मलावरोध के कारण आंत में मीठा–मीठा दर्द भी बना रहता है। ऐसी अवस्था में इच्छाभेदी रस के उपयोग से मलशुद्धी होकर लाभ होता है।

इच्छाभेदी जुलाव लेने की विधि–

जुलाव लेने से एक दिन पहले घी मिली खिचड़ी खाकर पेट (कोष्ठ) स्निग्धि (चिकना) कर लेना चाहिए 1 या दो गोली पीसकर चीनी मिलाकर ठण्डे पानी से सेवन करावें । जब दस्त आरम्भ हो तो पहली बार 2–3 बूंट ठण्डा पानी पिलावें फिर बाद में जितना दस्त कराना हो प्रतिवार एक घूंट ठण्डा पानी पिलावें। दस्त बन्द करने के लिए 1 गिलास (200 मिली.) गरम पानी पिलाने से दस्त बन्द हो जाता है। पश्चात (फिर) दही, भात (चावल) का सेवन कराना चाहिए।

सेवन मात्रा एवं विशेष गुणधर्म–

पेट में संचित मल को तुरन्त साफ करता है। तेज रेचक है। कफ और वात दूर कर आँतों में इक्ट्ठे हुए विकार को निकालता है। एक से दो गोली चिकित्सक के परामर्श से शीतल जल से दें। इच्छाभेदीरस, वृद्ध, बालक एवं गर्भवती स्त्री को नहीं देना।

बैद्यनाथ उन्मादगजकेशरी (र.रा.सु.)

यह योग मानसिक विकृति काशमन और मस्तिष्क को बल प्रदान कर उसकी कार्य शक्ति को बढ़ाता है उग्र वीर्य गुणयुक्त रसायन है। अतः अति निद्रा, निस्तेजता आदि कफ प्रधान जन्य में लाभकारी है। पूरी उम्र वालों को 250 मिग्रा. सुबह–शाम दिन में दो बार दें।

बैद्यनाथ एकांगवीर रस (रस राज सुन्दर)

गृधसी (साइटिका) विकलांगता, अर्दित आदि तीव्र वात विकारों और अंगों में हुई अशक्तता को दूर करने में विशेष लाभकारी है। 1 से 2 गोली सुबह शाम शहद या वातनाशक काढ़े से दें।

बैद्यनाथ कनकसुन्दर रस (योग चिन्तामणि)

दमा, खाँसी, छाती में जमे हुए कफ को निकालता है। अतिसार संग्रहणी और ज्वरातिसार में भी लाभकारी है। यह अग्निदीपक और वेदनाशामक है। 1 से 2 गोली तक दिन में दो बार जल, मट्ठा या सौफ अर्क से दें।

बैद्यनाथ कफकर्तरी रस (आ.सा.सं.)

यह कफ को काटकर बाहर निकाल देता है इससे दमें का दौरा शान्त हो जाता है। 250 मिग्रा. दिन में 2 से 3 तीन बार पान में डालकर खाना चाहिये।

बैद्यनाथ कफकुठार रस (रस राज सुन्दर)

कफ ज्वर की अच्छी दवा है। छाती में बहुत कफ जमा हो गया हो तथा बार–बार खाँसने पर थोड़ा कफ गिरता हो और साथ में ज्वर खाँसी, श्वास आदि उपद्रव हों, उस समय इसके सेवन से कफ का स्राव होकर शीघ्र लाभ होता है। पूरी उम्र वालों को 1 से 2 गोली पान

ACE Scanner

रस के साथ सुबह शाम दिन में दो बार बालकों को एक चौथाई गोली मात्रा में दें।

वैद्यनाथ कफकेतु रस (भैषज्य रत्नावली)

कफ जन्य, बुखार, खाँसी, श्वास, जुकाम में इस दवा से बहुत लाभ होता है। कफ के विकारों में सिरदर्द, और कण्ठ में कफ जमा हो जाने पर इस दवा का सेवन बहुत उपयोगी है।

वैद्यनाथ कर्पूर रस (आ.सा.सं.)

यह अतिसार में दस्तों में अच्छा लाभ करता है। पेचिस में दही के साथ जल्दी लाभ करता है। निराम दस्तों और खूनी दस्तों में उपयोगी है। एक–एक गोली चावल के धोवन पानी और मधु या सौफ के अर्क से चार–चार घंटे बाद दें।

वैद्यनाथ कफ चिन्तामणि रस (र.सा.सं.)

इस रसायन के सेवन से वात और कफ के रोग नष्ट होते हैं। कफ की विशेषता होने पर अन्य औषधियों की अपेक्षा यह विशेष फायदा करता है। एक से तीन गोली तक अदरक रस या मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ कल्पतरू रस (भावप्रकाश)

कफ और नये ज्वर में बहुत ही लाभ करता है। कास, सर्दी, जुकाम, अग्निमाद्य, अंगों का जकड़ना, तथा दर्द होना, मुख और नाक से लार और पानी टपकने, इसका नस्य देने से ·फ और वायु से उत्पन्न सिर दर्द दूर होता है। एक से दो रत्ती, अदरक रस और मधु के र.थ अथवा रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ कस्तूरी भैरव रस (रसामृत)

मन्थर, ज्वर, सन्नितपात के तेज मियादी बखार, वात–कफ के विकारों अनिद्रा, स्त्रियों के हिस्टीरिया प्रलाप, शीतांग, अर्धाग, जैसे कठिन वात रोगों में लाभकारी है। एक–एक गोली दिन में दो या तीन बार दें।

वैद्यनाथ कस्तूरी भैरव रस (बृहद) (भैषज्य रत्नावली)

यह रस सोना, मोती, प्रवाल, कस्तूरी आदि गुणकारी बहुमूल्य औषधियों के योग से बनाया जाता है। इसलिए कस्तूरी भैरव रस से विशेष गुणकारी है। एक गोली सन्निपात ज्वर में अदरक रस से आमातिसार में बेल गिरी चूर्ण और मधु से दें।

वैद्यनाथ कामदुधा रस (मोती.यु.) (रस योग सागर)

यह रसायन पित्त एवं वात प्रधान रोगों में विशेष लाभदायक है। पित्त विकार, अम्लपित्त, भ्रम (चक्कर आना) मस्तकशूल, दिमागी कमजोरी, रक्तार्श (खूनी बबासीर) रक्तपित्त, जलन, अधिक प्यास लगना आदि विकारों में लाभदायक है क्योंकि यह रसायन शीतवीर्य प्रधान है इसलिए इसका प्रभाव रक्तवाह व वातवाह नाड़ी एवं वृक्क संस्थान (मूत्राशय) पर विशेष होता है किसी भी पुरानी बीमारी के ठीक होने तथा विशेषकर जीर्ण मलेरिया (विषम ज्वर) में कुनैनयुक्त औषधि सेवन किए व्यक्ति को कामदुधा रस मोतीयुक्त शीतलता एवं कैल्शियम की पूर्ति के लिए भी दिया जाता है।

PDF Scanner ACE Scanner

सेवन मात्रा व उपयोग–

रक्तपित्त, रक्त प्रदर, भ्रम, उन्माद, अम्लपित्त, और सोमरोग में फायदेमन्द है। पित्त के विकार और नाक, मुँह, गुदा, योनि आदि से रक्त गिरता हो तो इस दवा का अवश्य उपयोग करना चाहिये।

250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. सुबह और शाम गुलकन्द या च्यवनप्राश के साथ दें। बच्चों को चौथाई से आधी मात्रा दें।

वैद्यनाथ कामदुधा रस (रस योग सागर)

यह कामदुधा रस मोती युक्त से न्यून है। इसके सभी गुण उपरोक्त के समान ही है।

वैद्यनाथ कामधेनु रस (भैषज्य रत्नावली)

यह बल–वीर्य–वर्द्धक, कामोद्दीपक, पुष्टिकर रसायन है।

इसके सेवन से प्रमेह, विशेष कर शुक्रमेह, ध्वजभंग आदि रोग नष्ट होकर शरीर में प्रचुर काम शक्ति पैदा होती है। वीर्य की कमी से उत्पन्न नपुंसकता, इन्द्रिय, सुस्ती आदि इससे बहुत जल्द ठीक हो जाता है। एक ग्राम दवा को 12 ग्राम च्यवनप्राश स्पेशल मधु चटाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध इच्छा अनुसार देना चाहिए।

वैद्यनाथ कामिनीविदावण रस (के.सु.) (भैषज्य रत्नावली)

यह वीर्य की स्थिरता पैदा करता है शीघ्र वीर्य पतन वालों के लिए लाभदायक है। यह यान रखने लायक बात है कि इससे तीसरा भाग अफीम का है। इससे दस्त की कब्जियत हो तो सुबह गर्म दूध घी मिलाकर पीना चाहिए। एक दो गोली तक रात्रि में संभोग में दो तीन घन्टे पहले ज्यादा औटा हुआ दूध मिश्री या चीनी मिलाकर सेवन करें।

वैद्यनाथ कुमारकल्याणरस (स्व.मो.यु.) (भैषज्य रत्नावली)

यह बच्चों के कास, श्वास, शारीरिक क्षीणता, सूखा, वमन, संग्रहणी, पसली, चलने में शीघ्र फायदा पहुंचाता है। चेचक और मोतीझरा में भी उपयोगी है। बच्चों के लिए आधा गोली माता के दूध अथवा बच तथा मधु के साथ पूरी उम्र वालों के लिए एक गोली दें।

वैद्यनाथ क्रव्यादरस (भैषज्य रत्नावली)

यह परम पाचक और अग्निदीपक, महौषधि है। पेट, तिल्ली और जिगर और फेफड़े के रोगों में इससे लाभ होता है। एक से दो गोलियों तक बिजौरें नींबू के रस, मढे या जल से दें।

वैद्यनाथ कृमिकुठार रस (रसामृत)

यह दवा कृमिरोग (पेट में कीड़े पड़ जाने में) बहुत फायदेमद है। विशेषकर बच्चों में यह रोग ज्यादा होता है। जिससे बच्चे पीले पड़ जाते है। उस समय इस दवा का उपयोग करना चाहिए।

एक–एक गोली दिन में दो बार बच्चों को आधी गोली सुबह शाम पानी चा खुरासानी अजवायन के काढ़े से देना चाहिए।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ कुमुदेश्वर रस (रसेन्द्र सार संग्रह)

राजयक्ष्मा की प्रथम अवस्था, जीर्ण ज्वर, पुरानी खाँसी, श्वास में होने वाले उपद्रव, पार्श्वशूल, हृदय की धड़कन निद्रानाश आदि में लाभकारी है। एक–एक रत्ती काली मिर्च चूर्ण और घी के साथ या मधु अथ्वा रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ गंगाधर रस (भारत भैषज्य रत्नाकर)

अतिसार, संग्रहणी, ऑव, खून के दस्त में लाभकारी है। एक से दो गोली दिन में दो या तीन बार दें।

वैद्यनाथ गंधक रसायन (आयुर्वेदप्रकाश)

यह रोगनाशक औषधि के साथ–साथ रसायन गुणकारक भी है। गन्धक रसायन निर्माण से पहले इसका प्रमुख घटक द्रव्य आंवला सार गन्धक को गाय के दूध में दौला यंत्र शास्त्रोक्त विधान से शोधित किया जाता है, तत्पश्चात इसमें दालचीनी, तेजपत्र, छोटी इलायची, नाग केशर, गिलोय स्वरस त्रिफला क्वाथ शृंगराज रस से अदरक आदि विष प्रभाव नाशक औषधि यों के साथ मर्दन कर विष प्रभावहीन किया जाता है फिर समान भाग मिश्री मिलाकर "गंधक रसायन" रक्त शोधन रक्त वर्धन रसायन के रूप में निम्न रोगों में प्रयोग किया जाता है।

सेवन मात्रा एवं प्रमुख गुणधर्म –

सब प्रकार के रक्त विकार, खाज–खुजली, फोड़ा फुन्सी रक्त रोग एवं चर्म रोग में उपयोगी व अग्निवर्द्धक है। 500 मिग्रा. से 1 ग्रा. (2 से 4 टैबलेट प्रतिदिन) तक मधु या त्रिफला क्वाथ से दें।

वैद्यनाथ गर्भचिन्तामणि रस बृहत (भैषज्य रत्नावली)

गर्भपात, गर्भावस्था के समय ज्वर, दाह, सन्निपात, हो जाने पर बच्चा पैदा होने के बाद प्रसूत ज्वर हो जाने पर गर्भ चिन्तामणि रस का प्रयोग करना चाहिये। गर्भावस्था में मधु से घोंटकर चटाना चाहिये।

प्रसूत ज्वर में ऊपर से दशमूल का काढ़ा देना चाहिये।

वैद्यनाथ गर्भपाल रस (रस योग सागर)

गर्भ के कारण पैदा होने वाले वमन, अरूचि, ज्वर आदि की अच्छी दवा है। गर्भ–पोषण और गर्भिणी के बलवर्द्धन के लिये भी अत्युत्तम है। एक से दो गोली रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ ग्रहणीकपाट रस (रस योग सागर)

पुराने अतिसार संग्रहणी आँच (पेचिस) पेट में दर्द बार–बार दस्त लगे और जलन के साथ दस्त हो ऐसी अवस्था में इसके सेवन से लाभ होता है। एक से दो गोली सफेद जीरे का चूर्ण 1 माशा और मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ गुल्मलालानल रस (भैषज्य रत्नावली)

यह रसायन गुल्म–रोग में प्रयोग किया जाता है। वात प्रधान गुल्म रोग में तो इससे

PDF Scanner ACE Scanner

आश्चर्यजनक लाभ होता है। एक से दो गोली हर्रे के क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ चतुर्भुज रस (रसेन्द्र सार संग्रह)

अपतंत्रक, दिमागी, कमजोरी, आक्षेपक आदि वात रोगों, शोथ, मन्दाग्नि हाथ काँपना, पित्तकफ जन्य विकार नष्ट होते हैं। एक एक गोली सुबह शाम दिन में दो बार दें।

बैद्यनाथ चतुर्मुख रस (भैषज्य रत्नावली)

मूर्छा, हिस्टीरिया, मृगी, उन्माद, समस्त प्रकार के वायु रोगों शारीरिक क्षीणता तथा रक्तचाप की कमी में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह शाम दिन में दो बार त्रिफला चूर्ण, डेढ़ से तीन ग्राम मधु के साथ चटाना चाहिये।

बैद्यनाथ चन्द्रकला रस (मो.यु.) (सिद्धयोग संग्रह)

इस रस के सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह, श्वेत प्रदर, मूत्रकृच्छ, टट्टी पेशाब के साथ वीर्य का जाना स्वप्न दोष बराबर धातु गिरना आदि में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ चंद्राशु रस (रसचन्द्राशु)

इस रसायन के सेवन से गर्भाशय दोष, योनि शूल, योन में पीड़ा एवं दाह होना तथा योनि की स्थान–भ्रष्टता, चलना तथा रजोदोष में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह–शाम जीरा–क्वाथ गो–दुग्ध, जटामांसी–क्वाथ रोगानुसार अनुपान दें।

बैद्यनाथ चंद्रामृत रस (सिद्धयोग संग्रह)

यह पाँचों प्रकार की खाँसी के लिये फायदेमन्द खाँसी में खून आना तथा खाँसते ही दाह, प्यास मूर्छा हो जाती है, श्वास आदि में भी लाभकारी है। एक गोली शहद में मिलाकर चटायें और ऊपर से बकरी का दूध और रोगानुसार अनुपान दें।

बैद्यनाथ चिन्तामणि रस (सिद्ध योग संग्रह)

यह सब प्रकार के ह्रदय रोग और ह्रदय शूल ह्रदद्रव (ह्रदय में स्पन्दनाधिक्य) में अत्यन्त लाभदायक है। मानसिक दुर्बलता को दूरकर अनिद्रा, घबराहट आदि में लाभ करता है। एक–एक गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ चिन्तामणि चतुर्मुख रस (भैषज्य रत्नावली)

चतुर्मुख रस की अपेक्षा यह विशेष लाभदायक है। मात्रा और अनुपान तदनुकूल ही है।

बैद्यनाथ चौसठ प्रहरी पीपल (आ.सा.सं.)

वात और कफ जनित विकार, कास, श्वास, अग्निमांघ, अरूचि, अम्लपित्त, हिचकी, पाण्डु, अर्श, शूल आदि में लाभकारी है। 2 से 4 रत्ती तक मधु तथा रोगानुसार उचित अनुपान से दें।

बैद्यनाथ जयमंगल रस (स्व.यु.) (भैषज्य रत्नावली)

सभी प्रकार के पुराने बुखार (जीर्ण ज्वर) जटिल ज्वर धातुगत ज्वर और उसके उपद्रव

PDF Scanner ACE Scanner

इससे शान्त होते हैं। शरीर को पुष्ट करता है। 1–1 गोली जीरे के चूर्ण और शहद या गुड़ची स्वरस और शहद के साथ दें।

बैद्यनाथ जवाहर मोहरा नं. १ (आ.सा.सं.)

यह हृदय को बल देने वाला उत्तम योग। दिल की घबराहट, हृदय का धड़कना, हृदय की दुर्बलता थोड़ा सा चलने में दमभर जाना आदि में लाभकारी है। 125 मिग्रा. दिन में 2–3 बार शहद या खमीरे गांजवा में मिलाकर दें।

बैद्यनाथ जवाहर मोहरा (आ.सा.सं.)

यह जवाहर मोहरा नं. 1 की अपेक्षा गुण में किन्चित न्यून है। अनुपान आदि में नं. 1 की तरह है।

बैद्यनाथ ज्वरमुरारि रस (भैषज्य रत्नावली)

ज्वर में अजीर्ण, अपचन, अतिसार, ऐंठन, आमजनित, ज्वर, पित्त वृद्धि के कारण प्यास ज्यादा लगना पतले दस्त होना, आदि में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह–शाम अदरक रस और मधु के साथ दें।

बैद्यनाथ ज्वरसंहार रस (सि.यो.सं.)

ज्वर सहार रस अनुपान भेद में सभी प्रकार के ज्वरों में विशेषतः कफ और वात ज्वर में अधिक लाभ करता है। जुकाम, खाँसी श्वासनक ज्वर (न्यूमोनिया) में भी लाभकारी है। 1–1 गोली एक–एक रत्ती गोदन्ती भस्म के साथ मिलाकर जल या किसी ज्वरध्न कषाय के अनुपान से दें।

बैद्यनाथ ज्वरांकुश रस (भा.भै. रत्नाकर)

यह ज्वर और वेदना नाशक औषधि है, वात पित्त, कफ के बुखार, अतिसार, मन्दाग्नि और मलेरिया की प्रसिद्ध महौषधि है। 1–1 गोली दिन में दो से चार बार तक दें।

बैद्यनाथ त्रयंजनिकारि रस (सि.यो.सं.)

पक्षाघात (लकवा) धनुष्ट कार, गठिया, वात रोग, आतशक, सूजाक, न्यूमोनिया, उरस्तोय, डब्बा, शीतांग सन्निपात आदि में लाभकारी है। 1–2 गोली सुबह–शाम गाय के दूध या दशमूल क्वाथ के अनुपान से दें।

बैद्यनाथ तारकेश्वर रस (भै.र.)

बहुमूत्र में जब पेशाब बहुत अधिक होने लगता है या पेशाब के साथ धातु जाने लगता है उस समय इसके सेवन से जल्द लाभ होता है। 1–1 गोली सबेरे शाम, जामुन, गुठली चूर्ण और मधु अथवा गूलर फूल के चूर्ण 2 ग्राम और मधु से चटावें।

बैद्यनाथ तालकेश्वर रस (भाव प्रकाश)

यह कुष्ठ रोग की अति उत्तम औषिध हैं। इससे खाज, खुजली, कठिन, चर्म रोग और रक्त दोष दूर होते हैं। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ त्रिभुवनकीर्ति रस (योग रत्नाकर)

त्रिभुवन कीर्ति रस का प्रभाव हृदय, मूत्रपिण्ड, त्वचा पर होता हुआ श्वेदवाहिनी ग्रंथियों को

PDF Scanner ACE Scanner

जागृतकर अतिशीघ्र भीतर से बाहर स्वेद (पसीना) ला देती है जिससे ज्वर का तापमान कम हो जाता है तथा वात–कफ दोष शांत होने लगता है जिससे गले का दर्द शरीर की जकड़न आदि उपद्रव शान्त होने लगते हैं और त्रिभुवन कीर्ति रस में मूत्र प्रवृति अधिक होने लगती है तथा नाड़ी की गति धीमी हो जाती है। पित्त प्रधान ज्वर तथा पित्त प्रकृति व्यक्तियों को इस रसायन को स्वल्प मात्रा में देना और पित्त शामक औषधि द्रव्य जैसे प्रवाल पिष्टी, स्वर्ण माक्षिक भस्म, सितोपलादि चूर्ण आवश्यक मात्रा में मिलाकर देना चाहिए।

इस त्रिभुवन कीर्ति रस में शुद्ध हिंगुल, कीटाणु/वायरस नाशक और कफ दोष नाशक गुणयुक्त, शुद्ध वत्सनाभ ज्वरनाशक, पसीना प्रवर्तक और सूजन को कम करता है। पिप्पली और पीपलामूल उत्तेजक वातनाशक पाचक व दीपक है, सोंठ एवं शुद्ध धतूरा, वेदना नाशक, ज्वर नाशक व कफवात शामक है, सुहाग (टंकण भस्म) विषनाशक–विषाक्त संचित उदर गैस नाशक, कफ को पतलाकर ज्वर जनित श्वास कास में लाभदायक है।

सेवन मात्रा व विशेष गुणधर्म –

संक्रामक रूप में फैले इन्फ्लुएंजा, सर्वांग में तीव्र वेदना, तापमान का अधिक होना, सर्दी जुकाम गले की खराबी, सूखी खाँसी विशेषतः वात कफ ज्वरों में अधिक लाभकारी है। चार–चार घंटे के अन्तर से दिन भर में 2 से 4 गोलियाँ शहद और अदरक रस से दें।

बैद्यनाथ त्रैलोक्य चिन्तामणि रस (भै.र.)

त्रिदोष नाशक बल वीर्यवर्द्धक एवं पौष्टिक रसायन है। सब प्रकार के नये पुराने गठिया रोग, लकवा, पक्षापातख धनुष्टंकार, लगड़ापन अंगों का जकड़ना छाती और कमर का दर्द आदि में लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ दन्तोद्भेदगदान्तक रस (भै.र.)

बच्चों को दाँत निकलने के समय अनेक तरह की तकलीफ हो जाया करती है। जैसे हरे पीले दस्त होना, दूध की उल्टी होना, पेट में दर्द, अपच, अरूचि, ज्वर, रोना चिल्लाना आदि इस रस के सेवन से उक्त सारी तकलीफें दूर हो जाती हैं। आधी से एक गोली तक माता के दूध या जल से पिलावें।

बैद्यनाथ नष्टपुष्पान्तक रस (रस चण्डांशु)

यह रस उग्र और उष्णवीर्य है। जब मासिक धर्म रूक गया हो तो, या दर्द के साथ थोड़ा–थोड़ा होता हो अथवा पूरी उम्र होने पर भी रजोदर्शन नहीं हुआ हो तो इसका सेवन लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह–शाम दिन में दो बार तिल और गुड़ के क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ नागार्जुनाभ्र रस (रसेन्द्रसार संग्रह)

यह हृदय रोग की बड़ी अच्छी औषधि है। इससे हृदय की कमजोरी, हृदय की धड़कन और दर्द होना। हृदय की अनियमित गति को नियमित करने के लिए इसका सेवन कराना चाहिए। मन्दाग्नि, सूजन, अम्लपित्त, रक्तपित्त, और विषम ज्वर आदि में भी यह औषधि

PDF Scanner ACE Scanner

अच्छा काम करती है। 1–1 गोली सुबह–शाम मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ नाराच रस (भै.र.)

गुल्म, कब्ज, प्लीहा आदि उदर रोगों में विरेचन के लिए अच्छा है। जमालगोटा का मिश्रण होने के कारण यह तेज जुलाब है। पेट में जमे हुए दूषित मल को निकलाकर पेट साफ करता है। 1 से 2 रत्ती चावल के पानी के साथ सुबह चार बजे देना चाहिए।

वैद्यनाथ नित्यानन्द रस (भै.र.)

यह श्लीपद (फीलपांव) की सर्वोत्तम औषधि है। इसके अलावा कफ और वात जनित रोग, अर्बुद, गण्डमाला, दारूण, वातरक्त, आन्त्र वृद्धि आदि में लाभकारी है। 1–2 गोली सुबह–शाम दिन में दो बार गोमूत्र या गर्म जल से दें।

वैद्यनाथ नृपतिबल्लभ रस (भै.र.)

संग्रहणी और सभी प्रकार के अतिसार रोग के लिए यह रसायन बहुत श्रेष्ठ दवा है। इसके सेवन से मन्दाग्नि ज्वर, आँव के बवासीर आदि रोग अच्छे हो जाते हैं। 1 से 2 गोली गर्म जल या मट्ठा से दें रोगानुसार अनुपान का सेवन करायें।

वैद्यनाथ पुष्पधन्वा रस (भैषज्य रत्नावली)

यह रस अत्यन्त कामोत्तेजक, बल वीर्य, एवं शक्ति वर्द्धक, और उत्तम बाजीकरण है। इसके नियमित सेवन से वीर्यस्राव, रजःस्राव निर्बलता, वीर्य विकार ध्वजभंग, बन्धत्व आदि में लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह–शाम औटायें हुए दूध, मक्खन, मिश्री आदि से दें।

वैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस बृ. (भै.र.)

यह सभी प्रकार के कठिन रोगों प्रमेह, नपुंसकता जननेद्रिय विकारों तथा शुक्राणुओं और रजाणुओं की उत्पत्ति का क्रम ठीक करता है। अति मैथुन या हस्त मैथुन से दुर्बल पुरूषों में फिर से ताकत लाता है। एक–एक गोली सुबह शाम मधु, मक्खन मिश्री मलाई या दूध श्र से दें।

वैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस (भै.र.)

बल वीर्य बर्द्धक धात रोग स्तम्भक शक्ति. काम शक्ति. बाजीकरण आदि में लाभकारी है। 1 गोली सुबह और.1 गोली शाम रात को सोने से एक घण्टा पहले मक्खन, मलाई, मिश्री या गर्म दूध से दें।

वैद्यनाथ प्रतापलंकेश्वर रस (योग रत्नाकर)

प्रसूत रोग के लिए यह रसायन अमृत समान है। प्रसूत ज्वर, खाँसी, धनुर्वात, दन्तबन्ध, उन्माद रोग, भयंकर सन्नितपात, अतिसार, ग्रहणी आदि में लाभकारी है। 2 से 4 रत्ती सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ प्रदरान्तक रस (भै.र.)

इसके सेवन से स्त्रियों का नये पुराने सफेद या लाल किसी भी प्रकार का प्रदर नष्ट हो

ACE Scanner

जाता है और दुर्बल रोगिणी स्त्रियों को यह रस सबल स्वस्थ्य बना देता है। कमर का दर्द, पेडू में दर्द होना, हाथ–पैरों और आँखों की जलन, भूख न लगना आदि में लाभकारी है। एक–दो गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ प्रदररिपु रस (योगरत्नाकर)

स्त्रियों को अधिक दिन तक पानी जैसा पतला प्रहर बार–बार होना इससे गर्भाशय बहुत कमजोर हो जाता है। इसके सेवन से प्रदर रोग में लाभ होता है। 1–2 गोली सुबह–शाम मधु से चटाकर ऊपर से चावल का पानी या अशोकारिष्ट पिलाना चाहिए।

बैद्यनाथ प्रवाल पंचामृत रस (मो.यु.) (योगरत्नाकर)

पाचक पित्त की विकृति के कारण अन्न अथवा खाद्य पदार्थ ठीक से नहीं पचता जिससे अजीर्ण व अम्लपित्त खट्टी डकारें आने लगती हैं। आमाशय एवं यकृत/लीवर की सूजन, घबराहट, बैचेनी आदि लक्षण होने लगते हैं, प्रवाल पंचामृत रस के प्रयोग से उपरोक्त लक्षणों तथा यकृत वृद्धि में भी कमी होने लगती है। इस रसायन में पांच शीतल प्राकृतिक सेन्द्रिय कैल्शियम हैं।

1. प्रवाल–पित्तशामक और मूत्रल है।
2. मोती–दाह जलन पित्तदोष शामक रक्त प्रसाधक है।
3. शंख–पाचक ग्राही है।
4. कौड़ी–अग्नि–प्रदीपक पित्तनाशक है।
5. सीप (शुक्ती)–शीतल, वात कफ शामक रक्तरोधक स्तम्भक गुणयुक्त है।

सेवन मात्रा एवं प्रमुख गुण धर्म–

गुल्म, उदर रोग, प्लीहा, मन्दाग्नि, प्रमेह मूत्र रोग, अश्मरी, हृदय रोग, अजीर्ण, खाँसी, श्वास वात कफ विकार खट्टी डकारे गले में जलन, आँव व संग्रहणी में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ पीयूषबल्ली रस (सिद्धयोग संग्रह)

यह रस कठिन से कठिन संग्रहणी, प्रबल अतिसार बवासीर, आमशूल, रक्त, मिश्रित दस्तों गुल्म पांडु, कामला, वमन आदि में लाभकारी है। एक दो गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ बंगेश्वर रस (भै.र.)

प्रमेह, मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ, मधुमेह, क्षय, कुष्ठ, पाण्डु, हलीमक, शूल श्वास, ज्वर हिचकी, अग्निमांद्य अरूचि आदि में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह शाम मधु से दें।

बैद्यनाथ बंगेश्वर रस. (भै.र.)

बलवीर्य कान्ति वर्द्धक, दुर्बलता नाशक, स्वप्नदोष, शुक्रक्षय, मूत्र विकार, बाजीकरण, बंगेश्वर रस साधारण से अधिक प्रभावी है तथा उपरोक्त के सभी रोगों में जल्दी लाभ करता है।

एक–एक गोली मधु से दें तथा ऊपर से गाय या बकरी का दूध सेवन करायें।

ACE Scanner

वैद्यनाथ बसन्तकुसुमाकर रस (स्वर्ण मो.अ.यु.) (सि.यो.सं.)

हृदय की कमजोरी, हृदय शूल मस्तिष्क की निर्बलता, याददाश्त (स्मृति) की कमी, नींद न आना आदि विकारों को दूर करता है, गर्भाशय की खराबी, वीर्य विकार एवं प्रमेह–म गुमेह व धातुक्षीणता की यह प्रसिद्ध औषधि कल्प है अनुपान भेद से बसन्त कुसुमाकर रस अनेक रोग नाशक तथा रसायन बाजीकरण की प्रसिद्ध स्वर्णकल्प औषधि है।

रोगानुसार अनुपान व मात्रा–

1. प्रमेह– बहुमूत्र से गिलोयसत्व 500 मिग्रा0 एवं त्रिवंग भस्म 125 मिग्रा० काले तिलक गूलर फल चूर्ण व मधु के साथ।
2. मधुमेह में– त्रिवंग भस्म 125 मिग्रा० आमलकी रसायन 2 ग्राम शिलाजित्वादि वटी 2 गोली दूध अथवा जल के साथ।
3. रक्तपित्त–रक्त स्त्राव में– चन्दनादि चूर्ण 1 ग्राम अडूसा रस अथवा ग्रीष्मा शर्बत से दें।
4. नपुंसकत्व–वीर्य विकार में– त्रिजात, (दालचीनी, तेजपत्र, छोटी इलायची) चूर्ण 1 ग्राम एवं धातु पौष्टिक चूर्ण 2 ग्राम गाय के दूध के साथ।
5. सोमरोग–श्वेत प्रदर (स्त्री रोग) गोदन्ती भस्म 250 मिग्रा0 बहुमूत्रातक रस 1 गोली पुष्यानुग चूर्ण 1 ग्राम मधु दूध से दें।
6. धातुक्षय–ओजक्षय में– अश्वगंधा 2 ग्राम बंग भस्म 125 मिग्रा0 घी–दूध के साथ।
7. श्वास–कास में– चौसठ प्रहरी पिप्पली 250 मिग्रा० कण्टकार्यावलेह 3 ग्राम कासामृत हर्बल व मधु के साथ दें।
8. क्षय (तपेदिक–टी0बी0) में सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम टंकण भस्म 250 मिग्रा० लौह भस्म 125 मिग्रा0 च्यवनप्राश गाय के दूध के साथ दें।
9. रसायन–बाजीकरण के लिए– अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 हरीतकी व आमलकी चूर्ण 2 ग्राम
10. मस्तिष्क विकार (याददाश्त की कमी व अनिद्रा) में ब्राह्मी वटी 1 गोली प्रवाल पिष्टी 250 मिग्रा०।
11. हृदय दौर्बल्य (वीकनेस व हार्टवीट) व धड़कन में– अर्जुन छाल चूर्ण 1 ग्राम गुलाब जल गुलाब अर्क के साथ दें।
12. किसी भी प्रकार की सूजन (शोथ) में– ताप्यादि लौह 250 मिग्रा0 मधु अथवा पुनर्नवाष्टक कल्प के साथ।

बसन्त कुसुमाकर रस, "रस रक्तादि" धातुओं की वृद्धि कर हृदय, मस्तिष्क को बल प्रदान करने, शारीरिक कान्ति (तेजस्वीता) बढ़ाने और स्वास्थ्य को स्थिर रखने के लिए परमोत्तम रसायन है।

प्रमुख परिचय–

स्वर्ण मोती, अभ्रक, रससिन्दूर एवं अम्बर आदि बलवर्द्धक और रोगनाशक द्रव्यों के संयोग

ACE Scanner

से बनने के कारण यह सभी रोगों में बहुत फायदेमन्द है। स्त्री–पुरूषों की जननेद्रियों की शिकायतों पर तत्काल प्रभाव होता हैं मुधमेह, बहुमूत्र, प्रमेह, नामर्दी, सोमरोग, श्वेत प्रदर, क्षय, वीर्य की कमी आदि में लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ बसन्तमालती रस (मै.र.)

इसमें स्वर्ण भस्म, मोती भस्म, शुद्ध हिंगुल, यशद भस्म आदि बहुमूल्य द्रव्यों से निर्मित व गाय के दूध व मक्खन के साथ मर्दित नीबू रस से भावित यह औषधि योग, जठराग्नि और धात्वाग्नि की पाचन क्रिया को सुधार कर उनकी विकृति से होने वाले जीर्ण–ज्वर, दौर्बल्य, राजयक्ष्मा, ग्रहणी, अग्निमाद्य स्त्रियों का श्वेत प्रदर एवं बालकों के बालशोष/सूखा फक्वरोग (रिकेट्स) में विशेष लाभदायक है। जीर्ण ज्वर के साथ उपद्रव स्वरूप अनेक रोग होते हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है–

रोगानुसार अनुपान–

1. जीर्ण ज्वर (पुराना बुखार) में– बसन्त मालती रस 125 मिग्रा0 (1 गोली) गिलोयसन्न 250 मिग्रा०, चौसठ प्रहरी पीपल 250 मिग्रा0 अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम मधु के साथ दें।
2. कास–श्वास में– पिप्पली चूर्ण 500 मिग्रा0 प्रवाल भस्म 250 मिग्रा0 श्वास कल्प टेबलेट 1 टैब मधु के साथ दें।
3. मन्दाग्नि (भूख की कमी) में– सोंठ, कालीमिर्च एवं बड़ी पीपल चूर्ण 500 मिग्रा0 मधु के साथ दें।
4. पाण्डुध्रक्ताल्पता में– लौह भस्म 125 मिग्रा0 अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 मधु पुनर्नवा स्वरस अथवा पुनर्नवारिष्ट के साथ दें।
5. संग्रहणी में– चौ0प्र0 पीपल 250 मिग्रा0 पंचामृत पर्पटी 125 मिग्रा0 सफेद भुना जीरा चूर्ण 500 मिग्रा0 मध अथवा सौंफ अर्क के साथ दें।
6. मस्तिष्क दौर्बल्य व अनिद्रा में– ब्राहमी वटी 1 गोली प्रवाल पिष्टी 250 मिग्रा0 स्वर्ण माक्षिक भस्म 125 मिग्रा० ब्राहमी घृत अथवा मधु दूध शंखपुष्पी सीरप के साथ दें।
7. हृदय की दुर्बलता (घबराहट) में– बसन्त मालती रस 125 मिग्रा0 (1 गोली) हृदयार्णव रस 1 गोली अकीक पिष्टी 250 मिग्रा0, अर्जुन छाल चूर्ण 1 ग्राम मधु के साथ।
8. शारीरिक दुर्बलता में– लौह भसम (शतपुटी) 125 मिग्रा०, मोती पिष्टी 125 ग्राम, अश्वगंधा चूर्ण 2 ग्राम गोदूध के साथ।

प्रमुख गुण धर्म एवं मात्रा पुराना बुखार, कास, श्वास, मदाग्नि, पाण्डु, संग्रहणी, सूखा रोग, मस्तिष्क और हृदय की दुर्बलता, दूरकर शरीर को बल और पुष्टि प्रदान करता हैं।

पूरी उम्र वालों को 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. (1 से दो टैब.) तक रोगानुसार अनुपान से दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ बसन्ततिलक रस (भै.र.)

बाजीकरण, वीर्यवर्द्धक, राजयक्ष्मा, अपस्मार (मृगी) वात व्याधि, बहुमूत्र और डायबिटीज में अच्छा प्रभाव होता है। 1–1 गोली सुबह शाम शतावरी, या गिलोय के रस और मधु के साथ दें।

बैद्यनाथ बहुमूत्रान्तक रस (भै.र.)

बहुमूत्र, मधुमेह (पेशाब में चीनी आना) रोग की उत्तम दवा है। स्त्रियों के सोम रोग, प्रमेह शीघ्रपतन, वीर्य की कमी, नपुंसकता, नामर्दी में लाभकारी हैं। 1–2 गोली सुबह शाम दिन में दो बार रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ बालरोगान्तक रस (भै.र.)

बच्चों के सर्दी (कफ) बढ़ जाने से खाँसी हो जाती है ज्वर बना रहता है, पसली चलना, आँखे लाल होना, सांस लेने में कठिनता, न्यूमोनिया आदि में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह शाम मधु या माँ के दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ बालार्क रस (सि.यो.सं.)

इस रस का सेवन कराने से बच्चों के समस्त प्रकार के रोग जैसे ज्वर, अतिसार, हरे पीले दस्त बालशोध, डब्बा रोग उदर कृमि आदि विकारों में लाभकारी है। एक–एक गोली दिन में 2–3 बार मधु या जल या माँ के दूध से दें।

बैद्यनाथ बोलबद्धरस बृहद (नि.र.)

अम्ल पित्त, रक्त प्रदर, रक्त पित्त, खूनी बवासीर, रक्त प्रमेह, वात रक्त, भगन्दर, नाक, मुँह, गुदा, योनि मार्ग से गिरता हुआ खून इसके प्रयोग से बन्द हो जाता है।

बैद्यनाथ मकरध्वज गुटिका (र.त.सा.व.सि.प्र.सं.)

इसके सेवन से शरीर का वजन बढ़ता है। सुनिद्रा और मानसिक बल प्राप्त होता है। शीघ्रपतन नाशक, कामोत्तेजक, बल वर्द्धक, स्तम्भन शक्ति वर्द्धक, नपुंसकता नाशक अनुपान भेद से अनेक रोगों में लाभकारी है। 1.1 गोली सुबह शाम मधु या पान में रखकर सेवन करें ऊपर से गर्म दूध का सेवन करें।

बैद्यनाथ मन्मथ रस (रसेन्द्र सार संग्रह)

इसके सेवन से नपुंसकता, नामर्दी, शीघ्रपतन, काम शक्ति की वृद्धि होती है। इसमें अफीम जैसा मादक द्रव्य नहीं है। यह बलप्रद और पौष्टिक बाजीकरण रसायन है। 1 से 2 गोली सुबह शाम ओटे हुए दूध में मिश्री मिला कर दें।

बैद्यनाथ महागंधक रस (भै. र.)

संग्रहणी प्रवाहिका, प्रसूत रोग, श्वास अतिसार, प्रदर, बच्चों के हरे पीले दस्त, ज्वर आदि रोगों में लाभकारी है। 2 रत्ती सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ महाज्वरांकुश रस (रसेन्द्र सार संग्रह)

विषम ज्वर, बारी से आने वाला बुखार तथा जीर्ण ज्वर में इसका उपयोग किया जाता है।

PDF Scanner ACE Scanner

किसी भी दवा से ज्वर न टूटता हो तो इसका उपयोग करना चाहिए। 1–1 गोली चार–चार घंटे के अन्तर से मधु और अदरक रस के साथ दें।

बैद्यनाथ मृत्युंजय रस (भै.र.)

पित्त विकारों को छोड़कर सभी ज्वरों में यह लाभ करता है। पेट के पेचिस विकार को पचाकर और पसीना लाकर बुखार दूर करता है। अतिसार में भी इससे लाभ होता है।

बैद्यनाथ महामृत्युंजय रस (र.त.सा.द.सि.प्र.सं.)

इस रस का उपयोग नये पुराना ग्रथिक और सन्निपात ज्वर तथा विषम ज्वर में किया जाता है प्लेग के कीटाणुओं को नष्ट करता है, आम शोषण करता है। एक–एक गोली दिन में तीन चार बार चार–चार घन्टे के बाद अदरक रस, मधु या तुलसी के रस से दें।

बैद्यनाथ महालक्ष्मीविलास रस (स्व.यु.) (भै.र.)

महालक्ष्मी विलास रस (स्वर्णयुक्त) त्रिदोषक रोग की अचूक दवा है। तीनों दोष (वात, पित्त, कफ) तभी प्रकुपित होते हैं जब किसी रोग को उत्पन्न हुए काफी दिन बीत चुके हों। जब एक रोग के साथ अनेक रोग हो जाते हैं तब रोग प्रतिरोधक शक्ति (इम्युनिटी) शरीर की क्षीण हो जाती है उस अवस्था में स्वर्णभस्मयुक्त औषधि उत्पाद एकमात्र साधन चिकित्सक के पास रह जाता है। स्वर्णयुक्त यह कल्प उत्तम रोग प्रतिरोधक इसमें स्वर्णभस्म– रक्त प्रशाधक हृदय को बलदायक विषनाशक और रसायन गुण प्रधान है। अभ्रक भस्म– रक्त वर्धक रसायन मज्जा धातु रेडमेरी) पुष्टिकारक है।

शुद्ध कज्जली–कृमि/वायरस नाशक, योगवाही और रसायन गुणकारक है।

वंग भस्म– शुक्र/वीर्य वर्धक बल्य रसायन है।

ताम्र भस्म– यकृत/लीवर को शक्ति प्रदान कर शोथ मिटाकर रक्तदोष मिटाता है। इस रसायन का प्रभाव विशेषकर हृदय, फुफ्फस रक्त वाहिनी शिराओं पर होती है। इसे चौसठ प्रहरी पीपल गिलोय सत्व 250 मिग्रा0 सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम मधु के साथ लें।

प्रमुख गुण परिचय एवं सेवन मात्रा – स्वर्ण, अभ्रक, ताम्र भस्म आदि उत्तम मूल्यवान द्रव्यों से बना यह शक्तिवर्द्धक योग है। कठिन रोगों सन्निपात ज्वर, वीर्यनाश, क्षय, शूल, कुष्ठ, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, नामर्दी, त्रिदोषज विकारों में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें। स्वर्ण भस्म– अभ्रक भस्म लौह भस्म आदि।

बैद्यनाथ महालक्ष्मीविलास रस (महासिरो) (भै.र.)

जुकाम (प्रतिश्याय) दुष्ट प्रतिश्याय, पीनस, नासर्बुद, साइनस तथा शिरो रोग में श्रेष्ठ गुणकारी है। एक से दो गोली तक मधु से दो बार दें।

बैद्यनाथ महावातविध्वंसन रस (रसचन्द्रांशु)

यह सभी प्रकार के वात रोगों की प्रसिद्ध महौषधि है। शूल, कफ, जन्य विकार, सूतिका रोग, मक्कल, शूल आन्त्रिक, सन्निपात (टाईफाइड), आम शोषक, एवं वेदना शामक, गुणयुक्त

PDF Scanner ACE Scanner

होने के कारण यह कठिन से कठिन आमवात में अति गुणकारी है। एक से दो गोली तक रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ महामृगांक रस (र.सा.सं.) (स्वर्ण मोती यु.)

पुराने बुखार खाँसी, श्वास, फेफड़े के.विकार, गुल्म, मन्दाग्नि, स्वर भेद, अरूचि, वमन, भ्रम आदि में लाभकारी है। सप्त धातुओं की पुष्ट होती है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दे।

वैद्यनाथ मुक्तापंचामृत रस (मो.यु.) (रसामृत)

मोती, प्रवाल, मुक्ताशुक्ति, बंग और शंख आदि उत्तम मूल्यवान द्रव्यों से निर्मित इस रस का उपयोगक्षय की प्रारम्भिक अवस्था में किया जाता है। कास, श्वास, पुराने बुखार, फेफड़ों की कमजोरी अग्निवर्द्धक, अम्ल पित्त नाशक है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ मृगांक रस (भै.र.)

राजयक्ष्मा, ज्वर, पुरानी खाँसी, श्वास, हृदय रोगों को नष्ट करता है। इससे फेफड़े और हृदय को भी बल मिलता है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक सुबह–शाम छोटी पीपल के डेढ़ ग्राम चूर्ण और मधु से दें।

वैद्यनाथ योगेन्द्र रस (स्व.मो.यु.) (भै.र.)

पक्षाघात, उच्चरक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) हृदय व मस्तिष्क दौर्बल्यता जन्य रोगों में शरीर के नाड़ी मण्डल–वात वाहिनी व रक्त वाहिनी नाड़ियों (शिरा–धमनियों) की विकृति अथवा निष्क्रियता के कारण होता है। योगेन्द्र रस (स्व०मो0 युक्त) का विशेष प्रभाव असर इन्हीं अवयवों पर विशेष होता है। रोगानुसार अनुपान–पित्त विकार में त्रिफला जल व मिश्री के साथ दें, हिस्टीरिया में जटामांसी क्वाथ मिश्री के साथ, हृदय रोग व उच्च रक्तचाप में अर्जुन छाल चूर्ण 1 ग्राम अथवा क्वाथ के साथ, पक्षाघात में मधु– रसोनघत दूध के साथ दें। दौर्बल्यता में वंग भस्म अश्वगंधा चूर्ण मक्खन मलाई के साथ मस्तिष्क दौर्बल्यता–अनिद्रा में ब्राहमी घृत अथवा ब्राह्मी वटी शंखपुष्पी सीरप के साथ विशेष लाभदायक।

प्रमुख गुण धर्म एवं सेवन मात्रा–

यह वात–पित्तज, उन्माद, मूर्छा, हिस्टीरिया, पक्षाघात, उच्च रक्तचाप, शारीरेन्द्रियों की दुर्बलता, अम्लपित्त राजयक्ष्मा में लाभकारी है। यह बल–वीर्य और स्मृति बर्द्धक है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ याकुती रस (सिद्धयोग संग्रह)

हृदय की दुर्बलता, सन्निपात, ज्वर, नाड़ी की क्षीणता, शरीर ठण्डा पड़ने, हृदय की दुर्बलता से थोड़ा चलने से दम भर जाने में लाभकारी है। 1–1 गोली पोदीने के स्वरस में मिलाकर दें।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ रस पीपरी (आ.यु.) (रत.सा.द.सि.प्र.सं.)

यह औषधि बच्चों के लिए अतीव गुणकारी है। अनुपान भेद से अनेक रोगों में आराम मिलता है। सर्दी, जुकाम, कफ, खाँसी, बुखार कमजोरी, उल्टी, पतली टट्टी होना में लाभकारी है।

125 से 250 मिग्रा. चार–चार घन्टे बाद दें।

वैद्यनाथ रसमाणिक्य रस (भै.र.)

यह खून के विकारों की प्रसिद्ध औषधि है। खाज, खुजली, फोड़े फुन्सी, नासूर, उपदंश, एक्जीमा, आदि में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक सुबह शाम 3 ग्राम मधु और 1 ग्राम घी के साथ दें।

वैद्यनाथ रसराज रस (स्व.यु.) (भै.र.)

कठिन से कठिन वातरोग एवं धनुर्वात (टिंटनिस) जैसे–अप्रत्याशित रोगों में लाभ होना स्वर्ण भस्म के प्रभाव के कारण ही होता है। रसराज रस का प्रभाव विशेषकर वातवाहिनी / नाड़ियों पर होता है जिससे किसी भी अंग की वातवाही नाड़ी की विकृति दूर कर उनमें रक्त संचार का प्रभाव होने लगता है। जिससे वातरोग से पीड़ित शरीर का अंग सक्रिय हो जाता है। रसराज रस रक्त प्रसादक गुण होने से यह रक्त दाव (ब्लड प्रेशर) में भी अच्छा लाभ करता है। रसराज रस की एक विशेषता यह भी है कि यह निम्न रक्त दाव (लो ब्लड प्रेशर) में अश्वगंधा चूर्ण 1 ग्राम लौह भस्म 125 मिग्रा0 मधु दूध के साथ देने से लाभ होता है तथा उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) में प्रवाल पिष्टी 500 मिग्रा0 अथवा मोतीपिष्टी 250 मिग्रा० सर्पगंधा 1 टैब० अर्जुनारिष्ट मधु के साथ देने से लाभ होता देखा गया है।

सेवन मात्रा व प्रमुख गुण धर्म –

पक्षाघात वात विकार शारीरिक, अंगों की अशक्तता, आक्षेपक, कानों में आवाज होने, प्रमेह, नपुंसकता तथा गुर्दे की कमजोरी दूर करके नयी शक्ति पैदा करता है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ राजमृगांक रस (भै.र.)

नई पुरानी खाँसी, क्षीणता, रक्त पित्त, श्वास, कास, राजयक्ष्मा, की प्रथम व द्वितीयावस्था आदि में लाभकारी है। दिल और दिमाग की अशान्ति दूर होती है। 125 मिग्रा. प्रातः सायं रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ रामबाण रस (भै.र.)

यह पाचक, स्वेदल, और मूत्रल है। मूत्र और पसीने के साथ यह विकार को निकालता है। आमवात, अतिसार, आमानुबद्ध संग्रहणी, कास, श्वास, और ज्वर में इससे अच्छा लाभ होता है। 1–2 गोली सुबह–शाम ज्वर में मधु के साथ आम विकारों में मढे, कास, श्वास में मधु व अदरक रस से दें।

वैद्यनाथ लघुमालिनी बसंत रस (र.त.सा.व.सि.प्र.सं.)

जीर्ण ज्वर विषम ज्वर धातुगत ज्वर, रक्तातिसार, प्रदर रोग, मन्दाग्नि, श्वांस, खाँसी, रक्त और पित्तजनित, विकारों में लाभकारी है। 1 से 2 गोली रोगानुसार अनुपान से दें।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ लक्ष्मीविलास रस (नारदीय) (भै.र.)

यह नये पुराने सब तरह के ज्वर तथा सूखी, गीली खाँसी की सुप्रसिद्ध दवा है। सिर दर्द, सारे बदन में दर्द, सर्दी, जुकाम, मियादी बुखार में लाभकारी है। 1–1 गोली 4–4 घंटे बाद तीन चार बार पान के रस और मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ लक्ष्मीविलास रस (कास) (र.सा.सं.)

क्षय रोग, श्वास रोग, हलीमक, पाण्डु रोग, शोथ, शूल रोग, प्रमेह, और बवासीर को नष्ट करता है। इस रसायन के सेवन काल में शाक अम्ल पदार्थ, भुने हुये द्रव्य तथा आग तापना या धूप में बैठना वर्जित है। 1–1 गोली दिन 2–3 बार पान के रस, मधु, अदरक रस रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ लीलाविलास रस (भै.र.)

यह रसायन पित्त की तीव्रता और अम्लता को कम कर अम्ल पित्त को शान्त करता है। तृष्णा (प्यास) वमन, हृदय, दाह, कृमि, पाण्डु, प्रदर, मूत्रकृच्छ आदि में लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह–शाम शहद, दाडिमावलेह या रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ लोकनाथ रस (शारंगधर संहिता)

यह रसायन अतिसार संग्रहणी, अरूचि, मन्दाग्नि, गुल्म, यकृत, प्लीहा, विकार एवं श्वास–कास में लाभकारी है। चार से छै रत्ती सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ लोकनाथ रस वृ. (भै.र.)

इस रस के नियमानुसार सेवन से समस्त प्रकार के कठिन से कठिन प्लीहोदर और यकृत रोग नष्ट होते है। भयंकर उदय रोग, जीर्ण ज्वर गुल्म रोग दारूण कामला, आदि में लाभकारी है। 1 से 3 रत्ती तक दिन में दो बार रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ वातकुलान्तक रस (रसामृत)

अपरस्मार, अपतन्त्रक, पक्षाघात, आदि सभी प्रकार के वात रोगों की श्रेष्ठ दवा है। मूर्छा, (बेहोशी), हिस्टीरिया, सूतिका, रोग जन्य वात रोग, धनुर्वात आदि में भी लाभकारी है। 1–1 गोली दिन में तीनचार बार रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ वातचिन्तामणि रस बृ. (स्व.मो.यु.) (भै.र.)

वात विकारों में अत्यन्त उपयोगी व शीघ्र लाभकारी औषधि होने से इस औषधि का नाम वात चिन्तामणि रस (बृहत) अर्थात जो औषधि रक्तवाही–वातवाही नाड़ी मण्डल की विकृति दूर करने का स्वर्णकल्प है। यह हृदय रोग व विषनाशक है। यह ओजवर्धन गुणकारक है। आज का स्थान हृदय है, इसका विशेष उपयोग वातजहृत शूल (इन्जाइनापेन) तथा हृदय के अन्य रोगों में विशेष रूप से लाभदायक है। इस कल्प का उपयोग आमतौर पर वात विकार जैसे–अर्दित पक्षाघात, संधिगतवात, आमवात, नाड़ी क्षीणता अथवा अनियमितता, जीर्ण ज्वर क्षय रोग में भी उपयोगी है।

PDF Scanner ACE Scanner

रोगानुसार अनुपान–

1. वृ. वात चिन्तामणि हृदयशूल में लक्ष्मी विलास रस 125 मिग्रा0 पीपरमूल चूर्ण 500 मिग्रा० अर्जुन घृत के साथ दें।
2. पक्षाघांत–अर्दित में– योगराज गुग्गुल 500 मिग्रा0 दशमूलारिष्ट 15 मिली0 समभाग जल के साथ दें।
3. संधिगत वात (रूमेटिक अर्थराइटिस) में– वात बिध्वंस रस 125 मिग्रा० अश्वगंधा चूर्ण 2 ग्राम रूमार्थो गोल्ड 1 कैपसूल दूध के साथ दें।
4. जीर्ण ज्वर में– गिलोय सत्व 500 मिग्रा0 महासुदर्शनघन वटी अमृतारिष्ट 15 मिली0 समभाग जल के साथ दें।
5. राजयक्षमा में– रस सिन्दूर 125 मिग्रा0 च्यवनप्राश 10 ग्राम सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम मधु के साथ दें।
6. मस्तिष्क रोग– अनिद्रा आदि में– सर्पगंधा टैब० स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रवाल पिष्टी 250 मिग्रा0 मधु दूध के साथ दें।
7. श्वास अवेगावस्था में– त्रिफला चूर्ण, टंकण भस्म, तालीसादि चूर्ण 1 ग्राम श्वासकल्प टैबलेट–1 मधु कासामृत हर्बल के साथ दें।

सेवन मात्रा एवं प्रमुख गुणधर्म कठिन वात–

कठिन वात रोगों और सर्वांग वेदना की प्रसिद्ध औषधि है। हृदय और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। घबराहट, अनिद्रा, अस्थिरता हाथ–पांव काँपना आदि में लाभकारी है। 1/2–1 गोली दिन में दो बार रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ वातगजांकुश रस (र.सा.सं.)

वात और कफ से उत्पन्न रोगों में इसका प्रभाग बहुत अच्छा होता है। सन्नितपात, गृधसी, क्रोष्टुशीर्षक अबवाहुक, मन्यास्तम्भ, ऊरूस्तम्भ, हनुस्तम्भ और पक्षाघत आदि रोगों में विशेष लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह–शाम मजीठ के क्वाथ में पीपल चूर्ण मिलाकर अथवा रास्नादि या दशमूल क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ वातविध्वंसन रस (आ.सा.सं.)

इस रसायन के सेवन से वात सम्बन्धी होने वाले रोग, शूल, पेट दर्द, कफ से होने वाले रोग, ग्रहणी, सन्निपात, मूढ़वात, सूतिका, रोग गर्भाशयजन्य विकारों में लाभकारी है। 1–1 गोली रोगानुसार अनुपान के साथ दें।

बैद्यनाथ वातारि रस (र.सा.सं.)

इस रसायन का प्रयोग समस्त प्रकार के वात रोग, ऊरुस्तम्भ, आमवात, अन्त्रवृद्धि, मेद वृद्धि आदि रोगों में लाभकारी है। 1 से 2 गोली गरम जल या सोंठ और एरण्डमूल के क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ शक्रबल्लभ रस (भै.र.)

स्वर्ण, रौप्य, पारद, गन्धक की कज्जली आदि अनेक बहमूल्य औषधियों के मिश्रण से निर्मित यह रस वीर्य विकार, हस्तमैथुन विकार, लिंगेन्द्रिय में शिथिलता, शीघ्र पतन,

नंपुसकता, वीर्य की कमी से होने वाले रोगों में लाभकारी है। एक से दो गोली तक सुबह–शाम मिश्री मिले गर्म दूध से दें।

वैद्यनाथ शीतमंजी रस (भै.र.)

यह रसायन शीत ज्वर, ठंड लगकर आने वाले बुखार (मलेरिया बुखार) पारी का बुखार, इकतरा, तिजारी, चौथिया में लाभकारी है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ शिरःशूलादिवज रस (भै.र.)

किसी भी कारण से सिर दर्द पैदा हुआ हो तो उसके लिए यह अति गुणकारी दवा है। 1–2 गोली सुबह शाम 1 ग्राम गोदन्ती भस्म और मिश्री मिलाकर बकरी या गाय के दूध के साथ दें।

वैद्यनाथ श्रृंगाराभ्र रस (भै.र.)

श्वास, कफ, खाँसी, छाती, पसली में दर्द, ज्वर, शोथ (सूजन), अम्लपित्त, पाण्डु आमवात में लाभदायक है। एक–एक गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ श्वासकुठार रस (भै.र.)

यह खाने और सूंघने दोनों ही कामों में आता है। बेहोशी, मृगी, हिस्टीरिया, सन्निपात आदि में लाभकारी है। एक दो गोली चार–चार घन्टे केबाद दें। श्वास रोग में मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ श्वासचिन्तामणि रस वृ. (भै.र.)

यह हृदय–वल्य, शक्तिवर्द्धक रसायन है। फेफड़ों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव होता है। नये पुराने श्वास रोग, जीर्ण कास, क्षय, आत, यकृत, बच्चों की कुक्कुर खाँसी आदि में लाभकारी है। वीर्य को पुष्ट करता है। 1–1 गोली सुबह शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ स्मृतिसागर रस (रस योगसागर)

स्मरण शक्ति बढ़ाने में यह परमोपयोगी है। इसके सेवन से स्नायुविक दुर्बलता में शक्ति मिलती है। मस्तिष्क की कमजोरी से पैदा होने वाले रोग मूर्छा उन्माद, मृगी, हिस्टीरिया, आदि में लाभ करता है। एक–एक गोली सुबह–शाम मधु से चटाना चाहिए।

वैद्यनाथ स्वर्णभूपतिरस (स्वर्ण यु०) (योग रत्नाकर)

त्रिदोष नाशक, सन्निपात, आमवात, वात–व्याधियाँ, संग्रहणी, मन्दाग्नि, शूल, उदर रोग, यकृत, प्लीहा, श्वास, ज्वर, कास आदि में लाभकारी है। सब रोगों के विनाश के लिए स्वर्ण भूपति रस उपयोगी रसायन है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. दिन में दो बार रोगानुसार अनुपान से देना चाहिए।

वैद्यनाथ स्वर्णमालिनी बसन्त रस वृहद (स्व.मो.के.यू.) (र.व.सा.व.सि.प्र.सं.)

जीर्ण ज्वर (पुराना बुखार) विषम ज्वर, धातुक्षीणता, श्वास, कास, प्रदर, आदि रोगों में विशेष उपयोगी है। ज्वर के बाद अथवा किसी कारण से पैदा हुयी दुर्बलता में उपयोगी है।

ACE Scanner

125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें। (1 से 2 टेब.)

बैद्यनाथ सिद्धप्राणेश्वर (भै.र.)

ज्वरातिसार की सर्वोत्तम औषधि सेवन मात्रा–1 से 2 टैब अर्कसौफ के साथ दें।

बैद्यनाथ स्वर्णमालिनी बसन्त रस लघु (स्व.मो.यू.) (र.त.सा.व.सि.प्र.सं.)

बृहत सुवर्ण मालिनी बसन्त से किंचित न्यून गुण युक्त पौष्टिक रसायन है। मात्रा और अनुपान बृहत के समान ही है।

बैद्यनाथ सूतशेखर रस नं. १ (स्व.यु.) (सिद्ध योग संग्रह)

अन्न वहस्त्रोत के पित्त प्रधान विकार आमाशय–पक्वाशय आदि पाचन संस्थान के विकृत पित्त शमन कराने के लिए यह स्वर्णकल्प अत्यन्त लाभकारी है। स्वर्ण जैसे हृदय रोग, विष विकार नाशक और रस प्रशाधन द्रव्य इसमें होने से यह भ्रम मूर्छा शिर–शूल नाशक भी है। इसमें दीपन–पाचन, पित्त शामक, बल कारक, रक्तवर्धक लाभकारी द्रव्यों, रोप्य (चांदी) भस्म, भृंगराज स्वरस आदि का समुचित मिश्रण है।

रोगानुसार अनुपान–

अम्लपित्त में आमलकी रसायन दूध–शक्कर के साथ सूतशेखर रस (स्वर्णयुक्त)। वमन (कै) में ग्रीष्मा एवं अर्कसौंफ अथवा शीतल जल के साथ दें। अतिसार में पियूषवल्लीरस 125 मिग्रा०, विल्वादि चूर्ण 2 ग्राम को जल के साथ दें, उदरशूल में शंखभस्म 250 मिग्रा० अविपत्तिकर चूर्ण 2 ग्राम सौफ अर्क अथवा जल के साथ दें, गुल्म में प्रवाल पंचामृत रस 125 मिग्रा0 व मधु के साथ दें मन्दाग्नि (भूख की कमी) में चौ0 प्रहरी पीपल 500 मिग्रा० के साथ दें। उदावर्त–गैस (उदर वायु) में शंखभस्म 250 मिग्रा0 कर्पदिका भस्म 250 मिग्रा० और मधु के साथ दें, खांसी में अभ्रक भस्म 125 मिग्रा0 व सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम व मधु के साथ दें।

सेवन नात्रा एवं प्रमुख गुणधर्म–

अम्लपित्त, वमन (कै), अतिसार, (उदरशूल) गुल्म, खाँसी संग्रहणी मन्दाग्नि उदावर्त (पेट फूलना) हिक्का (हिचकी) आदि अनेक रोगों में फायदेमन्द है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें। (1 से 2 टैब.)

बैद्यनाथ सूतशेखर रस (आ.सा.सं.)

उपर्युक्त नं. 1 से गुणों में किंचित न्यून है। यह अम्ल पित्त, भग्न रोग और मूत्रकृच्छ रोग के लिए विशेष फायदेमन्द है। मात्रा अनुपालन नं. 1 केसमान है।

बैद्यनाथ सोमनाथ रस बृहत् (स्व.यु.) (भा. भै. रत्नाकर)

यह गुणों में सोमनाथ रस की तरह की फायदेमन्द है। किन्तु स्वर्ण, बंग, अभ्रक, और रौप्य आदि के मिश्रण होने से 20 प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ बहुमूत्र, सोमरोग, मूत्र विकारों में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह शाम मधु से के साथ दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ हृदयार्णव रस (भै.र.)

यह हृदय रोग की सर्वोत्तम दवा है। हृदय की कमजोरी, हृदय का अधिक धड़कना, दर्द, छाती का दर्द, आदि रोग अच्छे होते हैं। इसके सेवन से हृदय की गति नियमित हो जाती हैं।

एक–एक गोली सुबह–शाम अर्जुन घृत 1 चम्मच तथा मधु 2 चम्मच के साथ दें।

बैद्यनाथ शीतपित्तभंजन रस (र.यो.सा.)

यह रस शीतपित्त (पित्ती निकलना) उदर्द (दावड़) कोठ (चकत्ते पड़ना) आदि विकारों में लाभ करता है। पाण्डु कामला, हलीमक, उदररोग, यकृत, प्लीहा, शोथ, अजीर्ण, कफज गुल्म, अश्मरी, आदि में भी लाभदायक है। इसके सेवन काल में तीक्ष्ण एवं गर्म पदार्थों का परहेज रखना आवश्यक है। एक से दो रत्ती एक सुबह–शाम मधु के साथ ऊपर से त्रिफला क्वाथ दें।

बैद्यनाथ लौह मण्डूर

शरीर में रक्त का प्रधान स्थान है। रक्त की कमी से बहुत से रोग होते हैं। इन रोगों में लौह देते ही नये जीवन का संचार होने लगता है लौह अनेक रूपों में रोगी को दिया जाता है। डाक्टरी चिकित्सा में भी लौह के अनेक कल्प हैं। आयुर्वेद को गर्व है कि उसने इस अमृत–तुल्य दवा का सर्वप्रथम आविष्कार किया। लौह का सौम्य रूप मण्डूर है।

बैद्यनाथ अम्लपित्तान्तक लौह (भै.र.)

जब अम्लपित्त रोग ग्रस्त व्यक्ति अत्यधिक रक्त की कमी से दुर्बल होने लगता है उस समय रोग के साथ–साथ रक्ताल्पता दूर करने के उद्देश्य से बैद्यनाथ अम्लपितान्तक लौह का सेवन कराया जाता है। इसमें कान्त लौह भस्म, अभ्रक भस्म व मण्डूर भस्म को शुद्ध कज्जली के साथ कल्प तैयार किया गया है जिसमें आंवला स्वरस की भावना देकर अत्याधिक अम्लपित्त रक्ताल्पता नाशक गुणों से भरपूर है।

रोगानुसार–अधिक जलन व तीव्र अम्लपित्त के समय अम्लपितान्तक लौह 1 गोली सौंफ अर्क में दें। अतिसार के समय धनियां के काढ़े से दें, उदर शूल व कब्ज के समय अम्लपित्त ग्रस्त रोगी को हरड़ (हरीतकी चूर्ण) 2 ग्राम व आंवला चूर्ण 1 ग्राम पथ्यादि काढ़ा के साथ सेवन करायें।

यकृत दोष में बैद्यनाथ लिवरेक्स सीरप 15 मिली के साथ पित्ताशय विकार में गाय के दूध से दें।

प्रमुख गुण धर्म व मात्रा–

यकृत और पित्ताशय की विकृति को ठीक करके विदग्ध पित्त को नष्ट करना इसका खास कार्य है। अम्लपित्त, यकृत–शूल, पिपासा, मूत्रदाह, उदरशूल, पतले दस्त होना आदि में लाभदायक है।

एक से दो गोली तक अम्ल पित्त में धनियाँ, हरे, और सौंफ के क्वाथ से दें।

ACE Scanner

बैद्यनाथ ताप्यादि लौह नं. १ (आ.सा.सं.)

यह सब प्रकार के पाण्डु (पीलिया) रक्ताल्पता, शोथ, खाँसी, श्वास, विषम ज्वर, राजयक्ष्मा, अपरस्मार (मिरगी) प्रमेह, अर्श कुष्ठ, आदि अनेक रोगों में लाभकारी है। 250 से 500 मिग्रा. सुबह–शाम मधु से दें।

बैद्यनाथ धात्री लौह (भै.र.)

यह परिणाम शूल (खाने के बाद पेट में दर्द होना) पंक्ति, शूल, अजीर्ण, अम्लपित्त, कब्ज, गले में जलन होना, खट्टी डकारों का आना आदि रोगों में लाभकारी है। भोजन के पहले और बाद में एक–एक गोली मधु से दें।

बैद्यनाथ नवायस लौह (भै.र.)

शोथ, पाण्डु, मन्दाग्नि, अर्श, कमि, भगन्दर, हृदय और उदर रोगों पर इसका अच्छा प्रभाव होता है। शोथ और रक्ताल्पता में यह चमत्कारी लाभ करता है। 250 मिग्रा. से 500 मिग्रा. तक सुबह–शाम दिन में दो बार दें।

बैद्यनाथ प्रदरारिलौह (भै. र.)

केवल लौह ही प्रदर रक्तस्राव को रोकता है। और इस औषध में तो उसकी शक्ति और भी बढ़ गई है। रक्तस्राव के कारण हुई निर्बलता, अरूचि आदि विकार भी इससे ठीक हो जाते हैं। बवासीर और रक्तपित्त में भी इससे लाभ होता है। एक से दो गोली सुबह–शाम सभी प्रकार के प्रदर रोगों में अशोकारिष्ट अथवा अशोक छाल के क्वाथ से दें। रक्तार्श और रक्तपित्त में मक्खन मिश्री से दें।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक लौह (रसेन्द्रसार संग्रह)

स्त्रियों में गर्भाशय दोष प्रमुख रूप से दो कारणों से होता है अनिमियत आहार–विहार एवं रक्ताल्पता अथवा मेदोवृद्धि के कारण लौहतत्व की कमी के कारण गर्भाशय शोथ (सूजन) जिससे अन्तःस्त्रावी तत्व शरीर के बाहर आने लगता है जिसको श्वेत प्रदर (लिकोरिया) कहा जाता है। इस रोग के कारण स्त्रियों की प्रजनन प्रक्रिया एवं रजः स्त्रावी / मासिक धर्म पर भी काफी विपरीत प्रभाव पड़ता है। जिससे स्त्री निस्तेज–शिथिल बदन व अनेक रोगों से पीड़ित रहती है। प्रदरान्तक लौह का सेवन घी, मिश्री अथवा मधु–दूध के अथवा चावल के धोवन के साथ सामान्यतः लिया जाता है। किन्तु शास्त्रोक्त व अनुभाविक (प्रेक्टीकल) विधि इस प्रकार हैश्वेत प्रदर में 1 से 2 गोली बैद्यनाथ अशोकारिष्ट स्पेशल 10 से 15 मिली0 (2 से 4 चम्मच) बराबर जल के साथ भोजन के बाद दें। मासिक धर्म की अनियमितता अथवा गर्भाशय विकार की अवस्था में बैद्यनाथ सुन्दरी सखी टेबलेट एक तथा सुन्दरी सखी सीरप 10 मिली0 बराबर ठण्डे पानी के साथ भोजन के बाद प्रतिदिन दो बार दें।

प्रमुख गुण धर्म व मात्रा–

यह सभी प्रकार के नीले, रक्त, श्वेत, प्रदर, कुक्षि, कटि, एवं योनि शूल, अरूचि, मन्दाग्नि, आदि को नष्ट कर मासिक धर्म साफ लाता है। गर्भाशय एवं बीज कोश की शिथिलता में

PDF Scanner ACE Scanner

इसका प्रयोग अच्छा कार्य करता है। 375 मिग्रा. से 500 मिग्रा. दिन में दो बार मिश्री और घृत 1 ग्राम व शहद 3 ग्राम के साथ दें।

वैद्यनाथ पुनर्नवादि मण्डूर (भै.र.)

मण्डूर और पुनर्नवा का यह रासायनिक योग शरीर में खून बढ़ाता है। सूजन, पेट के रोग, प्लीहा, बवासीर, कृमि, वातरक्त, कफ, खाँसी आदि में अच्छा लाभ होता है। एक से दो गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ मेदोहरविडंगादि लौह (भै.र.)

मेद (चर्बी) स्थूलता पेट बढ जाना चलने में दम फूलना. आलस्य नींद एवं पसीना विशेष आना, पेशाब में चीनी हो जाना आदि में लाभकारी है। 500 मिग्रा. से 1 ग्राम तक रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ विषमज्वरान्तक लौह (पु.प.)(स्व.मो.यु.)(भै.र.)

यह खास कर विषम ज्वर की अचूक दवा है। वात पित्त और कफ से पैदा होने वाले आठ प्रकार के ज्वर एकतरा, तिजारी, चौथिया, पारी का बुखार आदि में शीघ्र लाभ होता है। यह कामला, पाण्डु, शोथ, प्रमेह, ग्रहणी, अतिसार आदि में भी लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. पीपल चूर्ण, भुनी हींग, सेंधा नमक के साथ ऊपर से गरम जल पीना चाहिए या रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ शिलाजित्वादि लौह (भै.र.)

रक्त की कमी, मूत्र विकार तथा रक्त की कमी से होने वाली शारीरिक शिथिलता व राजयक्ष्मा से ग्रसित व्यक्ति के लिए यह योग अत्यन्त लाभदायक है इसके प्रयोग से प्रमेह रक्त क्षीणता और उससे उत्पन्न दुर्बलता, खाँसी, उरक्षत, जीर्ण ज्वर, पाण्डु आदि रोगों में विशेष लाभदायक है।

रोगानुसार अनुपान–

रक्त की कमी में आंवला चूर्ण 1 ग्राम मिश्री के साथ दें, राजयक्ष्मा व त्रिदोषज कास खाँसी में मधु व बकरी के दूध के साथ दें, प्रमेह–मधुमेह में त्रिफला चूर्ण 2 ग्राम हल्दी चूर्ण 500 मिग्रा0 के साथ सेवन करायें। रसायन गुण के लिए मुलैठी चूर्ण 1 ग्राम दूध के साथ इसमें शुद्ध शिलाजीत, मुलैठी, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, स्वर्णमाक्षिक भस्म 1–1 भाग लौह भस्म 5 भाग का मिश्रण है।

प्रमुख गुण धर्म व सेवन मात्रा–

रक्त की कमी से होने वाले राजयक्ष्मा की यह प्रसिद्ध और सफल महौषधि है। इसके प्रयोग से रक्त क्षीणता, तज्जनित कृशता, कफ–युक्त खाँसी, उरक्षत जीर्ण ज्वर, पाण्डु आदि रोग दूर होते हैं। शरीर में नया रक्त और नयी शक्ति बढ़ाता है। एक से दो गोली तक दिन में दो बार शहद मिलाकर दूध के साथ लेनी चाहिए। गुण में बकरी का दूध सर्वोत्तम है।

ACE Scanner

वैद्यनाथ शोथारि लौह (भै.र.)

शरीर के किसी भाग में शोथ पैदा होने पर इस औषधि के सेवन से बहुत फायदा होता है। नमक छोड़कर अगर नियमित रूप से इस दवा का व्यवहार किया जाय तो सब प्रकार की सूजन अवश्य नष्ट होती है। 1–2 गोली रोगानुसार 1 ग्रा. घी और 3 ग्रा. मधु मिलाकर चटाना चाहिए।

वैद्यनाथ शोथारि मण्डूर (भै.र.)

किसी भी कारण से शरीर के किसी अंग में या समूचे शरीर में शोथ हो जाने पर इस दवा के सेवन से निश्चित फायदा होता होता है। मण्डूर का मिश्रण होने के कारण यह यकृत की खराबी और पाण्ड रोग के लिए भी लाभदायक है। 1–2 गोली सबह–शम पुनर्नवा रस या गौमूत्र तथा दशमूल के काढ़े के साथ दें।

वैद्यनाथ सप्तामृत लौह (भै.र.)

यह सब प्रकार के नेत्र रोगों की खास दवा है। दृष्टि की कमी, आँखों की लाली, आँखों में खाज, आँखों के आगे अन्धेरा होना आदि रोगों में लाभदायक है। चार से आठ रत्ती सुबह–शाम एक माशा घी और तीन माशे शहद में मिला कर चटावें।

वैद्यनाथ सर्वज्वरहर लौह बृहत् (स्व. यु.) (भै.र.)

ज्वर की हर हालात में इसका उपयोग किया जाता है। जीर्ण ज्वर, सन्ततादि ज्वर, क्षय से उत्पन्न ज्वर, धातुगत ज्वर, काम तथा शोक जन्य ज्वर, भूतावेश जन्य (अभिघात) और अभिचार जन्य ज्वर में लाभकारी है। एक–एक गोली सुबह–शाम पुराना गुड़ और पीपल के महीन चूर्ण के साथ सेवन करें।

वैद्यनाथ सर्वज्वरहर लौह (भै.र.)

इससे वातज, कफज, नये पुराने, सन्निपात, ज्वर, विषम ज्वर, मन्दाग्नि, अतिसार, प्लीहा, यकृत, गुल्म, आमवात, अजीर्ण, ग्रहणी, पाण्डु, शोथ, आदि में लाभ होता है। एक–एक गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ बटी - गोलियाँ

स्वादिष्ट हाजमा करने वाली गोलियाँ भोजन करने के बाद और रोग नाशक गोलियाँ सुबह–शाम उचित अनुपान के साथ लेनी चाहिए। जिन बटियों में कुचला या अफीम हो, उनकी खुराक एक गोली से ज्यादा नही है। स्वादिष्ट बटियाँ बिना अनुपान के भी चूसकर खायी जाती है। मात्रा औषधि के साथ लिखी गई है। बच्चों को उसकी चौथाई मात्रा देनी चाहिये।

वैद्यनाथ अग्नितुण्डी बटी (भैषज्य रत्नावली)

यह हाजमें के लिए प्रसिद्ध है। पेट की वायु को जल्द शमन करती है। दीपन और पाचक है। एक से दो गोली सुबह तथा शाम जल से दें।

PDF Scanner ACE Scanner

वैद्यनाथ अग्निवर्द्धक बटी (आ.सा.सं.)

यह अत्यन्त स्वादिष्ट और पाचक बटी है। इससे भोजन पच कर खूब भूख लगती है। मन्दाग्नि में यह अग्नि को चेतन्य कर भूख को जगाती है। एक से दो गोली सुबह शाम जल से दें।

वैद्यनाथ अर्शोघ्नी बटी (सि.यो.सं.)

कषैले सुपारी आदि, चरपरे लाल मिर्च आदि कड़वे तम्बाकू, कैथफल, खुश्क रूखे भुने सत्तू आदि पदार्थों का अधिक सेवन, कम आहार का सेवन साथ ही बिना पचे पुनः भोजन करना, कच्ची शराब, उपवास बार–बार करने से बिना अभ्यास के व्यायाम करना, चिन्ता शोक और ठण्डी वायु में अधिक रहने से रूखा–सूखा भोजन, रात्रि जागरण अधिक स्त्री प्रसंग, भिन्न–भिन्न जीवों का मासाहार का सेवन आदि करने से अर्श / बबासीर (पाईल्स) रोग की उत्पत्ति होती है। साथ ही एक सहजार्श भी होता है जिसे जन्म से होना कहा जाता है। इस प्रकार अर्श 5 प्रकार का होता है। बैद्यनाथ अर्शोनी वटी अर्श रोग की सभी अवस्था में लाभदायक है। इसमें नीम के फल मिगी (निम्बोली)–त्रिदोषनाशक रोग प्रतिरोधक है।

खून खराबा– रक्तरोधक व शीतल कफ व पित्त दोष नाशक है।

दारू हल्दी घनसत्व (रसौंत)– वात दोषहर जन्तु नाशक रसायन है।

तृणकान्तमणि पिष्टी– अर्क गुलाब पित्तदोष नाशक है।

महानिम्ब (बकायन) मिर्गी– मृदुविरेचक रक्तशोधक है।

सेवन मात्रा एवं प्रमुख गुणधर्म–

यह खूनी और बादी दोनों तरह की बवासीर की उत्तम दवा है। नियमित भोजन से यह । बवासीर को जड़ से मिटा देती है। बढ़े हुए मस्से इसके सेवन से सूख जाते है। 1 से 2 गोली दिन में तीन चार बार मट्ठा या ठण्डे जल से दें।

वैद्यनाथ एलादि बटी (चरक संहिता)

सूखी खाँसी, क्षय की खाँसी, रक्त पित्त मुंह से खून गिरना, बुखार, वमन, मूर्छा, प्यास, जी घबराना, स्वर भेद और पित्त के विकारों में इस बटी से बहुत लाभ होता है। एक से दो गोली मुंह में डालकर दिन भर में 1 से 8 गोली तक चूसना चाहिए।

वैद्यनाथ कंकायन बटी (गुल्म) (भै.र)

सभी प्रकार के गुल्म रोगों की यह प्रसिद्ध और अनुभूत दवा है। कृमि रोग और हृदय के रोगों में इसके सेवन से लाभ होता है। 1 से 3 गोली तक सुबह–शाम अनुपान से दें।

वैद्यनाथ कंकायन बटी (अर्श) (योग चिन्तामणि)

इसमें बड़ी हर व शुद्ध भिलावा की मात्रा अन्य द्रव्यों की अपेक्षा अधिक है। शास्त्रों में बड़ी हरीतकी व शुद्ध भिलावा (मुल्लातक) का विशेष प्रभावकारी प्रभाव बादी बबासीर (अर्श पाईल्स) के लिए वर्णिक किया गया है। कंकायन वटी (अर्श) को छाछ के साथ सेवन करने से बादी बबासीर के मस्सों में विशेष होता है तथा खूनी बबासीर (रक्ताश) जब शौंच के साथ खून (रक्त) आता हो तब इस वटी का प्रयोग भोजन के बाद कुटजारिष्ट के साथ करने से शीघ्र लाभ होता है।

PDF Scanner ACE Scanner

विशेष गुणधर्म व मात्रा–
खूनी और बादी बवासीर की यह बड़ी अच्छा दवा है। इसके सेवन से बवासीर के मस्से सूख जाते हैं और बवासीर में कब्जियत रहने के कारण टट्टी के समय जो तकलीफ होती है वह मिट जाती है अग्निमाद्य, संग्रहणी तथा पाण्डु रोग में इसका अच्छा असर होता है। एक से दो गोली सुबह–शाम छाछ से दें।

बैद्यनाथ कण्ठ सुधारकवटी (र.त.सा.सि.प्र.सं.)

प्रमुख घटक द्रव्य :– पीपल, मुलेठीघन सप्त कपूर आर्ज :–
गुण व उपयोग :– वात पित्तवज कास स्वरभंग (आवाज़ बैठना) कण्ठ/गले के दर्द में उपयोगी 4 से 8 गोली प्रतिदिन चूसने को दें।

बैद्यनाथ खदिरादिबटी (योगरत्नाकर)

इस वटी में वृण/घाव पूरक पित्त (गर्मी) शामक तत्व विषाणु–कीट व कफ (वायरस) नाशक द्रव्य खैर सार कत्था, जावित्री कंकोल, कर्पूर आदि द्रव्यों का मिश्रण है। इस वटी का सेवन स्त्री–पुरूष बाल–वृद्ध सभी के लिए समान लाभदायक है।

विशेष गुण प्रयोग व मात्रा–
मुंह में छाले पड़ना, तथा मुंह के पक जाने पर इस बटी को मुंह में रखकर धीरे–धीरे चूसना चाहिए। स्वरभंग, खाँसी, दन्त तथा ओष्ठ रोग, जिव्हा विकार एवं ताल आदि के रोगों में भी लाभकारी है। 1–1 बटी करके दिन रात में चार पांच बटी चूसना चाहिए।

बैद्यनाथ चंदनादि बटी (सिद्धयोग संग्रह)

खान–पान की अनियमितता, दौड़ धूप तथा शरीर में वात–कफ दोष के कारण पित्त दोष विकृत होने से शरीर में जल की कमी के कारण मूत्र कृच्छ, पेशाब में जलन, मूत्राघात (पेशाब की मात्रा कम होना) आदि लक्षणों के साथ शरीर के पोषक तत्व (कैल्शियम फासफोरस) पेशाब के साथ पहले तो शरीर के बाहर मूत्र में आने लगते हैं और फिर अन्दर ही जमा होकर अश्मरी–पथरी (स्टोन) बन जाती है। बैद्यनाथ चन्दनादि वटी में श्वेत चन्दन छोटी इलायची, आंवला, गोखरू जैसे मूत्रल व शीतल द्रव्यों के साथ–साथ गंधाविरोजासव (सफेद राल) पाषण भेद रसोत एवं कपूर का मिश्रण भी है जो मूत्राशय एवं वृक्क कोष में पथरी नहीं होने देती तथा सम्बन्धित विष विकार (इन्फैक्शन) को मिटा देता है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–
यह पेशाब की जलन, मवाद, सूजाक, मूत्रकृच्छ, कड़क, वेदना, मूत्र मार्ग से मवाद आने लगना, ऐसी अवस्था में इसके प्रयोग से सब उपद्रव दूर होकर पेशाब साफ आता है और गिरता हुआ मवाद रूक जाता है। 2 से 4 गोली दिन में 3–4 बार नारियल जल या ठण्डे जल से दें।

बैद्यनाथ चन्द्रप्रभा बटी (सिद्ध योग संग्रह)

प्रमेह (यूरीनरी डिसोर्डर्स) की सुप्रसिद्ध औषधि चिकित्सा जगत की यह दवा जितनी

ACE Scanner

उपयोगी है, उतनी ही स्वस्थ्य स्त्री/पुरूषों के लिए भी उपयोगी है। इसमें–रक्तवर्धक स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म, बलकारक शुद्ध शिलाजीत एवं रोग प्रतिरोधक अस्थिमज्जा शुक्रदोष व रजोदोष नाशक शुद्ध गुग्गुल, अधिक मात्रा में मिश्री व वंशलोचन, श्वेत चन्दन, पीपल, पीपलामूल, सोंठ, काली मिर्च, चिरायता, गिलोय, अतीस, नागरमोथा, धनिया, त्रिफला, छोटी इलायची, कबाव चीनी, गज पीपल वायविडंग एवं कपूर कचरी जैसे उपयोगी औषधि गुण सम्पन्न द्रव्यों से निर्मित है। यह अनुपान भेद से अनेक रोगनाशक व रोग प्रतिरोध क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाने में उपयोगी है।

बैद्यनाथ चन्द्रप्रभा बटी का विशेष प्रभाव मूत्राशय व वृक्क संस्थान वात वाहिनी व पित्त वाहिनी नाड़ियों पर होता है जिससे यह पुरूषों कों शुक्रदोष, स्वप्नदोष, वीर्य पतला होना, अस्थिरता, शीघ्र पतन आदि तथा स्त्रियों में रजोदोष मासिक धर्म की अनियमितता बार–बार कम समय में गर्भ ठहरना अथवा बांझपन, बंन्ध्यत्व दोष सम्भोग के प्रति उदासीनता आदि दोषों को मिटाती है।

इसका अनुपान–मूत्रदोष में चन्दनासव के साथ मधुमेह में बेलपत्र रस अथवा गिलोय, हरीतकी, अर्क सुदर्शन के साथ बल वृद्धि के लिए दूध के साथ सेवन करें।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

वीर्य–विकार, प्रमेह, सुजाक, आतशक, बहुमूत्र, श्वेत प्रदर, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, अश्मरी, भगन्दर, अण्डवृद्धि, पाण्डु, अर्श, कटिशूल, पेशाब की जलन, मधुमेह, जननेन्द्रिय के विकारों में लाभ करती है। मूत्राशय की सूजन और लिंगेन्द्रिय की कमजोरी दूर करती है। यह बल को बढ़ाती है तथा नवीन शुक्रकीटों को उत्पन्न करती है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम धारोष्ण दूध, गुड़ची काढ़ा, दारू हल्दी का रस, विल्वपत्र रस, गोखरू, काढ़ा या मधु से दें।

बैद्यनाथ चित्रकादि बटी (आ.सां.सं.)

चित्रकादि वटी चित्रकमूल चूर्ण, पीपरामूल, सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, हींग, सेंधा नमक, काला नमक यवक्षार आदि दीपन पाचन द्रव्यों के मिश्रण व नीबूरस, अनार दाना रस के साथ भावित होने से आंव पाचक, बलवर्धक, रूचिकारक गैसनाशक है। आयुर्वेद शास्त्र में इस योग की विशेष प्रशंसा की गयी है। अतिसार (डायरिया) अपच में 1 से 2 गोली छांछ व जल के साथ दिन में दो बार हाजमे के लिए भोजन के बाद 1 से 3 गोली तक, ठण्डे पानी के साथ अजीर्ण अरूचि व वमन में 1–4 गोली चूसना चाहिए प्रतिदिन।

विशेष गुण व उपयोग मात्रा–

आव, पेचिस, मरोड़, संग्रहणी और मन्दाग्नि में यह बहुत लाभदायक है। आमाशय के बिगड़ जाने पर अन्न ठीक से हजम नहीं होता है। खाये हुए पदार्थ का परिपाक न होने से आंव

ACE Scanner

युक्त कच्चा मल दस्त के साथ निकलता है ऐसी हालात में इससे शीघ्र आराम मिलता है। 1 से 3 बटी सुबह–शाम जल से दें।

वैद्यनाथ जातिफलादि बटी (संग्रहणी) (भै.र.)

यह दवा, संग्रहणी, अतिवार, पतले दस्त, आंव, दस्त जाने के समय में पेट दर्द हो ऐसी अवस्था में इसका उपयोग किया जाता है। दिन भर में 1 से 3 गोली मधु के साथ दें।

वैद्यनाथ जातिफलादि बटी (स्तम्भक) (आ.सा.सं.)

उत्तम पौष्टिक औषधियों द्वारा यह बटी बनाई जाती है इसके सेवन से बल वीर्य आदि की वृद्धि होकर पूर्ण स्तम्भन शक्ति पैदा होती हैं। 1 से 2 बटी तक आवशकतानुसार सम्भोग से एक घण्टा पूर्व चीनी मिला हुआ गरम दूध के साथ सेवन करें।

वैद्यनाथ दुग्ध बटी (शोथ) (भै.र.)

शोथ (सूजन) की बीमारी में जब किसी दवा से आराम न होता हो तब दुग्ध बटी का सेवन करना चाहिए। संग्रहणी, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग और विषम ज्वर में भी इससे लाभ होता है। जब तक आराम चाहिए। संग्रहणी, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग और विषम ज्वर में भी इससे लाभ होता है। जब तक आराम न हो तब तक नमक नहीं खाना चाहिए। 1–1 गोली सुबह–शाम दूध के साथ दें या रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ दुग्ध बटी (संग्रहणी) (भै.र.)

यह स्तम्भक, ग्राही, आमपाचक, और शोथघ्न दवा है। आम सम्बन्धी विकास प्रवाहिका, आमाविकार, संग्रहणी में इससे लाभ होता है। आंतों के शोध को दूर करके उनमें ग्राही शक्ति पैदा करती है। 1–1 गोली सुबह–शाम मट्ठा, जल, मधु से दें।

वैद्यनाथ प्रभाकर बटी (भै.र.)

यह हृदय की जलन तथा हृदय की धड़कन को दूर करती है। रक्ताल्पता, कमजोरी, वातवाहिनीहयों की विकृति, सिर में चक्कर आना, आदि में लाभकारी है। 1 से 2 गोली तक दिन में दो बार या आवश्यकतानुसार दें।

वैद्यनाथ प्राणदा गुटिका (भै.र.)

यह वादी, खूनी, प्रकृति दोष आदि के कारण से उत्पन्न हुयी बवासीर की उत्तम औषधि है। पाण्डु, कृमि, गुल्म, पेट, दर्द कास आदि रोगों में इस औषधि से अच्छा लाभ होता है। 1–1 गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ प्लीहारि बटी (भै.र.)

प्लीहा (तिल्ली) के लिए यह अच्छी दवा है। इसके सेवन से पेट की बढ़ी हुई तिल्ली, खाँसी, सूजन तथा मन्दाग्नि, यकृत विकार आदि में लाभकारी है। 1 से 4 गोली दिन में दो बार गरम जल के साथ दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ ब्राह्मी बटी (स्व.मो.के.अ.यु.) (सि.यो.सं.)

यद्यपि आयुर्वेद में ब्राह्मी वटी मानसिक दुर्बल्यता व स्मरण शक्ति की कमजोरी में प्रसिद्ध है। इसके उपयोग से मस्तिष्क ज्ञान वाहिनी नाड़ी (नर्व) को विशेष शक्ति मिलती है। इसलिए ब्राहमी का उपयोग वातदोष, पित्तदोष के प्रकोप में उपयोगी है। इसमें स्वर्ण भस्म होने से रोग प्रतिकार शक्तिवर्धक मोती पिष्टी, कहरवा पिष्टी, प्रवाल पिष्टी होने से पित्तदोष नाशक शीतल व शक्तिवर्धक है। केशर, चन्द्रोदय, माणिक्य भस्म, अकीक पिष्टी, अभ्रक भस्म होने से रक्तवर्धक, रक्तशोधक व वातकफ दोष शामक है। कूठ, वंशलोचन, शंखपुष्पी, काला जीरा, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची व पीप्पली का मिश्रण होने से दीपन पाचन व मूत्रशोधक गुणकारक हैं। इस प्रकार सर्वगुण सम्पन्न यह ब्राहमी वटी (स्व०मो0अं0 युक्त) सन्निपात त्रिदोष ज्वर मियादी बुखार (मंथरक ज्वर) टाइफाइड व मसूरिका ज्वर रोमान्तिका (मीजल्स सीजनल फीवर) में स्त्री–पुरुष, बाल–वृद्ध सभी आयु वर्ग के मनुष्यों के लिये उपयोगी है।

विशेष गुण व अनुपान मात्रा–

स्नायुविक दुर्बलता, को दूर करने तथा स्मरण शक्ति और बुद्धि बढ़ाने के लिए ब्रह्मी बटी सर्वश्रेष्ठ है। दिमाग की कमजोरी, हृदय की दुर्बलता, अनिद्रा, हिस्टीरिया, मूर्छा, पागलपन, स्मरण शक्ति का अभाव, मोतीझरा, मियादी, बुखार में अच्छा लाभ करती है। 1–1 गोली आवश्यकतानुसार मक्खन मलाई, दूध अथवा रोगानुसार अनुपान दें।

बैद्यनाथ ब्राह्मी बटी (बुद्धिवर्द्धक) (आयु.सा.सं.)

बैद्यनाथ ब्राह्मी वटी (बुद्धिवर्धक) का जैसा नाम इसी प्रकार गुण व उपयोग कर्ताओं के लिए विशेष तौर से निर्मित की गयी है। वृद्धि व दिमागी कार्य करने वाले जैसे विद्यार्थी अध यापक, आफीसर, न्यायाधीश, विजनिस मैन, चिकित्सक वकील (वेरिस्टर) चित्रकार आदि लोगों के लिए बैद्यनाथ ब्राह्मी बटी विशेष उपयोगी है। इसमें हरद्वारी ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी) शंखपुष्पी, वच, जटामांसी, कालीमिर्च, गाजवा, स्वर्ण माक्षिक भस्म व रस सिन्दूर का मिश्रण है। इसे 1 से 2 गोली प्रतिदिन बच्चों को आधी मात्रा, गुलकन्द, बीजरहित मुनक्का, द्राक्षावलेह, शंखपुष्पी सीरप, आंवला का मुरब्बा दूध, जल आदि आयु के अनुसार अनुपात से सेवन करावें। स्मरण (याददाश्त), शक्ति और बुद्धी चातुर्य के लिए इसका विशेष उपयोग होता है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

स्मरण शक्ति और बुद्धि की वृद्धि में यह सर्वश्रेष्ठ है जो लोग दिमागी काम करते हैं उनके लिए यह बटी विशेष लाभदायक है। 1 से 2 बटी प्रतिदिन दें।

बैद्यनाथ मकरध्वज बटी (आ.सा.सं.)

यह दिल दिमाग, पुष्टिकारक, शीघ्रपतन, नाशक, स्तम्भक, शक्तिवर्द्धक, एवं नपुसंकता, नामर्दी को मिटाकर बल वीर्य, बढ़ाने में श्रेष्ठ है। बाजीकरण के लिए इसका प्रयोग उत्तम है।

PDF Scanner ACE Scanner

1–1 गोली मक्खन, मिश्री, मलाई अथवा पान के रस और मधु के साथ ऊपर से गुनगुना दूध पीना चाहिए।

वैद्यनाथ मरिच्यादिबटी (शारंगधर संहिता)

यह खाँसी की बहुत मशहूर दवा है। इसके सूखी और गीली दोनों तरह की खाँसी में फायदा होता है। स्वरभंग, गले की खराबी और सर्दी, जुकाम में अच्छा लाभ करती है। चूसने के लिए।

वैद्यनाथ महाशंख बटी (भै.र.)

मन्दाग्नि (भूख की कमी) की समस्त शिकायतों को दूर कर यह जठराग्नि–पाचन शक्ति को प्रदीप्त करती है और अजीर्ण (अपच) से उत्पन्न विकार मिटता है। इस महाशंख वटी के सेवन से भूख खुलकर लगती है और असमय अथवा अधिक गरिष्ठ / भारी भोजन कर लेने पर जो अचानक अजीर्ण हो जाता है उसे मिटाने की यह उत्तम पाचक है। इसके सेवन से उदरकृमि (पेट की कृमी) विवन्ध (कब्ज) और पेट फूलने (अफरा) जैसी शिकायतें मिट जाती हैं।

प्रमुख गुण धर्म व अनुपान मात्रा–

अजीर्ण और वायु के कारण उत्पन्न हुऐ पेट दर्द और परिणाम शूल की यह राम बाण दवा है। मदाग्नि आलस्य अरूचि आदि शिकायतें मिटती हैं। 1 से 2 गोली तक गरम जल नींबू रस, छाछ / मट्ठा या अजवायन अर्क के साथ दें।

वैद्यनाथ मुक्तादि बटी (स्व.मो.के.गो.युक्त) (सि.यो.सं.)

बालकों का जीर्णज्वर, बाल शोष (सूखा), पाण्डु, दूध न पचकर दस्त या उल्टी होना, खाँसी आदि में लाभकारी है। आधी से एक गोली तक गाय या माता के दूध से दें।

वैद्यनाथ मेहमुद्गर बटी (भै.र.)

इससे बीसों प्रकार के प्रमेह अच्छे होते हैं। टंट्टी या पेशाब के मार्ग में वीर्य जाना, स्वप्न दोष, मूत्रकृच्छ, जलन और तकलीफ के साथ रूक–रूक कर पेशाब जाना आदि में लाभकारी है।

एक–एक गोली सुबह–शाम बकरी के दूध या ताजे जल के साथ दें।

वैद्यनाथ रज:प्रवर्तिनी बटी (आ.सा.सं.)

स्त्रियों के रजोदोष–मासिक धर्म की अचूक व निर्दोष दवा है। इसमें सोयाबीज, उलट कम्बल, घनसत्व गाजर बीज एवं टंकण भस्म, काशीष भस्म, कुमारी–ग्वारपाठा (मुसब्बार) शुद्ध हींग से शास्त्रोक्त विधि से निर्मित किया गया है।

प्रमुख गुणधर्म एवं अनुपान मात्रा–

स्त्रियों के मासिक धर्म रूक जाने पर कमर व पेडू में दर्द होना, हाथ पैर के तलुओं और आँखों में जलन, ज्वर की सी हालत होना, यह दवा मासिक धर्म को खोलने की मुफीद दवा है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम मासिक धर्म होने के समय से 5–6 दिन पहले गरम जल के साथ अथवा कुमारी आसव 15 मिली. (3 चम्मच) बार–बार जल के साथ दें।

ACE Scanner

बैद्यनाथ राजबटी (गन्धक बटी) (योग चिन्तामणि)

अजीर्ण, पेट दर्द, पेट में वायु का जमा होना, आंव की शिकायत, कब्जियत, रक्त विकार, अम्लपित्त, आदि में गुणकारी है। 1 से 2 गोली दिन में, रात में 4 से 5 गोली तक जल के साथ दें।

बैद्यनाथ लवंगादि बटी (वैद्यजीवन)

यह सूखी और गीली सभी तरह की खाँसी व मुंह के छाले में अच्छा लाभ होता है। बैद्यनाथ लशुनादि बटी (वैद्य जीवन) यह पेट की वायु के लिए उत्तम दवा है, मन्दाग्नि, अजीर्ण, विसुचिका (हेजा) पेट दर्द, डकारें आना आदि में लाभकारी है। 3 से 4 गोली तक दिन रात में चूसना अथवा गर्म जल से सेवन करना चाहिए।

बैद्यनाथ वृद्धिवाधिकाबटी (भाव प्रकाश)

यह नये पुराने सब प्रकार के साध्य–असाध्य अण्ड–वृद्धि रोग को दूर करती है। आन्त्रवृद्धि (हार्निया) में भी इस बटी से लाभ होता है। अण्डकोष में वायु का भरना, दर्द होना, जल भरना आदि में लाभकारी है। एक से दो गोली दिन में दो बार ताजे जल से दें।

बैद्यनाथ व्योषादि बटी (शारंगधर संहिता)

यह सब प्रकार की सूखी एवं तर खाँसी की उत्तम दवा है। सर्दी, जुकाम, खाँसी, श्वास, स्वरभंग, आदि में इससे अत्यन्त लाभ होता है। 1 से 2 गोली दिन में 2–3 बार गर्म जल से या केवल चूसना चाहिए।

बैद्यनाथ शंख बटी (भै.र.)

शंखवटी का विशेष प्रभाव (असर) आमाशय, ग्रहणी, क्षुद्राज (छोटी आंत) और बृहदान्त्र (बड़ी आंत) पर होता है। यह वटी वात–कफ दोष दूध (विकार) को दूरकर अफरा–अजीर्ण व लगातार विवन्ध (कब्ज) से होने वाले अन्त्र पुच्छ ग्रहणी (छोटी आंत और बड़ी आंत के जोड़ स्थान) भयंकर त्रासदायक शूल (दर्द) को दूर करती है। इस प्रकार उदरशूल (पेट दर्द) कब्ज व अफरा–पेट में अधिक गैस से उत्पन्न घबराहट को बैद्यनाथ शंखवटी दूर करती है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

यह अजीर्ण, वायु, गुल्म, शूल, मन्दाग्नि, उदर शूल आदि में लाभकारी है। जठराग्नि, को प्रदीप्त कर मन्दाग्नि को नष्ट करती है तथा भूख खुलकर लगती है एवं भोजन का परिपाक अच्छी तरह होता है। 1 से 2 गोली भोजन के बाद चूसे या गर्म जल से लें।

बैद्यनाथ शिलाजित्वादिबटी (स्वर्ण युक्त) (भै.र.)

शुद्ध शिलाजीत, स्वर्ण, अभ्रक, लौह आदि भस्मों के योग से बनी है। इससे प्रमेह, वीर्य की क्षीणता, इन्द्रिय शिथिलता, स्वप्न दोष, स्नायुविक दुर्बलता आदि में लाभकारी है। एक एक गोली सुबह–शाम दूध या रोगानुसार अनुपान से दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ शिलाजित्वादि बटी (सा.) (भै.र.)

यह शिलाजित्वादि बटी स्वर्ण युक्त से गुणों से कुछ न्यून है वैसे मात्रा उपरोक्त अनुसार ही है।

बैद्यनाथ शुक्रमातृकाबटी (भै.र.)

इसके सेवन से वीर्य स्राव, सब प्रकार के वातज, पित्तज, तथा कफज, प्रमेह, स्वप्न दोष, मूत्रकृच्छ, अश्मरी आदि रोग दूर कर वीर्य शुद्ध और गाढ़ा होता है। एक से दो गोली दिन में दो बार बकरी के दूध या मीठे अनार रस के साथ दें।

बैद्यनाथ शुलवर्जिनी बटी (भै.र.)

यह शूल की मशहूर दवा है। इससे आठ प्रकार के शूल नष्ट होते हैं। प्लीहा, गुल्म, मन्दाग्नि, आदि उदर रोगों के लिए भी यह फायदे मन्द है। आमवात, पाण्डु, कामला, और शोथ रोग में भी अच्छा फायदा करती है। 1 से 2 गोली तक सुबह--शाम अजवायन अर्क या गर्म जल से दें।

बैद्यनाथ संजीवनी बटी (शारंगधर संहिता)

आयुर्वेद मानक ग्रन्थों में संजीवनी वटी के गुण व उपयोग के लिए एक सूत्र मिलता है कि "वटी संज्जवनी नाम्ना जीर्ण ज्वर विनाशिनी" कि संजीवनी वटी अजीर्ण (अपच) एवं सभी प्रकार के ज्वर अजीर्ण ज्वर, सन्निपात ज्वर, कफ–वात प्रधानज्वर (बुखार–फीवर) में उपयोगी है किन्तु अनुपान भेद से संजीवनी बटी अनेक रोगावस्था में विशेष लाभदायक है। जैसे अजीर्ण व अजीर्ण से उत्पन्न कफवात ज्वर में अदरख रस व मधु के अनुपान से सन्निपात (त्रिदोषज) ज्वर में 3 से 7 लवंग सिद्ध जल के साथ अथवा 10 से 20 ब्राह्मी पत्ती के रस एवं शंखपुष्पी सीरप के साथ भी लिया जा सकता है। ज्वर के साथ अतिसार (डायरिया) पतले दस्त हों तो 500 मिग्रा0 जायफल जल में घिसकर अथवा कुटजारिष्ट एवं इसब्बेल हर्बल 3 ग्राम जल के साथ दें। उल्टी, वमन किसी कारण हो रहा हो तो अर्क पुदीना पर्ल अग्निमुख चूर्ण गर्म जल के साथ दें।

विसूची रोग (हैजा / कालरा) में रोग का बेग तेज होने पर एक–एक घण्टे के अन्तर से 1 – 1 गोली पुदीना अथवा पुदीना पर्ल जल के साथ अथवा प्याज के रस के साथ व जल मिलाकर देना चाहिए। इसमें वायविडंग, सोंठ, पीपल, त्रिफला वच, गिलोय शोधित भिलावा एवं शोधित वत्सनाभ प्रमुख औषधि द्रव्य है। अतएव इसके सेवन से पसीना तथा पेशाब के द्वारा ज्वर–विष शरीर के बाहर निकल जाता है। संजीवनी वटी के सेवन से सर्प विष का वेग भी नष्ट होता है। सर्प विष में 3–3 गोली दो–दो घण्टे के अन्तर से शास्त्रों में निर्दोष है।

सेवन मात्रा व विशेष गुणधर्म–

यह अजीर्ण, विसूचिका (हैजा) की प्रारम्भिक, अवस्था में बड़ा अच्छा प्रभाव दिखलाती है। गुल्म, सन्निपात, ज्वर, पेट में वायु का संचय, पेट दर्द, पतले दस्त, हाथ–पेरों की ऐंठन आदि में भी लाभकारी है। 1 से 4 गोली तक सुबह–शाम अदरक रस या लौंग के ओंटाये

PDF Scanner ACE Scanner

हुए जल से दें।

बैद्यनाथ संशमनी बटी (सि.यो.सं.)

धातुक्षीणता, सभी तरह की कमजोरी, पाण्डु रोग, हृदय के रोग और पुराने बुखारे के बाद की निर्बलता में अच्छा लाभ होता है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम दिन में दो बार दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ सर्पगन्धाघन बटी (सिद्ध योग संग्रह)

इस बटी के सेवन से उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) के कारण अनिद्रा (नींद न आना) तथा उन्माद (पागलपन), चित्तभ्रम को दूर कर मस्तिष्क–स्नायु मण्डल की वात वाहिनी व रक्त वाहिनी शिराओं की उत्तेजना को कम कर अच्छी नींद आती है और थकान मिटती है। सर्पगंधा–खुरासानी अजवायन, पीपलामूल, जटामांसी आदि का घनसत्व विशेष के कारण यह द्रव्य गुण विशेष है, किसी को इसके सेवन से पसीना विशेष होता है। अतः इसका अनुपान दूध अथवा शंखपुष्पी सीरप सर्वश्रेष्ठ है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

अनिद्रा, अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) उन्माद, अपस्मार, आदि में इस बटी का प्रयोग अत्यन्त लाभदायक है। इसके सेवन से नींद अच्छी तरह आती है। 2 से 3 गोली आवश्यकतानुसार या रात्रि में सोने के समय दूध या जल के साथ दें।

बैद्यनाथ सारिवादि बटी (भै.र.)

यह बटी कान के बहने, कान गूंजने, कम सुनाई देने, कान में दर्द, धमनी, विकार हृदय दौर्बल्य आदि रोगों की उत्तम दवा है। एक से दो गोली दिन में दो बार । धारोष्ण दूध, चन्दन अर्क अथवा शतावरी क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ क्षुधाकारीबटी (आ.सा.स.)

ये बटियां भूख जगाने वाली आयुर्वेदीय औषधियों से तैयार की गई है। भोजन के बाद 1 से 2 गोली चूसने से चित्त प्रसन्न हो जाता है। जी मिचलाना, मुंह का स्वाद खराब होना, कब्जियत अपचन, अरूचि आदि में लाभकारी है। 1 से 2 गोली करके दिन में 2 से चार गोली तक चूसना चाहिए।

बैद्यनाथ पर्पटी

रसायन कल्प में पर्पटी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। जब अन्य चिकित्सा से लाभ नहीं होता है तब इस कल्प से आशाजनक लाभ होता है। परन्तु पर्पटी कल्प से तभी पूर्ण लाभ निश्चित है जब तक संस्कारित शुद्ध पारद और विशेष गन्धक द्वारा शास्त्रीय विधि से बनाई गई हो। बैद्यनाथ निर्माण में विशुद्धता का खास ध्यान रखकर पर्पटियां तैयार की जाती हैं। अतः इनसे पूर्ण लाभ निश्चित है।

बैद्यनाथ पंचामृत पर्पटी (भै.र.)

संग्रहणी, अतिसार, पाण्डु, अरूचि, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, शूल, दमा, कमजोरी, मन्दज्वर, यक्ष्मा (थाइमिस), आदि में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 375 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ विजय पर्पटी (स्व.मो.यु.) (भै.र.)

ग्रहणी, अतिसार, यक्ष्मा, विषमज्वर, प्लीहा, जलोदर, शोथ, परिणाम, अम्लपित्त, हृदयरोग आदि की सर्वोत्कृष्ट महौषधि है। 125 मिग्रा. से 250 मिग्रा. दिन में 2 से 3 बार रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ बोल पर्पटी (रसराज सुन्दर)

रक्त प्रदर, रक्त, पित्त, खूनी बवासीर और खून के प्रवाह के समय इसका उपयोग करना चाहिए। 500 मिग्रा. से 750 मिग्रा. तक 2 से 4 बार तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ रस पर्पटी (भै.र.)

मन्दाग्नि, संग्रहणी, रक्ताल्पता, जीर्ण, अतिसार, पाण्डु, अर्श तथा पेट के विकारों, यकृत विकारों, में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से 375 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ लौह पर्पटी (भै.र.)

रसायनकल्प में पर्पटी कल्पना (निर्माण विधि) बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। पर्पटी कल्प विशेषकर अन्त्रिक विकार–अतिसार संग्रहणी आदि में जब किसी दवा से लाभ नहीं होता तो तब पर्पटी कल्प से आशाजनक लाभ होता है। पर्पटी (पपड़ी–औषधि पापड़) कल्प कज्जली योग (शुद्ध पारद–शुद्ध गन्धक का मिश्रण) के साथ सम्बन्धित द्रव्य को घी व अग्नि संयोग में गलाकर गीली मिट्टी अथवा गोबर के ऊपर रखे केले के पत्ते पर डालकर पपड़ी जैसी बनने पर इसे पर्पटी कहा जाता है और सेवन करने के लिए खरल में घोंटकर दी जाती है। बैद्यनाथ लौह पर्पटी मन्दाग्नि पाण्डु रक्ताल्पता, यकृत दोषहारी संग्रहणी, आंव पेचिस, लौह पर्पटी विशेषकर लौहतत्व रक्त–वर्तुली (हिमोग्लोविन) की कमी के कारण उत्पन्न शोथ (सूजन) में यकृत वृद्धि, पाण्डु कामला को दूर कर रक्त वृद्धि करती है।

अनुपान – जीरा चूर्ण 500 मिग्रा0 छाछ, बकरी या गाय के दूध अथवा अनार रस, शंखभस्म व शुद्ध हींग 125 मिग्रा0 के साथ दें।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

संग्रहणी, अम्लपित्त, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, यकृत की बीमारियों, खून की कमी, आंव, पुराने अतिसार आदि में लाभकारी है। 125 मिग्रा. से आरम्भ करके रोगी की अवस्था अनुसार 5–7 दिन के अन्तर से बढ़ाते हुए 750 मिग्रा. तक रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ श्वेत पर्पटी (सि.यो.सं.)

सुजाक, मूत्रकृच्छ, हैजे, पेशाब रूक जाने पर जलन होने पर बहुत उपयोगी है। 3 से 6 ग्राम तक कच्चे नारियल का पानी या दुध, दही, लस्सी, जल आदि से दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ स्वर्ण पर्पटी (योगरत्नाकर)

इसमें स्वर्णभस्म व कज्जली (शोधित पारद–गन्धक) का रसायनिक संस्कार होता है। इस पर्पटी में स्वर्णभस्म के सम्पूर्ण गुणधर्म विशेष होने से यह पाचक, दीपक, योगवाही (जिस द्रव्य में मिला लिया उसके गुणों में वृद्धि करने वाला) जन्तु नाशक, त्रिदोष विकार नाशक, बल–वीर्य सप्त धातु वर्धक, अतिसार, आंव पेचिस संग्रहणी (स्प्र) आंर्तक्षय राजयक्ष्मा तपेदिक (टी0बी0) नाशक, रसायन व बाजीकरण वर्धक सर्वरोग नाशक, ओज व तेजस्विता उत्पन्न कर मनुष्य शरीर को नीरोग करने में अद्वितीय है। स्वर्ण पर्पटी सुपाच्य होने से नष्ट हुए रक्त सेल पुनः जीवित होते हुए शोणित वर्तुली (हिमोग्लोविन) की वृद्धिकर शरीर में नई स्फूर्ति लाकर आरोग्य प्रदान करती है।

स्वर्ण पर्पटी के विशेष गुणधर्म व मात्रा–

यह पाचक, दीपक, रस–रक्तादि, धातुबर्द्धक, त्रिदोष नाशक, बल–वीर्य वर्धक, संग्रहणी, अस्थिक्षय आदि रोगों में लाभकारी है। 1 से 3 रत्ती सुबह– शाम मधु से दें। ऊपर से दूध पिला दें। सब पर्पटियों के सेवन के समय आहार बिहार की बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। जरा सी असावधानी भारी अनर्थ कर देती है अगर पर्पटी सेवन काल में दस्त, वमन, दहा, जलन, शरीर में पीड़ा झनझनाहट आदि उपद्रव पैदा हो जाय तो कच्चे नारियल का पानी या दूध पिलाना चाहिए।

बैद्यनाथ गुग्गुलु

आयुवेद शास्त्र में गुग्गुलु का बड़ा महत्व है। सभी प्रकार के वायु रोगों में इसका विशेष प्रयोग होता है। लेकिन इससे पूर्ण लाभ तभी सम्भव है जबकि वह उत्तम गुग्गुलु का शास्त्रोक्त विधि से भली भांति शोधन कर लक्ष कुटाई के बाद तैयार किया गया हो, बाजारू, सड़े–गले और सस्ते गुग्गुलु द्वारा बनाई जाने वाली दवाओं में वांछित शक्ति नहीं पाई जाती है। बैद्यनाथ औषधियाँ उत्तमोत्तम गुग्गुलु द्वारा शास्त्रोक्त विधि से तैयार की जाती हैं जिनसे पूर्ण लाभ निश्चित है।

बैद्यनाथ कांचनार गुग्गुलु (योगरत्नाकर)

इस औषधि का उपयोग अपची (रसोली) ग्रंथी (मांस की शरीर में गांठ) भी कहते हैं। किसी–किसी के गले और नाक के अन्दर भी मांस की गांठ बढ़ने लगती है तो किसी को पेट में गुल्म (ट्यूमर) यही स्थिति भगन्दर (फिस्टूला) रोग की भी होती है। अतः शरीर में किसी भी प्रकार की गांठ या कण्ठमाला/गलगन्ड (थायराइड) तथा गल रोहिणी वृण विकार में बैद्यनाथ कांचनार गुग्गुल से लाभ होता है। यह श्लेमिक झिल्लियों पर अपना क्रिमिनाशक प्रभावकारी है। यह सभी ओलियोरिन्स की तरह इसमें पड़ा शुद्ध गुग्गुल रक्त के श्वेताणुओं (डब्लू०बी०सी०) को और फोगोसायटोसिस नामक कोषाणुओं (सेलों) को बढ़ाता है। गुदा और श्रोनिक झिल्लियों को उत्तेजित करता है। इस दवा के सेवन काल में उत्पन्न गांठ में दशांगलेप अथवा बाज ककोड़े की जड़ का लेप काजी के साथ करने से

ACE Scanner

शीघ्र लाभ होता है। गुग्गुल व रसोंत का लेप भी लाभ करता है। गलगण्ड, गंडमाला (गले में कण्ठबेल होना) अपची, अर्बुद, भगन्दर, आदि बीमारियों में अच्छा लाभ होता है। 1–1 गोली सुबह–शाम रोगानुसार अनुपान से दें। विशेष लाभ के लिए खदिराष्टि व 30 मिग्रा. स्वर्ण मात्रा के साथ दें।

बैद्यनाथ कैशोर गुग्गुलु (शारंगधर संहिता)

इसके निरन्तर उपयोग से वात–वायु और रक्त विकार सम्बन्धी रोग नष्ट हो जाते हैं। विशेषकर वातरक्त (गाउट) रोग की यह प्रमुख औषधि है। इसके सेवन काल में विशेष पथ्य परहेज भी नहीं करना पड़ता और समय सीमा का भी प्रतिबन्ध नहीं है।

रोगानुसार अनुपान–

विवन्ध (कब्ज) में 10 मिली0 एरण्ड तैल एवं दूध के साथ, रक्त विकार व चर्मरोग, कुष्ट, एग्जिमा में खादिरारिष्ट, सारिवाधासव 10 से 15 मिली0 बराबर जल के साथ गुल्म, सूजन व वात रोगों में दशमूल काढ़ा, महारास्नादि काढ़ा 15 से 20 मिली0 बराबर जल के साथ प्रदाह जलन व दर्द में शीतल जल अथवा गाय के दूध व घी के साथ दें।

विशेष गुणधर्म व सेवन मात्रा–

वातरक्त, खून की खराबी से शरीर में फोड़ा या चकत्ते होना, कुष्ठ, प्रमेह, पिडिका, पाण्डु, प्रदाह, गुल्म, सूजन और वात रोगों में लाभदायक है। एक से दो गोली सुबह–शाम रोगानुसर अनुपान से दें।

बैद्यनाथ गोक्षुरादि गुग्गुलु (सि.यो.सं.)

प्रमेह, मूत्रकच्छ, मूत्राघात, पथरी, प्रदर रोग, वातरक्त, शुक्रदोष आदि में लाभकारी है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम दूध या गोखरू क्वाथ से दें।

बैद्यनाथ त्रयोदशांग गुग्गुलु (भाव प्रकाश)

33 औषधि द्रव्यों से निर्मित यह योग वात प्रधान विकार नाशक है इसलिए इसका सेवन वातनाशक अनुपान, दशमूल काढ़ा महारास्नादि काढ़ा 10–30 मिली0 बराबर जल के साथ अथवा दूध एवं गर्म जल से देने से भी लाभ होता है।

विशेष गुणधर्म एवं मात्रा–

वात शूल गठिया, पक्षाघात, लकवा, गृधसी, वात, अस्थि, सन्धि व मज्जागत रोगों में लाभकारी है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम गरम जल या उपरोक्त रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ त्रिफला गुग्गुलु (शारगंधर संहिता)

भगन्दर, गुल्म, बवासीर, भगन्दर, पुराना कब्ज, आदि में विशेष लाभ होता है। एक से दो गोली सुबह–शाम त्रिफला काढ़े के साथ दें।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि गुग्गुलु (भै.र.)

इसके सेवन से सब प्रकार के शोध, उदर रोग, पाण्डु, स्थूलता, कफ विकार, आदि में अच्छा लाभ होता है। एक से तीन गोली तक बच्चों को आधी गोली रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ महायोगराज गुग्गुलु (आ.सा.सं.)

यह योग 25 वनौषधि (जड़ी–बूटी) एवं शोधित गुग्गुल त्रिफला गिलोय क्वाथ से वंग भस्म, अभ्रक भस्म, रस सिन्दूर आदि शास्त्रोक्त योगों से निर्मित आयुर्वेद जगत का सुप्रसिद्ध वातरोग एवं त्रिदोषज रोग नाशक योग है। यह आमवात, संधिवात के अतिरिक्त 80 प्रकार के वातरोग, 40 प्रकार के पित्तदोषज विकार व 20 प्रकार के कफज, चर्मरोग नाशक होता है। अनुपान भेद से यह त्रिदोषज रोगनाशक है।

अनुपान– समस्त वात विकार में महारास्नादि क्वाथ में वातरक्त (गाउट) में गिलोय क्वाथ अथवा अमृतारिष्ट के साथ दें।

पित्त प्रधान रोगों में–

वासा, लाल चन्दन नेत्रवाला, चन्दनासव, कुटजारिष्ट 1 ग्राम व जीवन ऋषभक अथवा काकोली क्वाथ, दूध अथवा जल त्रिफला चूर्ण एवं क्वाथ से दें।

कफज व चर्मरोगों में–

सोंठ, मिर्च, पीपल, नीम छाल पुष्पकर मूल, पीपला मूल क्वाथ अथवा अर्क अजवायन के साथ सेवन करावें।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

त्रिदोषघ्न, आमवात, अपस्मार, सन्धिवात, वातरक्त, उदावर्त, मेद–वृद्धि, हृदय के धड़कने, मन्दाग्नि श्वास, खाँसी, वीर्य–दोष, रजोदोष, शोथ, पाण्डु, कामला, कुष्ठ रोगों में लाभकारी है।

1 से 2 गोली सुबह–शाम उपरोक्त रोगानुसार अनुपान से दें।

वैद्यनाथ योगराज गुग्गुलु (आ.सा.सं.)

योगराज गुग्गुल योग में कुल 29 औषधि जड़ी–बूटियों का शास्त्रोक्त विधि मिश्रण है। इसमें अभ्रक भस्म एवं रस सिन्दूर आदि कूपीपक्व रसायन नहीं है किन्तु त्रिदोषनाशक सम्पूर्ण वातरोग नाशक तथा मेदोवृद्धि (मोटापा) करने की वनस्पति/जड़ी–बूटी (हर्बल) है।

शोधित गुग्गुल में भेद (चर्बी/फैट) कम करने का नैसर्गिक गुण प्रभाव है।

रोगानुसार अनुपान –

वात रोगों में दशमूल व महारास्नादि क्वाथ से दें, उदर विकार में पुनर्नवारिष्ट के साथ दें। मोटापा कम करने के लिए मधु व जल के साथ दें।

सेवन मात्रा व प्रमुख गुणधर्म–

वात विकारों, आम वात, गठिया, वातरक्त, भगन्दर, जननेन्द्रिय विकार, कास, श्वास, धातुक्षीणता, बहुमूत्र, प्रमेह, अर्श, शिरो रोग आदि में लाभकारी है। 1 से 2 गोली रोगानुसार अनुपान से दें।

बैद्यनाथ रास्नादिगुग्गुलु (योग रत्नाकर)

गृधसी, आमवात, गठिया, संधिवात, कर्ण रोग, शिरोरोग, नाडीव्रण, नासूर, भगन्दर आदि में गुणकारी है। एक से दो गोली सुबह–शाम दशमूल या रास्नादि क्वाथ अथवा गर्म जल से दें।

बैद्यनाथ लाक्षादिगुग्गुलु (भै.र.)

अस्थि (हड्डी) के विकारों की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि हैं इसके सेवन से शरीर के किसी भाग की हड्डी में चोट लगने, दर्द होने, टूट जाने आदि में बहुत फायदा होता है। 1 से 2 गोली सुबह शाम अर्जुन छाल के काढ़े के साथ या दूध से दें।

बैद्यनाथ सप्तविंशति गुग्गुलु (भै.र.)

इसके सेवन से भगंदर, बवासीर, नाड़ीव्रण, दुष्ट व्रण आदि में विशेष फायदा होता है। इसके साथ ही हृदय, पसली के दर्द, गुदामार्ग और मूत्रनली के विकार में बहुत फायदा मिलता है। मात्रा–1 से 3 टैब गोली सुबह शाम दिन में दो बार मधु व गुनगुने जल से ले।

बैद्यनाथ सिंहनाद गुग्गुलु (आ. सा. सं.)

वातरक्त, गुल्म, शूल, उदर रोग, कुष्ठ, आमवात, असमय में बालों का पकना, गिरना आदि में लाभदायक है। 1 से 2 गोली सुबह–शाम गर्म जल या दूध के साथ देना चाहिए।

बैद्यनाथ स्वर्ण महायोगराज गुग्गुलु (अनुभूत)

योगराज गुग्गुल त्रिदोष नाशक माना जाता है और इस योग (कल्प) में स्वर्णभस्म का मिश्रण होने से योगवाही गुण प्रधान हो जाता है। योगवाही वह द्रव्य होता है जिसमें उसका प्रयोग या मिश्रण किया जाए उसका गुणवर्धन करना है। "स्वर्ण महायोगराज गुग्गुल" में गूगल, त्रिफला, महायोगराज गुग्गुल का मिश्रण कर स्वर्णभस्म के साथ कल्प बनाया गया है। इसलिए यह योग सर्वश्रेष्ठ, गुणकारक साधारण योगराज गुग्गुल से कई गुना लाभप्रद व रोग प्रतिकार शक्ति (यूमिनिटी पावर) की वृद्धि करता है।

गुणधर्म व उपयोग–

स्वर्ण महायोगराज गुग्गुल समस्त वात व्याधि, आमवात, संधिवात, गृधसी अस्थिगतवात, पक्षाघात, अर्दित वातरक्त आदि जटिल वातरोगों व औपसर्गिक रसरक्तादि त्रिदोष विकार रोगों का शमन कर, रोग प्रतिरोधक बलवर्धक (युमिनिटी पावर) रसायनगुण कारक है।

सेवन मात्रा–

सभी वात रोग आमवात, गठिया, पक्षाघात, धनुर्वात आदि समस्त वातवेदनाओं की तथा स्नायु दौर्बल्य की अनुभूत दवा है। बड़ों को 1 से 2 टेबलेट तक दिन में दो बार महारास्नादि काढ़ा या दूध के साथ बच्चों की अवस्था अनुसार वैद्य की सलाह से दें।

बैद्यनाथ चूर्ण

काष्ठौषधियों (जड़ी बूटियों) को सुखाकर तथा महीन कूटकर चूर्ण बनाये जाते हैं। इसलिए अच्छी ताजी और असली जड़ी–बूटियों और उनकी कुटाई की उत्तम व्यवस्था और निगरानी पर ही गुण निर्भर रहता है। हमारे यहाँ पहाडों और जंगलों से ताजी और असली

PDF Scanner ACE Scanner

जड़ी बूटियाँ प्राप्त की जाती है। हमारे बैद्यनाथ कारखाने में चूर्ण अच्छी सीलबंद शीशियों में पैक होने के कारण वे बहुत दिन तक खराब नहीं होते हैं।

बैद्यनाथ अग्निमुख चूर्ण (आ.सा.सं.)

यह चूर्ण अत्यन्त स्वादिष्ट और दीपन पाचक है। इसके प्रयोग से खट्टी डकारे आना, जी मिचलाना, मुंह में पानी भर जाना, भूख न लगना, अरूचि, उदरशूल, मन्दाग्नि आदि में लाभकारी है। 2 से 4 मार्श (ग्राम) तक भोजन के बाद सुबह–शाम जल के साथ दें।

बैद्यनाथ अविपत्तिकर चूर्ण (भै.र.)

यह अम्लपित्त और उसके कारण होने वाले लक्षणों में सर्वोत्तम चूर्ण है। इसके छाती और गले की जलन, मुंह में खट्टा पानी, वमन, कब्जियत, रोग दूर होते है। 3 ग्राम से 6 ग्राम जल या दूध से भोजन के तत्काल बाद दें।

बैद्यनाथ अश्वगन्धादिचूर्ण (शा.सं.)

वीर्य को पुष्ट करता है। शक्ति देता है और मस्तिष्क को शान्ति देता है। वीर्य विकार नाशक और शरीर को पुष्ट बनाता है। 3 ग्राम से 6 ग्राम तक दूध से एक दो बार दें।

बैद्यनाथ बिल्वादि चूर्ण (चक्रदत्त)

यह चूर्ण उत्तम पाचन और ग्राही हैं अतिसार पेचिया, मरोड़ के साथ आंव और रक्तमिश्रित दस्त आना आदि में लाभकारी है। 1 से 3 मार्श (ग्राम) तक दिन में 3 बार शीतल जल अथवा मढ़े से दें।

बैद्यनाथ चोपचिन्यादि चूर्ण (योग रत्नाकर)

आतशक या गर्मी, वज्रनाशक, फोडे, फुन्सी, मंह के छाले, भगन्दर, पीनस, उपदश, सूजाक, वीर्य विकार, आदि में लाभकारी है। 3 से 6 ग्राम पानी में सुरक्ता डालकर मिलावें, 2–2 बार दें।

बैद्यनाथ धातुपौष्टिक चूर्ण (आ.सा.सं.)

यह चूर्ण पौष्टि धातुवर्धक और वीर्य को गाढ़ा करने वाला, स्वप्न दोष नाशक है। 6 माशा (ग्राम) से 1 तोला (10 ग्राम) प्रतिदिन सुबह–शाम गाय के दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ गंगाधर चूर्ण बृहत (भै.र.)

यह भांग का योग हैं, अतिसार, आंव तथा संग्रहणी में दस्तों को बांधती है। एक से तीन ग्राम तक दही से दें।

बैद्यनाथ हिंग्वाष्टक चूर्ण (आ. सा. सं.)

पेट में वायु जमा होना, मन्दाग्नि, खट्टी डकारें, भूख न लगना, अजीर्ण, पेट में दर्द, कुपच, पेट फूलना आदि में लाभकारी है। 3–3 ग्राम गरम जल से दें।

बैद्यनाथ जातिफलादिचूर्ण (आ.सा.सं.)

इस योग में भांग पड़ती है। यह अतिसार, संग्रहणी, मरोड़ आदि में लाभदायक है। 2 से 4 ग्राम जल के साथ दिन में दो बार दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ लवण भास्कर चूर्ण (आ.सा.सं.)

पाचक (हाजमा) चूर्णों में यह विशेष गुणकारी और स्वादिष्ट है, यह कब्जियत को मिटाता है और पतले दस्त को बन्द करता है। मन्दाग्नि में लाभदायक है। 2 ग्राम से 4 ग्राम दही अथवा गट्ठे के साथ 3–4 बार तक दें।

बैद्यनाथ महासुदर्शन चूर्ण (आ. सां. सं.)

कुनीन आदि में दबा हुआ बुखार इससे दूर होता है। प्लीहा, के दोष से तथा वात, पित्त, कफ के दोषों से उत्पन्न जीर्ण ज्वर, पारी से आने वाला विषम ज्वर बद्धता आदि दूर होते 3 से 9 ग्राम तक तीन बार काढ़े से या फांट के रूप में दें।

बैद्यनाथ नारायण चूर्ण (यो.र.)

गुल्म, पेट फूलना, सूजन, लीवर यकृत के रोग में पेट साफ रखने के लिए इसका उपयोग होता है। 3 ग्राम से 6 ग्राम तक जल के साथ दें।

बैद्यनाथ पंचसकार चूर्ण (सि.यो.सं.)

यह चूर्ण दस्त साफ लाता है जिससे आँतों में मल संचन नहीं रहता और वे भोजन पचाने और अन्न रस के प्रदूषण में समर्थ हो जाती है इससे कब्ज, गैस, कोष्ठ, कड़ा हो इसका उपयोग थोड़े–थोड़े दिन बाद करते रहना चाहिए। 3 से 6 ग्राम दूध से सोते समय दें।

बैद्यनाथ प्रदरनाशक चूर्ण (आ.सा.सं.)

यह स्त्रियों के अन्दरूनी विकारों के लिए लाभदायक है। रक्त प्रदरनाशक तथा रक्त शोधक है। गर्भाशय को शक्ति देता है। 2 से 4 ग्राम दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ पुष्यानुग चूर्ण नं. २ (नागकेशरयुक्त) (आ.सा.सं.)

प्रदर की अच्छी दवा है। स्त्रियों के प्रजनन अंगों को स्वस्थ और पुष्ट करता है। 3 से 5 ग्राम तक 2 से 3 बार चावल के धोवन से दें।

बैद्यनाथ शतावर्यादि चूर्ण (योगरत्नाकर)

यह रस रक्तादि सातों धातुओं को पुष्ट करता है, पित्तशामक है। माताओं में दूध बढ़ाता है और दुर्बलों के शरीर भार की वृद्धि करता है। 3 से 6 ग्राम दूध के साथ 2 बार दें।

बैद्यनाथ सारस्वत चूर्ण (आ.सा.सं.)

उन्माद, अपस्मार, मस्तिष्क की कमजोरी, स्मरण शक्ति की हीनता आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। 3 से 6 ग्राम तक दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ सितोपलादि चूर्ण (भै.र.)

इस चूर्ण के सेवन से श्वास, खाँसी, क्षय, हाथ और पैरों की जलन, अग्निमांद्य आदि में लाभदायक है। 2 से 6 माशा तक सुबह–शाम मधु या 1 माशा घृत और 6 माशा मधु के साथ दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ तालीसादिचूर्ण (आ. सा. सं.)

इस चूर्ण के सेवन खाँसी, जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, संग्रहणी, अरूचि, पाचन शक्ति की कमी आदि में लाभकारी है। 2 से 3 माशे सुबह–शाम मधु से दें। बैद्यनाथ त्रिफला चूर्ण (शा. सं.) कब्ज दूर करने, पेट साफ रखने के लिए प्रसिद्ध है। नेत्र विकार, पाण्डु रोग, कामला आदि रोगों में लाभदायक है। इससे बाल धोने से काले और मजबूत होते है। 3 ग्राम से 10 ग्राम तक जल से दें।

बैद्यनाथ अवलेह – मोदक पाक

काढ़ा–रस फाण्ट आदि को दुबारा पकाकर जो गाढ़ा किया जाता है उसको अवलेह कहते है। हमारे बैद्यनाथ कारखाने में अवलेह और पाक कड़ी (सख्त) चाशनी में बनते हैं। जिससे उनमें कृमि फुफुद आदि विकृति (बिगाड़) नहीं आते तथा जायका भी नहीं बदलता है।

बैद्यनाथ अगस्त्य हरीतकी (भै. र.)

क्षय, खाँसी, दमा, ज्वर, अर्श, अरूचि, पीनस आदि में लाभकारी है। सुबह–शाम चार से 10 ग्राम तक दूध या पानी से दें।

बैद्यनाथ एरण्ड पाक (आ.सा.सं.)

यह पाक वात व्याधि अधिकार का है। विशेषकर आमवात संधिवात व पक्षाघात एकांगवात, कम्पवात आदि व्याधियों में रोगी का कूरकोष्ठ विवन्ध हो जाता है। मल आंतों में वायु के कारण खुश्क होने लगता है जिससे हमेशा कब्ज बना रहता है। ऐसी अवस्था में बैद्यनाथ एरण्ड पाक कब्ज मिटाकर वात व्याधि में विशेष लाभ करता है साथ ही शारीरिक दुर्बलता मिटाकर शक्ति संचय होने लगता है, इसमें एरण्ड (अण्डी) बीज मिगी विशेष व प्रमुख मात्र में होने से तथा गाय के घृत में सिकी तथा दालचीनी, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, नागकेशर, असगंध, रास्ना पीलामूल शतावरी जावित्री जायफल लौहभस्म, अभ्रकभस्म, चित्रकमूल, अजवायन आदि वात व्याधि कफ त्रिदोष नाशक, शक्तिवर्धक द्रव्यों के साथ विशेष गुणकारी, सूजन अण्डकोष वृण, उदरशूल, अंत्रपुच्छ शोथ, (अपेडिसाइटिस) जैसे जटिल रोगनाशक है।

विशेष गुण व सेवन मात्रा–

यह सिनग्ध विरेचक है। वात रोग व जोड़ों के दर्द में लाभकारी है आमवात, शोथ, उदर रोग, आदि में भी फायदा होता है जिनको सख्त कब्जियत रहती हों, शुष्क गांठ–गांठ करके मल आता हो, उसमें विशेष लाभदायक है। 10 ग्राम तक गर्म दूध या जल से दें।

बैद्यनाथ कण्टकार्यावलेह (आ.सा.सं.)

श्वास, कास, हिचकी, कफ का छाती में जम जाना, सूखी गीली खाँसी में लाभकारी है। 3 से 6 ग्राम प्रतिदिन दो तीन–बार उचित अनुपान से दें।

बैद्यनाथ कुटजावलेह (आ.सा.सं.)

अतिसार, संग्रहणी, प्रवाहिका (पेचिस), मरोड़ के दस्त, रक्तातिसार, बवासीर और रक्तपित्त

PDF Scanner ACE Scanner

में लाभदायक है। 4 से 6 ग्राम की मात्रा सुबह शाम मधु से दें।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश (अष्टवर्ग युक्त) (शारंगधर संहिता)

यह फेफड़ों को मजबूत बनाता है तथा दिल को ताकत देता है, बल, पौरुष और कान्ति की वृद्धि में भी यह बहुत गुणकारी है। पुरानी खाँसी और दमा में भी इससे लाभ होता है। 12 ग्राम से 24 ग्राम तक सुबह–शाम दूध से दें।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश अवलेह (स्पेशल) (च.सं.)

उपर्युक्त अष्ट वर्ग च्यवनप्राश के सब गुण इसमें हैं। त्रिदोष नाशक, संग्रहणी में लाभदायक, मूत्रल व रक्तशोधक, रूचिकारक, स्मृति, बुद्धि बल, एवं ओजवर्धक रसायन है। 6 ग्राम से 12 ग्राम सुबह–शाम दूध से दें।

बैद्यनाथ चित्रक हरीतकी (आ.सा.सं.)

इस योगकल्प में चित्रकमूल चूर्ण एवं हरीतकी (बडी हर्रे) प्रमुख घटक द्रव्य होने से इसका नाम "चित्रक हरीतकी" शास्त्रकारों ने रखा। यद्यपि यह त्रिदोष नाशक रसायन गुणकारक, सम्पूर्ण रोग निवारक है किन्तु कफदोष निवारक विशेष है। चित्रकमूल में एक प्राकृतिक रसायन तत्व जिसका नाम "सम्बेगिन" है इसका प्रभाव (एक्शन) मज्जा तन्तुओं पर होता है और विशेषकर आंत्र हृदय तथा सिर मस्तिष्क के मज्जा तंतुओं को उत्तेजित व सक्रियता प्रदान करता है जिससे पसीना आना, भूख लगना, वातकफ दोष मिटाना चित्रक का कार्य है, हरीतकी (बड़ी हर्रे) बड़ी हरड में प्रचुर मात्रा में एक काषायम्ल तत्व (टैनिक एसिड) होता है जो कफवात, दोष–पीनस–प्रतिश्याय (साइनोसाइटिस) नजला जुकाम व सिरोरोग नाशक होता है। चित्रक हरीतकी सेवन के साथ–साथ बैद्यनाथ षड़बिन्दु तैल को नाक में डालकर नस्य लेने से पुराना नजला (साइनोसाइटिस) पुराना जुकाम तथा सिर का दर्द .. असमय में (50 वर्ष से पहले) बाल सफेद होना, श्वासकास तथा बालों का झड़ना, गंजापन दूर होता है। इस योग में रसायनिक गुण वर्धक द्रव्यों का मिश्रण है। चित्रकमूल, गिलोय, दशमूल क्वाथ घनसत्व आदि औषधि द्रव्य इसमें विशेष है।

विशेष गुणधर्म व सेवन मात्रा–

पुराने तथा बार बार होने वाले सर्दी–जुकाम (जीर्ण–प्रतिश्वाय), (नजला, जुकाम) की दवा है। 6 ग्राम गाय का दूध अथवा गरम पानी से सुबह–शाम दें।

बैद्यनाथ वासावलेह (आ.सा.सं.)

वासा (अडूसा) यद्यपि रक्त–पित्त रोग अधिकार जिस रोग में किसी भी कारण शरीर की आन्तरिक रक्तशिरा (नर्व) के फटने पर रक्त (खून–ब्लड) शरीर से बाहर आता है जैसे नक्सीर, रक्तार्श, स्त्रियों में अधिक रज: स्त्राव–रक्तप्रदर आदि पित्त विकार नाशक गुणों से युक्त होता है। वासा (अडूसा) एक उत्कृष्ट उत्तेजक, संकोच विकास प्रतिबन्धक और कफ निसारक होता है। शरीर में इसकी क्रिया आधुनिक रसायन "एपिकेकोमा" के समान होता है। खांसी व दमे को नष्ट करने की शक्ति वासा (अडूसा) में विशेष है। यह स्वरनली के विकास तथा कफ निकालने की प्रक्रिया में लाभदायक है। इसमें एक उपक्षार

PDF Scanner ACE Scanner

(अल्कलॉइड) एकतिक्त स्वाद इसमें पाया जाने वाला उपक्षार श्वास नली की सूजन कम करता है। अतः यह खांसी, श्वास, रक्तपित्त, हृदय रोग में उत्पन्न खाँसी में भी लाभदायक है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

सभी प्रकार की खाँसी, श्वास, रक्तपित्त आदि में लाभदायक है। 5 ग्राम से 10 ग्राम तक सुबह–शाम मधु या अन्य उचित अनुपान के साथ दें।

बैद्यनाथ बादाम पाक (आ.सा.सं.)

बादाम मिगी, गाय का घी, केशर, इलायची, विदारीकन्द, कौंच बीज, सफेद मूसली, खरैटी बीज, शालममिश्री, शतावरी, कमलगट्टा, वंश लोचन, वंग भस्म, प्रवाल पिष्टी, रस सिन्दूर जैसे–शरीर पुष्टिकरधातु वर्धक रसायन, बाजीकरण गुण प्रधान औषधि रोग बादाम पाक जैसा मस्तिष्क मेघाशक्ति, कामशक्ति एवं नेत्रदृष्टि शक्तिवर्धक अन्य कोई भी औषधिकल्प नहीं है जिन्हें सिरदर्द, घबराहट (हार्टवीट) तथा स्मरणशक्ति की कमी और जिन्हें बार–बार चश्मा का नम्बर बदलवाना (चेन्ज) कराना पड़ता है, उन्हें बैद्यनाथ बादाम पाक नियमित सेवन करना चाहिए। बादाम पाक बल, वीर्य और ओज़स्वी तथा शरीर को पुष्ट रखता है। ध्वज भंग, नपुंसकता, स्नायुदौर्बल्य (नर्वसवीकनेस) दूर करता है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

यह हृदय दिल और दिमाग को ताकत देता है। वजन बढ़ाता है तथा शिरो रोग में लाभ करता है। शुक्रक्षय, पित्त विकार, नेत्र रोग, में भी लाभ करता है। इसके सेवन से शरीर पुष्ट होता है। इसका प्रयोग सर्दियों में करने से उत्तम पुष्टई है। एक से दो चम्मच (5 से 10 ग्राम) गाय के दूध या जल से दें।

बैद्यनाथ मूसली पाक (आ.सा.सं.)

मूसली एक दिव्य रसायन वस्तु है। आयुर्वेद के मानक ग्रन्थों में जितने भी योग वीर्यवर्धक व कामशक्ति वर्धक बनाये जाते हैं उनमें मूसली पाक प्रधान द्रव्य है। मनुष्य की कामशक्ति को अक्षुण्य रखने और उस कामशक्ति को स्थायी रखने के लिए बैद्यनाथ मूसली पाक प्रसिद्धकल्प है। मुसली पिष्टमय (स्टार्च) पदार्थ नहीं होता इसलिए मुसली मधुमेह के रोगी के लिए भी अनुकूल है। मधुमेह के रोगी को चीनी रहित मूसली पाक देना चाहिए।

बैद्यनाथ मूसली पाक सेवन विधि –

1– वजन बढ़ाने के लिए– मूसली पाक 15 ग्राम (3 चम्मच) भैंस अथवा गाय का दूध 300 मिली0 प्रातः प्रतिदिन दें।

2– कब्ज व भूख की कमी में –मुनक्का अथवा बैद्यनाथ द्राक्षासव 4 चम्मच (20 मिली) दूध के साथ दें।

3– स्वप्नदोष व शीघ्रपतन (स्त्री को याद करते ही वीर्यपात होना) में

4– मूसली पाक 10 ग्राम वंग भस्म 250 मिग्रा0 प्रतिदिन दो बार दूध अथवा जल के साथ

ACE Scanner

प्रातःकाल दो माह तक लें स्त्रियों के प्रदर रोग (लिकोरिया) में बैद्यनाथ प्रदरान्तक टेबलेट 2 टैब भोजन के बाद दें।

5– मूत्रातिसार– जिन्हें बार–बार पेशाब होता है उन्हें मूसली पाक 10 ग्राम (2 चम्मच) जायफल चूर्ण 250 मिग्रा0 अथवा शिलाजित्वादि वटी 2 टेबलेट प्रतिदिन दो बार दें।

विशेष गुण व सेवन मात्रा–

यह पौष्टिक बल, वीर्यवर्द्धक, कामशक्ति वर्द्धक, नपुंसकता नाशक, धातु दौर्बल्य नष्ट होकर शरीर स्वस्थ, कान्ति युक्त एवं बलिष्ट हो जाता है। 5 ग्राम से 10 ग्राम दूध या जल से दें।

बैद्यनाथ सुपारी पाक (आ.सा.सं.)

सुपारी पाक यद्यपि धातु क्षीणता में स्त्री–पुरुष दोनों के लिए लाभदायक है किन्तु जहाँ–जहाँ सुपारी का परिचय उन–उन देशों में सुपारी का सेवन व प्रयोग स्त्रियों के लिए विशेष रोगनाशक अमृततुल्य औषधि माना गया है। आयुर्वेद में सुपारी को रुक्ष, कषैला कफ पित्त दोषनाशक दीपन, रूचिकारक व मुख शुद्धिकारक कहा है। सुपारी कच्ची अवस्था में हानिकारक, अधपकी अवस्था में भेदक– (दस्तावर) और सूखी अवस्था में रसायन गुणकारक है। सुपारी पाक में परिपक्व सूखी सुपारी चूर्ण को गौघृत, शक्कर, मुनक्का, बादाम पिस्ता, जायफल, जावित्री, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, जीरा, वंशलोचन आदि औषधि द्रव्यों के साथ निर्मित किया जाता है। सुपारी पाक स्नायुजाल को शक्ति प्रदान करने कफदोष मिटाने तथा ऋतुस्त्राव (मासिक धर्म) नियमित करने में गुणकारक होता है। सुपारी पाक मेदोवृद्धि (चर्बी–फैट) को कम करता है और गर्भाशय रोगनाशक, प्रजनन शक्तिदायक, वध्यत्व (बांझपन) को दूर करने में विशेष उपयोगी है। प्रसव (डिलेवरी) के बाद सेवनीय है।

बैद्यनाथ सुपारी पाक अनुपान–

पुरुषों को स्वप्नदोष व शीघ्रपतन में सुपारी पाक 10 ग्राम वंग भस्म 250 मिग्रा० प्रातः दूध 200 मिली के साथ, स्त्रियों को कमर दर्द में सुपारी पाक 10 ग्राम (2 चम्मच) बैद्यनाथ अश्वगंधादि चूर्ण 5 ग्राम (1 चम्मच) रात्रि सोने से पहले दूध के साथ दें।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

प्रदर, प्रमेह, जीर्ण ज्वर, अम्ल पित्त, खून का गिरना, मन्दाग्नि आदि में लाभदायक है। यह प्रसूति होने के बाद सेवन योग्य श्रेष्ठ पाक है। स्त्रियों के लिए विशेष लाभकारी है। 5 से 10 ग्राम दूध के साथ दें।

बैद्यनाथ सौभाग्य शुण्ठी पाक (आ.सा.सं.)

उत्तम पुष्टिकारक, योनिविकार, प्रदर कण्टार्तव, प्रसूता स्त्रियों के लिए विशेष लाभप्रद है। 6 ग्राम से 15 ग्राम तक 2 बार दूध के साथ दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ हरिद्राखण्ड बृ. (आ.सा.सं.)

शीत पित्त, दर्द, कोठ, (चकत्ते) खुजली, छाजन (एक्जिमा), एलर्जी आदि में लाभकारी है। 6 ग्राम से 10 ग्राम तक दूध या जल से दें।

बैद्यनाथ हरीतकीखण्ड (भै.र.)

इसके सेवन से समस्त प्रकार के शूल रोग नष्ट होते हैं। अर्श, कोष्ठगत वात विकार, कटिशूल. आदि में लाभकारी है। 6 ग्राम से 10 ग्राम तक दूध या गर्म जल से दें।

बैद्यनाथ औषध तैल

उत्तम औषिधयों द्वारा विशुद्ध आयुर्वेदीय विधि से निर्माण किये हुए तैल रोगनाश करने में सहायक सिद्ध हुए है। शरीर को भी पुष्ट करते हैं। मालिश के तैल को धीरे–धीर लेकिन बल के साथ इस प्रकार मालिश करनी चाहिए कि तैल चमड़ी के भीतर रम जाये। बिना उत्तम मर्दन के तैलों से पूर्ण आराम नहीं होता है।

बैद्यनाथ इरेमेदादितैल (शा.सं.)

यह मुख रोग की उत्तम दवा है। दाँत और मसूड़ों के विकार नष्ट होते हैं पीब गिरना, . दाँतों का हिलना, कृमिदन्त, तालू की पीड़ा में लाभदायक है। प्रतिदिन तालू और मसूड़ों पर इसे मलना चाहिए।

बैद्यनाथ काशीसादि तैल (शा.सं.)

इस तेल के प्रतिदिन 2–3 बार लगाने से बवासीर के मस्से नष्ट होते है। उनकी खाज, खुजली, जलन और खून गिरना दूर हो जाता है।

बैद्यनाथ चन्दनबलालाक्षादि तैल (आ.सा.सं.)

खाँसी, श्वास, क्षय, रक्त, प्रदर, रक्तपित्त, सूजन, बालकों के सूखा रोग में इस की मालिश लाभदायक है।

बैद्यनाथ तुबरक तैल (चालमूंगरा तैल) (आ.सा.सं.)

चालमूंगरा तैल चर्मरोग नाशक कृमिनाशक वेदना नाशक रक्तशोधक व्रण (घाव) रोपक होता है। यदि इसका विधिपूर्वक उपयोग किया जाए तो कुष्ठ के समान भयंकर रोग भी इससे दूर हो जाते हैं। कण्ठमाला, क्षयजन्तुओं द्वारा उत्पन्न वृण–घाव, नासूर में खाने व लगाने से रोग दूर होते हैं।

अस्थि क्षय–

इण्डियन प्लेण्ट्स एण्ड ड्रग्स नामक ग्रन्थ में डाक्टर नाडकर्णी लिखते हैं कि चालमोगरे का तैल वातरक्त और कुष्ठरोग के लिए कण्ठमाला, चर्मरोग और पुराने संधिवात पर यह औषधि विजयी (लाभकारी) सिद्ध हुई है। इस तैल की 5 बूंद दूध के साथ अथवा कैपसूल में भरकर निगल जाना चाहिए। जब तक इस औषधि का सेवन प्रयोग चालू रहे तब तक नमक, मिर्च, गर्म मशाला और खटाई बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए और घी, मक्खन, दूध इत्यादि वस्तुओं का सेवन विशेष करें। जहां तक हो चीनी और गुड़ के पदार्थ का भी सेवन नहीं करना चाहिए। साधारण खुजली से लेकर तमाम त्वचा रोग विचार्चिका, एग्जिमा

PDF Scanner ACE Scanner

एवं उपदंश और गरमी (सुजाक) जैसे औपसर्गिक रोग में भी यह बहुत लाभदायक है। त्वचा पर ज्यादा मलने से यह जलन करता है तथा जिन्हें इसका सेवन अनुकूल नहीं होता उन्हें वमनध्कै, अतिसार–दस्त (डायरिया) होने लगता है, चर्मरोग के लिए यह दिव्य औषधि है दर्द के ऊपर इसकी मालिश 30 दिन तक करें। सब प्रकार के कुष्ठ रोगों में खाने व लगाने में लाभदायक होता है। खुजली में भी लाभदायक है। सेवन मात्रा 5 बूंद अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

बैद्यनाथ जात्यादि तैल (आ.सा.सं.)

फोड़ा–फुन्सी, एवं घावों को भरने के लिए बाहरी प्रयोग प्रसिद्ध है। जले हुए स्थान के घावों में लेप भी लाभप्रद है।

बैद्यनाथ निर्गुण्डी तैल (आ.सा.सं.)

नासूर, अपची, आदि गले की गांठों तथा सब प्रकार के दुष्ठ वण में लगाने से दूर करता है।

बैद्यनाथ प्रसारिणी तैल (आ.सा.सं.)

यह तैल गंध प्रसारिणी रोमशःलता–वनस्पति के सिद्ध क्वाथ से तैयार किया जाता है। इसलिए इसे प्रसारिणी तैल नाम से जाना जाता है। प्रसारिणी तैल में दो मुख्य प्राकृतिक रसायन प्रभावकारी तत्व होते हैं जिन्हें अलफापिडेरिन "विटा पिडेरिना" सार तत्व कहते हैं। आयुर्वेद मत से ये कटु विपाक व उष्णवीर्य–गरम तासीर होते हैं। यह वेदना कम करता तथा त्वचा व नाड़ियों (नर्बस) के लिए शक्ति प्रदान करता है। द्रव्यगुण होने से वातदोष शामक यह समस्त वात व्याधि एवं संधियों/जोड़ों की जकड़ाहट दूर करता है। सूजन कफपात विकार में इस तेल की मालिश व लेप शिराओं में रूके हुए रक्त कफ–वात विकार में प्रसार गति प्रदान करता है।

विशेष गुणधर्म प्रयोग–

यह अर्दित, ग्रन्थिवात, गृधसी, दर्द, वातव्याधियों से पीड़ित रोगी को इसकी नित्य मालिस करनी चाहिए।

बैद्यनाथ पुनर्नवादितैल (भै.र.)

इस तेल की मालिस करने से शोथ, कामला, पाण्डुरोग, हलीमक, जीर्णज्वर, आदि में लाभकारी है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी तैल (आ.सा.सं.)

यह केश तेल बुद्धि और स्मृति को बढ़ाता है। दिमागी कमजोरी को नष्ट करता है। नित्याशिर में लगाने से।

बैद्यनाथ बिल्व तैल (भै.र.)

कान का दर्द, कम सुनना, आवाज, आना आदि में लाभदायक है। प्रतिदिन 2–3 बार 2–3 बूंद कान में टपकाते हैं।

बैद्यनाथ नीम तैल (भा.प्र.)

प्रमुख घटक :– नीम मिंही (फल) इस तेल को लगाने से त्वचा रोग, खाज खुजली, फोड़ा फुन्सी, कुष्ट आदि चर्म रोग में लगाने से विशेष लाभ होता है।

बैद्यनाथ विष्णु तैल (केशरयुक्त) (भै.र.)

वातव्याधि, पार्श्वशूल, अर्धावभेदक, पाण्डु, कामला, राजयक्ष्मा, लकवा (फेश पैरालेसिस), नपुंसकता आदि में इसकी मालिश उपयोगी है। बैद्यनाथ मल्लतैल (सि.भै.म.) (सिद्धभैष्जमणिमाला) आयुर्वेद में संखिया (आर्सेनिक) एक खनिज विष को शोधित कर अनेक औषधि कार्य में प्रयोग किया जाता है। इस श्वेतमल्ल को जावित्री, जायफल, लौंग, अजवायन, खुरासानी अजवायन, माल कांगनी बीज एवं तिल तैल के सहयोग से शास्त्रोक्त पाताल यंत्र विधि से तैयार किया जाता है। फिर इसमें केशर, अम्बर आदि प्रभावकारी औषधि द्रव्यों का मिश्रण कर प्रयोग में लिया जाता है।

वातवेदना में इस तैल की 5 से 10 बूंद अन्य तैल में मिलाकर मालिश करने से शीघ्र लाभ होता है। एक बूंद तैल पान में लगाकर खाने से दमा रोग में लाभ होता है। ध्वजभंगनपुंसकता में दो बूंद तैल को 10 बूंद तिल तैल या नारियल तेल में मिलाकर इन्द्रिय की मालिश करने से दृढ़ता उत्पन्न होती है तथा एक बूंद नित्य दूध अथवा घी में मिलाकर सेवन करने से दुर्बलता दूर होती है। दमा, भूख न लगना, तथा नसों की कमजोरी व दर्द में इस तेल की मालिश लाभदायक है। सेवन मात्रा 1 से 2 बूंद चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

बैद्यनाथ महामारिच्यादि तैल (भै.र.)

खाज, खुजली, फोड़ा—फुन्सी, झाई, एक्जिमा, आदि चर्म रोग, कुष्ठ, सूजन, सुनहरी, वात व्रण, नासूर, गण्ठमाला गांठ आदि में लगने से शीघ्र लाभ होता है।

बैद्यनाथ महाचन्दनादि तैल (आ.सा.सं.)

इस तेल की मालिश से राजयक्ष्मा, जीर्ण, दाह, श्वास, विष, दोष, शारीरिक क्षीणता आदि में उत्तम लाभदायक है।

बैद्यनाथ महाविषगर्भ तैल (आ.सा.सं.)

अशुद्ध श्रृंगिक विष (एकोनाइट) कुचला, धतूरा पंचांग आदि वानस्पतिक विष द्रव्यों से निर्मित होने से इस तैल का नाम महाविषगर्भ तैल है। ब्राह्य प्रयोग मालिश लेप आदि प्रयोग से वात व्याधि से उत्पन्न वेदना (दर्द) को शान्त करता है। इस तैल की प्रतिक्रिया त्वचा मांस एवं रक्तवाहिनी, वात वाहिनी शिराओं पर तत्काल होता है। इस तैल की उष्णता गर्मी से संधिवात सूजन, पक्षाघात अर्दित एकांगवात ग्रध्रसी (साइटिकापेन) में तथा पुरानी वात व्याधियों में ब्राह्म प्रयोग (मालिश) करने से लाभ होता है।

विशेष प्रयोग—

इस तेल की मालिस से सन्धियों की सूजन, गृधसी, सिर दर्द, समूचे शरीर में हड़फुटन होना, आधा शरीर सूख जाना आदि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ सोमराजी तैल (भै.र.)

इस तेल में प्रमुख घटक द्रव्य सोमराजी (बाकुची) आदि चर्म रोग नाशक द्रव्यों से निर्मित इससे त्वचा रोग एग्जिमा, सेंहुआ, त्वचा के सफेद दाग, झांई आदि रोग मिटते हैं केवल लगाने के लिए।

ACE Scanner

बैद्यनाथ महानारायण तैल (केसर युक्त) (आ.सा.सं.)

इसे तिल तैल में सम्पूर्ण च्यवनप्राश में प्रयुक्त होने वाले द्रव्य–अष्टवर्ग शतावरी एवं दशमूल के द्रव्यों के क्वाथ से एवं गौदुग्ध से सिद्धकर केशर, कपूर, अम्बर के मिश्रण के साथ तैयार किया गया है। शास्त्रों में इस तैल को ब्राह्म और अतप्रयोग द्वारा वात रोग नाशक शक्तिवर्धक तथा अनुपान भेद से अलग–अलग अनेक औषधि प्रयोग बताए गए हैं। इस तेल की मालिश करने से समस्त वात व्याधि एवं थकान मिटती है साथ ही शरीर में पसीने की दुर्गन्ध दूर करता है, महानारायण तैल को पीने से भोज्य सामग्री में (दूध–आदि में) खाने से और वस्ती (डूस) के रूप में प्रयोग करने से सम्पूर्ण वातरोग जैसे–एकांगवात अर्दित (फेस पैरालेसिस) कम्पवात शुक्रक्षय मुंह टेढ़ा होना, पीठ की तरफ उल्टा झुकना जैसा रोग सिरदर्द स्त्रियों के योनि रोग, बांझपन, काम उदासीनता दूर होती है। महानारायण तैल का सेवन चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।

सेवन मात्रा–

5 से 10 मिली0 (1 से 2 चम्मच) दूध–गरम जल आदि के साथ।

विशेष गुणधर्म–

सन्धिवात, आमवात, कमर का दर्द, पूरे शरीर का सूखना, पक्षाघात (लकवा), फालिस आदि में इसकी मालिस से लाभ होता है।

बैद्यनाथ महाभृंगराज तैल (आ.सा.सं.)

स्वास्थ्य और सौन्दर्य की परिभाषा में केश (सिर के बालों) का प्रमुख स्थान है। केशों को सुन्दर, स्वस्थ्य व आकर्षक रखने की चाहत स्त्री–पुरुष दोनों की ही समान रूप से होती है।

केश/बालों को टूटना, झड़ना, युवावस्था में सफेद होना, रूसी (डेण्ड्रफ) होना उपरोक्त कारण अत्यधिक चिन्तायुक्त रहना, हर समय कार्य में व्यस्त रहना, दिनभर दौड़–भाग आदि कारणों से बालों को पोषण नहीं मिलता, चिन्ता करने से वात–पित्त दोष की वृद्धि होती है और इस प्रकार खुश्की होने से सिर के बालों की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस समस्या का समाधान "बैद्यनाथ महाभृंगराज तैल" है इस तैल को रात्रि में अपने हाथों की उंगली से सिर के बालों की जड़ों में रगड़कर मालिश कर लगावें। प्रातः हल्के गरम जल में नीबू अथवा उपयुक्त प्यूमा सैम्पू, प्यूमा हर्बल (बैद्यनाथ ग्रुप कम्पनी) का उत्पाद से बालों को धो डालें, स्नान के बाद इसी महाभृंगराज तैल को नारियल तेल में मिलाकर बालों में लगाकर कंघी करें। बैद्यनाथ महाभृंगराज तैल तिल तैल में सिद्ध किया गया है, इसलिए सिर की त्वचा के लिए विशेष शैम्पू–शीतल वात–पित्त दोष की खुश्की मिटाकर बालों की जड़ मजबूत कर रूसी (डेण्डरफ) मिटाकर बालों को टूटने, झड़ने तथा सफेद होने से बचाता है।

विशेष गुणधर्म–

इस तेल को सिर में लगाने से बालों का असमय से झड़ना, और सफेद होना, सिरो रोग, मन्यास्तम्भ आदि में लाभ करता है। माथे को ठन्डा रखता है, बालों को बढ़ाता है तथा गंज को मिटाता है।

ACE Scanner

बैद्यनाथ महामाष तैल निरामिष (आ.सा.सं.)

पक्षाघात, हनुस्तम्भ, अर्दित, अपतन्त्रक, आदि कठिन पाव रोगों में लाभ करता है। अपबाहुक, विश्वाची, खज, पंगुता, सिर का जकड़ना, गर्दन का जकड़ना आदि में इसकी मालिश लाभकारी है। कृशता (दुबलापन) दूर कर अंग में ताकत पैदा करता है।

बैद्यनाथ महालाक्षादि तैल (आ.सा.सं.)

जीर्ण ज्वर विषम ज्वर, रस–रक्तादि, धात ज्वर, गर्भावस्था में होने वाला ज्वर में इसकी मालिस से बहुत लाभ होता है। हाथ पैर की जलन हड्डी–पसली के दर्द, वातरोग तथा खाँसी में लाभ करता है।

बैद्यनाथ श्रीगोपाल तैल (के.अ.यु.) (भै.र.)

भैषज्य रत्नावली नामक ग्रन्थ में इस तेल का वर्णन बाजीकरण अध्याय में है क्योंकि इस तैल में 54 से अधिक वनौषधियों/जड़ी–बूटियों का शास्त्रोक्त विधि से मिश्रण किया गया है जो रक्त वाहिनी एवं वात वाहिनी, नाड़ियों को सक्रिय व सुसंचालित बनाये रखने में विशेष गुणकारी है। पुरुषों में ध्वजभंग (अनस्टेडिंग) एवं स्त्रियों के योनिगर्भाशय विकार–असहनता एवं कामशक्तिहीनता योनि शिथिलता में इस तैल का विशेष उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधि–

ध्वजभंग रोग से पीड़ित पुरुषों को इस तेल की मालिश अण्डकोष एवं पुरुषेन्द्री में करना चाहिए इससे दृढ़ता एवं अंग परिपुष्ट होता है जिन स्त्रियों को सहवास में कमी–अरूचि अथवा सन्तुष्टि नहीं होती तथा प्रजननशक्ति हीनता गर्भस्त्राव–गर्भपात (अवार्सन) की शिकायत हो, उन स्त्रियों को इस तैल को रूई के फोये की बत्ती से योनि में रखना और लगाना चाहिए। जिन्हें नींद नहीं आती हो, सिरदर्द रहता हो, सिर की त्वचा खुश्क रहती हो उन्हें श्रीगोपाल तैल को सिर की रक्तवात नाड़ियों की पुष्टि के लिए मस्तिष्क (सिर) में मालिश करना चाहिए।

बैद्यनाथ श्रीगोपाल तैल में जितने भी औषधि द्रव्यों का मिश्रण है वे सभी निर्दोष–विषहीन तथा पौष्टिक व जीवनीय द्रव्य है। अपस्मार (मृगी) में सिर व हाथ–पैरों की मालिश उन्माद में सम्पूर्ण शरीर में मालिश करें, स्मरण (याददाश्त) के लिए मस्तिष्क में तथा नपुंसकता (नामर्दी) में उपस्थेन्द्रि (लिंग–पेनस) में नित्य प्रति इस तैल से अभ्यंग (मालिश) करना चाहिए।

विशेष गुणधर्म व उपयोग–

हमेशा लगाने से वातरोग नष्ट करता है। नसों को ताकत देता है तथा अंगों को पुष्ट करता है। अपस्मार (मिर्गी), उन्माद, सिर दर्द, दिमाग की कमजोरी, नपुंसकता, आदि में लाभ करता है।

बैद्यनाथ षड्बिन्दु तैल (भै.र.)

तगर सोंठ, रास्ना, एरण्ड मूल क्वाथ तथा भृगराज स्वरस बकरी एवं गाय के दूध एवं तिल तैल में सिद्ध यह तैल उर्ध्वत्रुगत (शरीर के गर्दन से ऊपर के) सभी रोगों की यह सुप्रसिद्ध

ACE Scanner

औषधि तेल है।

प्रयोग विधि–

जुकाम–नजला (साइनस) पीनस तथा सिरदर्द एवं छींक का बार–बार अथवा विशेषकर सुबह–शाम आना आदि तकलीफ में इस तेल की 3–3 बूंद नासारेध्र (नाक के अन्दर) दोनों नथुनों में प्रातः स्नान से पहले एवं रात भोजन के दो घण्टे बाद "ड्रापर" से डालना चाहिए। यदि यह तैल गले के अन्दर पेट में भी चला जाए तो कोई हानि नहीं होती, नाक में तेल डालने, सूंघने तथा माथे पर मलने के कुछ देर बाद गर्म पानी से कुल्ला करें तथा एक–दो घूंट पानी पीना भी चाहिए। जिन्हें प्रतिश्याय (जुकाम) व पीनस (साइनस) हो उन्हें प्रतिदिन बैद्यनाथ चित्रक हरीतकी 5 से 10 ग्राम दवा गर्म दूध अथवा पानी से दो–तीन महीने तक सेवन करना चाहिए। जिन्हें पुराना सिरदर्द व नजला (साइनस) तथा चित्तभ्रम–चक्कर भी आते हों उन्हें बैद्यनाथ अश्वगंधारिष्ट 3–3 चम्मच (15–15 मिली0) बराबर पानी के साथ भोजन के बाद मिलाकर पीना चाहिए।

विशेष प्रयोग–

सिर दर्द, जुकाम, नजला, पीनस, नासार्बुद, साइनस आदि में लाभदायक है। इसे 3–3 बूंद नाक में प्रतिदिन 2 बार टपकाने से नाक के सब विकार मिट जाते हैं।

बैद्यनाथ सैंधवादि तैल बृ. (भै.र.)

सभी प्रकार के वृद्धि रोग, आमवात, कमर तथा घुटने का दर्द, अण्डवृद्धि, अन्त्रवृद्धि, कटिशूल, सन्धिशूल, जंघाशूल, हृदय, पार्श्व, और पृष्ट शूल आदि में इसकी मालिश लाभकारी है।

बैद्यनाथ क्षार तैल (आ.सा.सं.)

इस तेल से समस्त प्रकार के कर्ण रोग कान दर्द, पीव बहना, सनसनाहट आदि विकारों को मिटाता है। इसे प्रतिदिन कान में 3–4 बूंद डालना चाहिए।

बैद्यनाथ सुगन्धित केश-तैल

आरोग्य की दृष्टि में तैल लगाने वालों को बैद्यनाथ तैलों का व्यवहार करना चाहिये, क्योंकि हमारे तैलों में विशुद्ध और उत्तम औषधि मूल द्रव्य डाले जाते हैं।

बैद्यनाथ आँवला तैल (आयु. औषधि)

सिर को ठन्डा और बालों को काला रखता है। इसे प्रतिदिन सिर के बालों में डालें।

बैद्यनाथ ब्राह्मी आंवला तैल (आयु. औषधि)

यह ब्राह्मी और आंवला से तैयार किया जाता है। मस्तिष्क को तरोताजा रखने एवं बुद्धि तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने में उत्तम है।

बैद्यनाथ महाभृंगराज केश तैल (सुगंध युक्त) (आयु.औष.)

असमय बाल का पकना, गिरना, गंज दूर कर केशों को घनें और काला बनाने के लिये सुप्रसिद्ध तेल है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ हिमानी कल्याण तैल

सिर में लगाने से यह तैल सिर दर्द नाशक, और ठन्डक देने वाला है।

बैद्यनाथ घृत

रोगानुसार अनेक जड़ी बूटियों के कल्क आदि द्वारा आयुर्वेदीय पद्धति से निर्मित घृत अत्यन्त गुणकारी और पौष्टिक होते हैं। सिद्धघृत अत्यन्त हितकारक तथा वात व पित्त विकार नाशक होते हैं। हम हमेशा शुद्ध गौ–घृत का ही निर्माण में उपयोग करते हैं।...

बैद्यनाथ अर्जुन घृत (भै.र.)

उदर वायु, दिल की धड़कन, गैस के कारण घबराहट आदि में लाभकारी है। वात–पित्तज हृदय शूल में 3 से 6 ग्राम तक मिश्री के साथ चटाकर ऊपर से गो दूध पिलावें।

बैद्यनाथ त्रिफला घृत

इसके सेवन से आँखों की ज्योति बढ़ती है तथा रक्त–विकृति रक्तस्राव, नेत्र विकार, नजला, जुकाम, (प्रतिश्याय) आदि दूर होते हैं। 5 से 10 ग्राम गौ के दूध में सेवन करायें।

बैद्यनाथ फलकल्याणघृत (भै.र.)

स्त्रियों के लिये कल्याण कारक है। बंध्यता, गर्भपात, पुरुषों की भी प्रजनन शक्ति बढ़ाता है। सेवन मात्रा 5 से 10 ग्राम

बैद्यनाथ ब्राह्मीघृत (आ.सा.सं.)

इसके सेवन से स्मरण शक्ति बढ़ती है। स्वरभंग, उन्माद आदि में लाभदायक है। सेवन मात्रा 5 से 10 ग्राम प्रातः सायं भोजन से पहले।

बैद्यनाथ आसव-अरिष्ट

आसव–अरिष्ठ की उत्तमता–आसव–अरिष्ट जितने पुराने होते हैं वे उतने ही अधिक लाभ पहुँचाते हैं। पुराने आसव–अरिष्ट का प्रभाव रोगों पर तत्काल और निश्चित होता है। हमारी निर्माण शालाओं में लाखों लीटर आसव–अरिष्ट हमेशा तैयार रहते हैं। और वे पुराने होने पर ही बिक्री के लिए भेजे जाते हैं। आसव–अरिष्टों को 15 मिली. से 25 मिली. समभाग पानी मिलाकर 2 बार भोजन के बाद प्रयोग किया जाना चाहिए।

बैद्यनाथ अशोकारिष्ट (भै.र.)

जहां आयुर्वेद शास्त्र में शब्द से अशोक वृक्ष की गुणधर्म पहचान बतायी गयी वही आधुनिक वैज्ञानिकों के विश्लेषणात्मक शोध (रिसर्च) से यह पता लगाया गया कि इस औषधि वनस्पति में निम्नलिखित प्राकृतिक रसायन तत्व पाये जाते हैं। जिसमें प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात नहीं हो है कि अशोकारिष्ट गर्भाशय की शिथिलता (दुर्बलता) से उत्पन्न होने वाले आर्तव विकार–मासिक धर्म की अनियमितता, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, कमर व पेडू का दर्द,

PDF Scanner ACE Scanner

सिरदर्द, बांझपन, समय से पहले रजोनिवृति (मोनोपॉज) का होना, मासिक धर्म के समय सम्पूर्ण आदि विकार में अकेला ही लाभदायक है। इसमें प्राकृतिक लौह, सुधा (कैल्शियम) तत्व प्रचुर मात्रा में होता है जो रक्तवर्धक, रक्तशोधक, शीतल, शीतल कषायरस युक्त होने से रक्तरोधक (बहने से रोकता) है के प्रभाव से गर्भाशय को सक्रिय व मजबूत करता है। उपरोक्त रोग लक्षण केवल स्त्रियों के होते हैं इसलिए बैद्यनाथ अशोकारिष्ट स्त्रियों के लिए सम्पूर्ण स्वास्थवर्धक टॉनिक है।

प्रमुख गुणधर्म व मात्रा–

स्त्रियों को होने वाले प्रमुख रोग, रक्त–श्वेत प्रदर, पीड़ितार्तव, पाण्डु, गर्भाशय व योनि भ्रंश, डिम्बकोष प्रदाह, हिस्टीरिया, बन्ध्यापन, गर्भाशय की शिथिलता से उत्पन्न होने वाले अत्यार्तव विकार में इसका उत्तम उपयोग होता है। 15 मिली. से 25 मिली. समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ अर्जुनारिष्ट (भै.र.)

आयुर्वेद शास्त्र में सर्वप्रथम वागभट्टाचार्य ने अर्जुन वृक्ष के विषय में लिखा कि अर्जुनछाल, गुड़ आदि मिष्ठ–मीठे पदार्थ में क्वाथ रूप से सेवन करने से हृदय रोग में उपयोगी है। हजारों वर्ष पश्चात आधुनिक वैज्ञानिकों ने इस विषय पर शोध (रिसर्च) किया और पाया किं अर्जुन वृक्ष की छाल में कैल्शियम साल्ट टेनिन ऑगेनिक एसिड आर्गेनिक इथर उपरोक्त तत्व मूत्रल व सूजन को कम करने वाले हैं। जिससे अर्जुनारिष्ट की क्रिया शरीर में चूना--कषायम्ल के समान होती है।

अर्जुनारिष्ट हृदय के लिए बलदायक, रक्ताभिश्रण क्रियावर्धक तथा रक्तदाव (ब्लडप्रेशर) को अनियमित (कम–ज्यादा) नहीं होने देता, अर्जुनछाल में प्राकृतिक कैल्शियम की मात्रा विशेष होने से यह रक्त सेलों को टूटने–जमने व विकृत होने से बचाता है तथा रक्तवर्धक गुणयुक्त अस्थियों, हड्डियों को भी सुदृढ़ रखती है।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

रक्त की कमी के कारण हृदय धड़कता है और शरीर में पसीना आने लगता है मुंह सूख जाता है, नींद कम आती है, बेचैनी रहती है, शरीर में रक्त संचार ठीक से नहीं होता है। रोगी को मृत्यु भय सताने लगता है ऐसी स्थिति में इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक सिद्ध होता है। 15 मिली. से 25 मिली. दो बार समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद लें।

बैद्यनाथ अभयारिष्ट (भै.र.)

आयुर्वेद प्रर्वतक महर्षियों ने हरड की सात जातियों का उल्लेख किया है। विजया रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, शास्त्रों में हरड की प्रशंसा की गयी है कि हरीतकी "मनुष्याणा मातेव हितकारिणी। कदाचित कुप्यते माता नोउदर्य हरीतकी। अर्थात् हरड मनुष्यों के लिए माता के समान हित करने वाली है किन्तु माता कभी–कभी क्रोधित हो जाती है मगर पेट में गयी हरीतकी (हरड़) कभी कुपित अथवा हानि नहीं पहुंचाती। बैद्यनाथ अभयारिष्ट में अभय–बड़ी हरड विशेष मात्रा में तथा मुनक्का भी सम्पूर्ण

ACE Scanner

उदर रोग व बवासीर –अर्श (पाइल्स) की सभी विकृतियों को दूरकर स्थायी कब्जियत दूर कर आरोग्य प्रदान करता है।

विशेष उपयोग एवं सेवन मात्रा–

सभी तरह की बवासीर की प्रसिद्ध दवा है। कब्जियत, मन्दाग्नि, आदि उदर रोगों को समूल दूर कर अग्नि को बढ़ाता है और पेट की गैस को कम करता है। 15 मिली. से 25 मिली. तक सुबह–शाम समान भाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ अमृतारिष्ट (भा.भै. रत्नाकर)

अमृता नाम गिलोय का है बैद्यनाथ अमृतारिष्ट में गिलोय की प्रधानता है इसलिए इसमें शामक गुण की प्रधानता है। एक यही वनस्पति है जो तीनों दोष (वात–पित्त–कफ) को अपने शामक गुणों से सभी प्रकृति मनुष्यों को सभी प्रकार के रोगों में दिया जा सकता है। शामकगुण प्रधान का अर्थ है जो दोष या रोग बढ़ा हो, उसे घटाना तथा जिस बल की शरीर में कमी होने से रोग उत्पन्न हुआ उस तत्व की वृद्धि करना, ज्वर तथा जीर्ण ज्वर एवं वातरोग की प्रधानता के कारण शरीर की सप्तधातुए क्षीण हो जाती हैं उस अवस्था में गिलोय (अमृतारिष्ट) शरीर के तापमान को नियमित कर रोग प्रतिरोधक शक्ति (इम्यूनिटी पावर) की शरीर में वृद्धि कर रोग दूर करता है।

बैद्यनाथ अमृतारिष्ट सेवन विधि –

नये पुराने सभी प्रकार के ज्वर (बुखार) में बैद्यनाथ फीवरकट टेबलेट 2–2 टैब तथा बच्चों को आधी मात्रा में सुपाच्य आहर के बाद दें। विषम ज्वर–मलेरिया में महासुदर्शन घन बटी 2–2 टेबलेट प्रतिदिन दो बार । किसी भी बीमारी के बाद की कमजोरी (दौर्बल्यता) में बैद्यनाथ अश्वगंधारिष्ट स्पेशल 10से 15 मिली0 दवा सामान मात्रा जल के साथ भोजन के बाद दें। बच्चों को अरविन्दासव 5 से 10 मिली0 (1 से 2 चम्मच) समान भाग जल भोजन के बाद दें। आमवात–संधिवात ज्वर की अवस्था (रूमेटिक ज्वर) में रूमार्थों टेबलेट 1–1 टेबलेट प्रतिदिन दो बार दें।

विशेष गुणधर्म उपयोग व सेवन मात्रा–

बार–बार आने वाले ज्वर, जीर्ण ज्वर, पित्त ज्वर, तथा ज्वरोत्तर, दुर्बलता में विशेष लाभ करता है। 15 से 20 मिली. दो बार समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ अरविन्दासव (भै.र.)

बालकों के सूखा (सुखण्डी) रोग, अतिसार, बदहजमी, आदि रोगों को नष्ट करता है। 20 से 50 बूंद तक 3–4 बार पानी मिलाकर दें। अन्न आहार लेने वाले बच्चों के लिए।

बैद्यनाथ अश्वगंधारिष्ट (भै.र.)

इसमें असगन्ध, सफेद मूसली, मंजीठ, मुलैठी, सरिवा एवं चित्रकमूल, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, प्रियंगु जैसे रसायन स्नायुमण्डल (नर्वससिस्टम) शक्तिवर्धक गुण प्रधान वनस्पतियों के सम्मिश्रण से निर्मित बैद्यनाथ अश्वगंधारिष्ट मनुष्य शरीर के लिए विशेष महत्व रखता है। इसके सेवन से रक्तवाही–वातवाही नाड़ी मण्डल एवं हृदय मस्तिष्क–वृक्क

ACE Scanner

पाचन संस्थान को रोग से आरोग्यता एवं स्वस्थ्य अवस्था में सेवन करने से दीर्घ जीवन–आयु वृद्धि की प्राप्ति होती है।

निम्न अवस्था में सेवन करावें –

1– बेहोशी–चक्कर एवं स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग में – बैद्यनाथ अश्वगंधारिष्ट के साथ बैद्यनाथ सारस्वतारिष्ट 10 से 15 मिली0 (2 से 3 चम्मच) समान भाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

2– हृदय (दिल) की धड़कन (हार्टवीट) में– हृदयार्णय रस 2 गोली याकूती रस 1 टैब के साथ दें।

3– अनिन्द्राएवं चित भ्रम (घबराहट) में – शंखपुष्पी सीरप 2 चमच 10 मिली0 स्ट्रेसविन कैपसूल के साथ सेवन करावें।

4– स्मृति भ्रंश (याद–दाश्त की कमी) में बैद्यनाथ ब्रेन टैब0 2 टैब०, शंखपुष्पी सीरप 10 मिली0 जल के साथ प्रतिदिन दो बार सेवन करें।

5– सिरदर्द व रक्ताल्पता में – शिरः शूलादि वज्र रस 2 गोली पंचासव 10 मिली0 (2 चम्मच) सम भाग जल के साथ प्रतिदिन दो बार सेवन करें।

6– स्नायु दौर्बल्य (नर्वसवीकनेस) एवं शारीरिक शिथिलता व वृद्धावस्था में शिलाजीत कैपसूल 1–1 कैपसूल भोजन के बाद समभाग जल के साथ दें।

7– बहुमूत्र (बार–बार पेशाब) होने पर तारकेश्वर रस 1 गोली शिलाजित्वादि वटी 2 टैबलेट के साथ भोजन के बाद समभाग जल के साथ दें।। अश्वगंधारिष्ट मूर्छा, स्त्रियों का हिस्टीरिया रोग, दिल की धड़कन, बेचौनी, चित्तभ्रम, याददाश्त की कमी, बहुमूत्र, मंदाग्नि, कब्जियत, सिर दर्द, स्नायुदौर्बल्य, हर प्रकार की कमजोरी, बुढ़ापे की शिथिलता आदि रोगों में लाभकारी है। 15 मिली. से 25 मिली. तक समान भाग जल के साथ दें।

बैद्यनाथ उशीरासव (आ.सा.सं.)

रक्त पित्त की यह खास दवा है और कहीं से भी खून आने को रोकता है, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी, अर्श, पित्त विकारों में लाभदायक है। 15 मिली. से 25 मिली. समान जल के साथ दें। (3 से 4 चम्मच)

बैद्यनाथ कनकासव (आ.सा.सं.)

इसमें धतूरा पंचाग पड़ता है। कफवात प्रधान नये पुरान कास, दमा, श्वास में उपयोगी है। 15 से 20 मि. ली. भोजनोतर 2 बार समभाग पानी मिलाकर दें। यह श्वास नली संकोच एवं सूजन दूर करता है।

बैद्यनाथ कुटजारिष्ट (भै.र.)

इसके सेवन से पुराने संग्रहणी, अतिसार, कृमि, आमाश, अग्निमांद्य, अरूचि, दुर्बलता

PDF Scanner ACE Scanner

जीर्णज्वर, रक्त गिरना, खाँसी आदि रोग नष्ट होते हैं। 15 मिली. से 25 मिली. समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद सुबह शाम दें।

बैद्यनाथ कुमारी आसव (शा.सं.)

ताजा अच्छा पका हुआ और रस भरा ग्वारपाठा (घीक्वार) (एलोवेरा) से बैद्यनाथ कुमारी आसव का निर्माण होता है। ग्वारपाठा से निर्मित यह औषधि कल्प निश्चित प्रभावकारी व असरदायक है। इसके सेवन से मलशुद्धि होती है। पेट के तमाम रोग दूर होते हैं और शरीर में संचित रोग जनित तत्व अथवा कारण निकल जाते हैं। कुमारी आसव के सेवन से जराग्नि (पाचक रस) प्रदीप्त होकर भोजन का पाचन व्यवस्थित रूप से होता है। ग्वारपाठा को एलुवा मुसब्बर (एक्स्ट्रेटड एलोवेरा) कहते हैं। बहुत–सी फार्मेसियां इसी सत्व को गलाकर कुमारी आसव का निर्माण करते हैं किन्तु यह विशेष गरम तासीर का होता हैं और ताजा ग्वारपाठा से निर्मित आसव की अपेक्षा न्यून गुणकारी होता है।

कुमारी आसव रोगानुसार सेवन विधि –

1– गुल्म एवं परिणामशूल में – विडंगासव 5 मिली के साथ कुमारी आसव 10 मिली0 समभाग जल के साथ भोजन के बाद प्रतिदिन दो बार दें।

2– यकृत प्लीहर विकार में – कुमारी आसव को बैद्यनाथ लिवरेक्स टेबलेट 2–2 टैब भोजन के बाद दें (कुमारी आसव समभाग जल के साथ दें।

3– आंत्र–वायु–मेदोवृद्धि (मोटापा) में – बैद्यनाथ आरोग्यवर्धनी वटी 2–2 गोली भोजन के बाद दें।

4– जुकाम, श्वास, दमा, खांसी, भगन्दर, पुराना ज्वर में अमृतारिष्ट के साथ दें।

5– प्रमेह, अपस्मार एवं स्मृति नाश (याददाशत की कमी) में – अश्वगंगारिष्ट के साथ दें।

6– मूत्रकृच्छ, पेशाब की जलन व कमी शुक्रदोष, अश्मरी, पथरी, गर्भाशय के दोष में चन्दनासव 15 मिली0 चन्द्रप्रभा वटी 1 टैब पथरीना 1 टैब0 समभाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

विशेष गुणधर्म–

बैद्यनाथ कुमारी आसव के सेवन से गुल्म, परिणाम–शूल, यकृत, प्लीहा, आन्त्राश्रित वायु, मेदों वायु, जुकाम, श्वास, दमा, खाँसी, अग्निमांद्य कफ और मन्दज्वर, पाडु, पुराना ज्वर कमजोरी, प्रमेह, अपस्मार, स्मृति नाश, मूत्रकृच्छ, शुक्र दोष, अश्मरी (पथरी), गर्भाशय के दोष आदि में लाभकारी है। 15 मि.ली. से 25 मि.ली. तक समभाग जल मिलाकर सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ कुमारी आसव नं. ३ (आ.सा.सं.)

यह बालकों के यकृत (लीवर) के रोग, रक्ताल्पता, उदरवायु (गैस) कब्जियत में लाभकारी

ACE Scanner

है। 5 से 15 मि.ली. 2 बार समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ खदिरारिष्ट (भै.र.)

इसमें खैरसार की लकड़ी (अकेशिया कटेचु) विशष मात्राओं में और प्रमुख द्रव्य है। चिकित्सा विज्ञान में खैरसार शीतल, कड़वा, कषैला रस प्रधान एवं चर्मरोग, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, रक्तपित्त, घाव, प्रमेह, मेद (चर्बी) कृमि, रोगनाशक होता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसका रसायनिक विश्लेषण कर पाया कि खैरसार में (सार सत्व) कत्था 35 प्रतिशत और 57 प्रतिशत कषाय द्रव्य (टैनिन) इसमें एक कैटेपीन रसायनिक तत्व भी पाया जाता है जिसकी क्रिया शरीर के "लस्सी का ग्रंथियों" पर विशेष होती है।

आयुर्वेद मतानुसार यह तिक्त (कड़वा) कषाय रस कटुविपाक शीतवीर्य और कुष्ठ चर्मरोग नाशक प्रभावकारी है। कुष्ठ–चर्मरोग के अतिरिक्त खदिरारिष्ट प्रमेह उदरकृमि ज्वर सूजन, कफ–खांसी, मुखरोग, दन्तरोग में भी लाभदायक है।

सेवन विधि रोगानुसार –

1–कृष्ट, चर्मरोग, वातरक्त, एग्जिमा, अर्श रोगों में रक्तशोधक वटी एवं कैशोर गुग्गुल 1–1 गोली भोजन के बाद प्रतिदिन दो बार दें।

2–उदर कृमि ज्वर व सूजन में अभयारिष्ट मण्डूर भस्म के साथ कफ–खांसी व मुखरोग में वासारिष्ट एवं खदिरादि वटी के साथ दें।

कुष्ठ रोग, क्षुद्रकुष्ठ (खाज–खुजली), फोड़ा–फुन्सी, चकत्ते आदि सब पकार के चर्म रोग व रक्त–विकारों में उपयोगी है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. 2 बार समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दें। खदिरारिष्ट का सेवन करावें।

बैद्यनाथ चन्दानासव (भा.भै. रत्नाकर)

इसमें चन्दन सफेद, चन्दनलाल, सुगन्धवाली, "स्वरपनवका", मोचरस, प्रियंगु आदि अनेक शीतल पित्त शामक मूत्रल एवं पित्तशोधक, उदर शुद्धि एवं कोष्टशुद्धि कारक औषधियों का मिश्रण है। आयुर्वेद में चन्दन का गुण, वर्णीकर में कहा है कि यह लघु–रुक्षगुण, कड़वा अनुमधुर रस, पचाने पर कटु एवं शीतवीर्य (तासीर) होने से यह कफ–पित्त शामक है। नाड़ी संस्थान के लिए मेध्य है द्य आमाशय तथा वृक्क मूत्र संस्थान के लिए मूत्र की जलन प्रमेह व गुर्दे की सूजन में लाभदायक है। पाचन संस्थान (डायजेस्टिव सिस्टम) पर इसका प्रभाव जलन को कम करने मूत्रल व शोथ (सूजन) नाशक है। चन्दनासव स्त्रियों के रक्त प्रदर व श्वेत प्रदर व श्वेत प्रदर में भी विशेष लाभदायक है।

विशेष उपयोग व मात्रा–

इसके सेवन से पेशाब में धातु जाना, स्वप्न दोष, कमजोरी, पेशाब की जलन, श्वेत, प्रदर प्रमेह, उपदंश, अग्निमांद्य, सूजाक, आदि में लाभदायक है। यह हृदय को बल देने वाला, पौष्टिक तथा बलवर्द्धक है। चंदनासव से दाह शंत होकर पेशाब खुलकर होने लगता है। 15 से 25 मिली. बराबर जल मिलाकर भोजन के बाद सुबह–शाम दें।

ACE Scanner

बैद्यनाथ जीरकाद्यारिष्ट (आ.सा.सं.)

हाथ–पाव की जलन, अतिसार, संग्रहणी, अरूचि, अग्नि को प्रदीप्त करने वाला, बिष दोष शासक तथा गर्भाशय की शुद्धि करता है। मन्दाग्नि के विकारों को दूर करता एवं भूख बढ़ाता हैं और पाचन शक्ति को प्रबल करता है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. 2 बार समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ दशमूलारिष्ट (भैषज्य रत्नावली)

दशमूलारिष्ट स्त्री–पुरुष सभी के लिए वातनाशक दुर्बलता नाशक, धातुक्षीणता, स्नायु दौर्बल्य, सर्वागवेदना (मसक्यूलर पेन) में भी लाभदायक है। आयुर्वेद की दिव्य औषधि द्रव्य (अष्टवर्ग) सहित इसमें दशमूल के द्रव्य व मुनक्का–मधु सहित 66 द्रव्यों से निर्मित किया गया है जिससे यह मनुष्य के शरीर में सम्पूर्ण नैसर्गिक (प्राकृतिक) तत्वों की सम्पूर्ति करता है। पुरुषों की धातुक्षीणता और स्त्रियों के प्रसवोत्तरकाल (आफ्टर डिलेवरी) में यह प्रमुख औषधि दीपन–पाचन, पौष्टिकता में सर्वश्रेष्ठ है।

विशेष उपयोग व मात्रा–

दशमूलारिष्ट स्त्रियों के लिये अमृत तुल्य है। इससे धातुक्षय, खाँसी, श्वास, बवासीर, उदर रोग, प्रमेह, अरूचि, पांडु, मूत्रकृच्छ, प्रसूत रोग, गर्भाशय की अशुद्धि, कामला, श्वेत प्रदर आदि रोग नष्ट होते हैं। 15 मि.ली. से 20 मिल. ली. समभाग जल से भोजन के बाद सुबह–शाम दें।

बैद्यनाथ द्राक्षासव (भारत भैषज्य रत्नाकर)

द्राक्षा (मुनक्का) मृदुविरेचक, वात–पित्त नाशक, कफ़दोष, कास–श्वास एवं क्षय (यक्ष्मा) रोग में लाादायक, पेशाब की जलन, अरूचि, भूख की कमी व कब्ज दूर करता है। द्राक्षासव सभी प्रकृति के मनुष्यों व सम्पूर्ण उदर रोग, मूत्र दोष, पाचन संस्थान में लाभदायक है। यह हृदय रोग, दुर्बलता, नेत्र रोग, पाण्डु–कामला, रक्ताल्पता, ज्वर–मूत्रकृच्छ, रक्तपित्त, वातरक्त में रोगनाशक एवं पुष्टिकारक, स्वर को शुद्ध करने वाला, मल–मूत्र निसारक और वीर्य–रक्त धातु वृद्धिकारक है।

द्राक्षासव हाजमे के लिए भोजन के बाद तथा भूख की कमी में भोजन से 10 मिनट पहले ठण्डे पानी के साथ सेवन करना चाहिए। मूत्रकृच्छ जलन–प्यास तथा मूत्र लाने के लिए 15 से 20 मिली0 (3 से 4 चम्मच) दवा चार गुना पानी में मिलाकर दें।

सेवन मात्रा एवं गुणधर्म–

यह बढ़िया अंगूरी द्राक्षों से तैयार किया हुआ सुमधुर टॉनिक है। इसे किसी भी मौसम में सेवन किया जा सकता है। यह भूख बढाता, दस्त साफ लाता, ताकत पैदा करता, नींद लाता तथा दिल–दिमाग में ताजगी पैदा करता है। कफ, खाँसी, सर्दी में भी लाभकारी है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल से भोजन के बाद सुबह–शाम दें।

द्राक्षासव विशेषकर मधुर एवं स्वल्प, अम्ल पाचक, अग्नि वर्धक होने से दीपन–पाचन, कब्जनाशक, बलदायक, पित्तशामक एवं फेफड़े, यकृत (लीवर) व मूत्राशय–जीर्ण ज्वर में लाभदायक है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ द्राक्षासव स्पेशल

यह दीपन–पाचन बलवर्धक द्राक्षा–स्पेशल क्वालिटी की मुनक्का शक्कर के अतिरिक्त 17 से भी अधिक चुनिन्दा औषधि द्रव्यों (जड़ी–बूटियों) से प्रतिष्ठान के औषधि निर्माण विशेषज्ञों ने निम्नलिखित गुणकारी औषधि द्रव्यों को इस कल्प में सम्मिलित किया है। शास्त्रोक्त द्राक्षासव की अपेक्षा इसमें स्पेशल क्वालिटी की मुनक्का (द्राक्षा) को अधिक मात्रा में लिया। अश्वगंधा, विधारा आदि कंकोल व रेणुका बीज।

सम्मिलित द्रव्यों के गुण –

द्राक्षासव स्पेशल में अश्वगंधा से शरीर को सम्पूर्ण स्नायु मण्डल (नर्वसिस्टम) रक्त गति संचार, पोषक, वीर्य वर्धक और स्त्री–पुरुषों के कमर दर्द व थकान में लाभदायक। विधारा–वातदोष नाशक, बलवर्धक कफ दोषशामक है।

विदारीकन्द – शीतल–वात–पित्त दोष विकार नाशक, शुक्र–वीर्य स्तम्भक–धातु वृद्धिकारक पुष्टि एवं वजन (ग्रौथ–वेट) बढ़ाता है।

चतुर्जात – (दालचीनी– इलायची, तेजपत्र, नागकेशर) नाड़ी दौर्बलय नाशक एवं समशीतोष्ण गुणकारक, वातानुमोन, मूत्रल अरूचि, उदरशूल एवं क्षय–श्वास–कास, अर्श रोग नाशक गुणयुक्त है।

लौंग – कफ–पित्त जन्य विकार नाशक, शीतवीर्य शुक्र स्तम्भक रूचिकारक दीपन गुणकारक है।

रेणुका – (सम्हालू बीज) दीपन आंव पाचक, नेत्र, कर्ण, त्वचा रोग नाशक, शोथ–सूजन कफवात विकार नाशक बलदायक, गुणकारक है।

विशेष गुणधर्म–उपयोग एवं सेवन मात्रा –

बढिया अंगूरी द्राक्षों से बने हुये द्राक्षासव में अश्वगंध, विधारा, विदारी कदं आदि पौष्टिक और शक्तिशाली द्रव्य मिलाकर यह परम पौष्टिक दवा तैयार की जाती है। उपरोक्त द्राक्षासव के सभी गुण इसमें हैं। 2 से 5 चम्मच तथा बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद सुबह–शाम दें। बच्चों को अधी मात्रा दो गुना जल मिलाकर दें।

बैद्यनाथ द्राक्षारिष्ट (भा.भै.रत्नाकर)

द्राक्षासव के समान ही इसके गुण है। कफ, खाँसी, कब्जियत तथा कमजोरी में इसका विशेष रूप से व्यवहार किया जाता है। 15 से 20 मि.ली. 2 बार समभाग जल से भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ देवदार्वाद्यारिष्ट (भै.र.)

यह स्त्रियों के प्रदर, रक्त–शोधक तथा मूत्र दोष नाशक, अर्श संग्रहणी, वातरोग व प्रसूत के बाद होने वाले विकारों में लाभकारी है। 15 मि.ली. 2 बार समभाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ पिप्पल्यासव (भै.र.)

इसके सेवन से मन्दाग्नि कुकर, कास, गुल्म, संग्रहणी तथा कमजोरी दूर होती है। 15 मि. ली. से 20 मि.ली. समान जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ पत्रांगासव (भै.र.)

स्त्रियों के प्रदर, ज्वर, रक्ताल्पता, अग्निमांद्य आदि विकार दूर करता है। 15 से 20 मि.ली. समान जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ पुनर्नवारिष्ट (चरक संहिता)

सूजन (शोथ) उदर रोग, यकृत–प्लीहा वृद्धि आदि रोगों को दूर करता है। यह विशेषतः मूत्रल तथा सारक है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ शृंगराजासव (आ.सा.सं.)

अम्ल–पित्त, कमजोरी और सभी प्रकार की खाँसी में गुणकारी है। यकृत लीवर को क्रियाशील बनाता है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ बलारिष्ट (भै.र.)

वातरोग नाशक, स्नायु पुष्टिकारक तथा बलवर्द्धक वातनाड़ियों की क्रिया को पुनः जागृत कर पेशियों के वात मिटाता है तथा पेशियों को सूखने से बचाता है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल से भोजन के बाद सुबह शाम दें।

बैद्यनाथ बबूलारिष्ट (भै.र.)

यह सूखी खाँसी, उरःक्षत, रक्त–पित्त, अतिसार आदि दूर करता है। यक्ष्मा की खाँसी में उपयोगी है। 15 से 20 मि.ली. समभाग जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ वासारिष्ट (भा.भै.रत्नाकर)

ज्वर–युक्त खाँसी, खाँसने के साथ बलगम और खून का निकलना, सूखी खाँसी, दमा तथा रक्त पित्त में लाभकारी है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. सुबह–शाम समान जल से भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ विडंगासव (भै.र.)

पेट में होने वाले सभी प्रकार के कृमि–रोगों की अच्छी औषधि है। गुल्म, भगन्दर आदि में भी गुणकारी है। 15 मि.ली. से 25 मि.ली. समभाग जल मिलाकर सबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठाद्यारिष्ट (आ.सा.सा)

यह रक्त शुद्ध करने में श्रेष्ठ है। खाज–खुजली, श्लीपद (फील–पांव), रक्त विकार में अच्छा लाभ करता है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल से सुबह–शाम भोजन के शाद दे।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ मुस्तकारिष्ट (भा.भै.र.)

पतले दस्त को रोकता है। इससे अजीर्ण, भूख न लगना, संग्रहणी अच्छे होते हैं। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. समभाग जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ रोहितकारिष्ट (भा.भै.र.)

यकृत (लीवर) और तिल्ली के बढ़ जाने पर विशेष कार्य करता है। पाण्डु रोग, अग्निमांद्य, बवासीर, आदि रोगों को नष्ट करता है। 15 से 25 मि.ली. 2–3 बार समभाग जल से दें।

बैद्यनाथ लोध्रासव (चरक संहिता)

यह स्त्रियों के लिये बहुत उपयोगी है। पेशाब में जलन, प्रदर आदि में बहुत लाभकारी है। 15 से 20 मि.ली. समभाग जल से सुबह–शाम भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ लौहासव (आ.सा.सं.)

रक्ताल्पता (रक्तकण–आर0बी0सी0 की कमी) शरीर पीला हो जाना, कोष्टबद्धता, कब्ज, शरीर में सूजन होने लगती है, ऐसी अवस्था में लोहासव के सेवन से कब्ज मिटकर भूख लगने लगती है। शरीर में रक्त का निर्माण होने लगता है तथा शरीर की सूजन कमजोरी दूर होकर यकृत व तिल्ली का विकार मिट जाता है। लोहासव किसी भी कारण से रक्ताल्पता व कमजोरी, जीर्ण ज्वर–अग्निमांघ के कारण हुई रक्ताल्पता में शीघ्र लाभदायक है।

सेवन व प्रयोग विधि –

रक्ताल्पता व कामला (पीलिया) में लोहासव के साथ 5 से 10 मिली कुमारी आसव को भोजन के बाद समभाग जल से सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

शोथ / सूजन व त्वचा रोग में –

लोहासव के साथ 2–2 टेबलेट आरोग्यवद्धिनी वटी और पुनर्नवारिष्ट 10 से 15 मिली समभाग जल के साथ भोजन के बाद दें। जीर्ण ज्वर में– अमृतारिष्ट 10 मिली0 समभाग जल के साथ दें।

अर्श / बवासीर में –

अभयारिष्ट 10 मिली0 पायराइड्स टेबलेट 2–2 टेबलेट भोजन के बाद जल के साथ दें।

आमवात व संधिवात की रक्तल्पता में –

लोहासव के साथ महारास्नादि काढ़ा 10 मिली0 एवं बैद्यनाथ आर्थो टेबलेट रूमार्थो टेबलेट 1–1 टेबलेट भोजन के बाद समभाग जल के साथ देने से आशातीत लाभ होता है।

हृदयरोग तथा रक्तदोष में –

अर्जुनारिष्ट 10 मिली0 नागार्जुनभ्र रस–एक से 2 गोली भोजन के बाद दें। कास–श्वास में लोहासव के साथ द्राक्षासव स्पेशल 10 से 15 मिली0 समभाग जल के साथ दें।

विशेष गुणधर्म व मात्रा –

लोहासव रक्ताल्पता, जीर्ण ज्वर, कामला, (पीलिया) पाण्डु, यकृत, प्लीहा, अग्निमांद्य, दमा, कास, क्षय आदि में लाभकारी है। 10 से 15 मि.ली. 2 बार भोजन के बाद समभाग जल मिलाकर दें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ सारस्वतारिष्ट (भा.भै.रत्नाकर)

स्मरण शक्ति, दिमागी ताकत, कान्ति, बुद्धि बढ़ाने में श्रेष्ठ है। मानसिक, शारीरिक कमजोरी, नींद न आना, स्वर भंग, हकलाना, कम सुनाई देना आदि में लाभकारी हैं। 10 से 15 मि.ली. सुबह–शाम भोजन के बाद समान जल मिलाकर दें।

बैद्यनाथ सारिवाद्यारिष्ट (भा.भै. रत्नाकर)

यह रक्त शुद्धि की प्रसिद्ध दवा है। फोड़े–फुन्सी, खाज–खुजली, चकत्ते आदि रक्त विकार, भगन्दर, हाथ–पेर, आँख की जलन, प्रमेह, आमवात में लाभकारी है। 15 से 20 मि.ली. दो बार समभाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ सारिवाद्यासव (भै.र.)

उपर्युक्त सारिवाद्यारिष्ट के समान सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी है।। 15 से 20 मि.ली. तक सुबह–शाम समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद दें।

बैद्यनाथ प्रवाही क्वाथ

आयुर्वेद में क्वाथ का बहुत महत्व है किन्तु बनाने में कठिनाई के कारण इसका व्यवहार बहुत कम हो पाता है। अतः कठिनाई से बचने के लिए बैद्यनाथ द्वारा कुछ विशेष गुणकारी क्वाथों के प्रवाही क्वाथ आसव–अरिष्ट विधि से तैयार किये गये हैं।

बैद्यनाथ दशमूल काढा (आ.सा.सं.)

वात–रोगों में तथा प्रसव के बाद लाभदायक है। मुंह सूखना, हाथ पांव आदि ठंडे पढ़ जाना, चक्कर आना, पसीना अधिक आना, श्वास, खाँसी आदि में भी यह क्वाथ बहुत गुणकारी है। यह क्वाथ आवश्यकता अनुसार 2–3 बार दें।

सेवन मात्रा – 15 से 20 मिली. समभाग जल के साथ दें।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठादि काढा (आ.सा.सं.)

इस काढ़ा में घटक द्रव्य मजीठ, नागर मोथा, गिलोय, सोंठ, हल्दी, वायविडंग, चिरायता विजयसार, खैरसार, चन्दनलाल, बावची, पित्त पापड़ा, नीम, त्रिफला आदि 45 प्रमुख रक्तशोधक चर्मरोग नाशक पित्त कफ दोष विकार नाशक रक्तवर्धक, उदर रोग, नेत्र रोग मेद–प्रमेह आदि विकार नाशक है।

सेवन रोगानुसार –

1– कुष्ठ रोग में– महामंजिष्ठादि काढ़ा 15 से 20 मिली0 (3 से 4 चम्मच) गन्धक रसायन 1 से 2 टेबलेट (250 से 500 मिग्रा०) भोजन के बाद समभाग जल के साथ दें।

2– वातरक्त (गाउट) में– कैशोर गुग्गुल 2 गोली अमृतारिष्ट 10 मिली के साथ दें।

3– श्वेत सुनहरी (लिकोडर्म–सफेद दाग) में– रक्तशोधक वटी 1 से 2 टेबलेट भोजन के बाद दें।

4– उपदंश व मूत्रदोष में– चन्दनासव 10 मिली0, चन्द्रप्रभा वटी 2 टेबलेट भोजन के

ACE Scanner

बाद समभाग जल के साथ दें।

5– फोड़ा–फुसी, वृण/घाव एवं अत्यधिक दुर्बलता भी हो तो शिलाजीत कैपसूल 1 से 2 कैपसूल भोजन के बाद दें।

6– एलर्जी–शीतपित्त (चकत्ते) त्वचा रोग में– सर्वदोषान्तक गुटिका 2–2 टैब0 व हरिद्राखण्ड 5 ग्राम गर्म जल के साथ भोजन के बाद प्रतिदिन दो–तीन बार दें।

7– मेद (चर्बी) घटाने के लिए– आरोग्य वर्धनी वटी एवं योगराज गुग्गुल 1 से 2 टेबलेट भोजन के बाद समभाग जल के साथ दें।

8– श्लीपंद (फील–हाथीपांव) में– नित्यानंद रस 1 से 2 गोली भोजन के बाद समभाग जल के साथ दें।

9– नेत्ररोग व रक्ताल्पता में– लोहासव 10 मिली0 एवं सप्तामृत लौह. 1 से 2 टेबलेट प्रतिदिन दो बार।

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

इस महामंजिष्ठादि क्वाथ के सेवन से महाकुष्ठ, क्षुद्र कुष्ठ, वातरक्त, वात व्रणदाह, उपदंश, शरीर पर लाल लाल चकत्ते पड़ जाना, मेद रोग, श्लीपद (फील पांव) आदि दोष नष्ट होते हैं। सेवन मात्रा 15 से 20 मिली. समभाग जल के साथ भोजन के बाद दें।

वैद्यनाथ महारास्नादि काढ़ा (आ.सा.सं.)

सर्वांग वात, अर्धांगवात, संधिवात, मेदोगत वात, कम्पवात, अपबाहुक, गृधसी, आमवात, शुकदोष योनि रोग, वन्ध्यादोष, आदि नष्ट होते हैं। 2 से 4 चम्मच काढ़ा दुगना पानी मिलाकर सुबह–शाम दें।

औषधि शर्बत अर्क

निर्माण परिचय –

जिन औषधि द्रव्यों का अर्क निकाला जाता है उनको आठ गुना जल में 12 घण्टे पहले से भिगोकर रखा जाता है। जो मृदु मुलायम द्रव्य होते हैं जैसे – सौंफ, अजवायन, जीरा, शंखपुष्पी, ब्राहमी, भृंगराज, गुलाब, फूल, गुलवनप्सा, मकोय, पटोल पत्र आदि को साबूत (बिना कूटे) एवं जो कठिन/कठोर द्रव्य जैसे–खदिरकाट, लाल चन्दन, मजीठ, सफेद चन्दन, गिलोय, उस्वा, अनन्तमूल एवं चोपचीनी आदि को इमाम दस्ते में मोटा दर–दरा कूटकर (जौकुट) तैयार कर चूर्ण रूप में 8 गुना जल में डालकर नाडिका यंत्र (भावका) अथवा आधुनिक–"डिस्टलेशन प्लांट" द्वारा अग्नि पर मध्यम आंच में कुल जल का 2/3 भाग अर्क निकालकर यंत्र की अग्नि–ताप हटा दी जाती है।

विशेषता –

अर्क स्वच्छ, साफ, परिश्रुत जल (डिस्टिल वाटर) की तरह पारदर्शी एवं जिस द्रव्य का अर्क निकाला जाता है उसकी सुगन्ध (खुश्बू) युक्त होता है।

ACE Scanner

बैद्यनाथ शंख द्राव

यह सभी प्रकार के उदर रोग, अजीर्ण, मन्दाग्नि, गुल्म, शूल, प्लीहा वृद्धि में गुणकारी है। पेट दर्द, मूत्रकृच्छ और पथरी में इसके प्रयोग से पेशाब साफ होता है। 3 से 6 बूंद तक दिन में दो बार जल मिलाकर दें।

बैद्यनाथ महाशंख द्राव (Dimaterसोरा)

इसमें सभी गुण महाशंख द्राव के हैं। अजीर्ण, मन्दाग्नि, पेट दर्द, गुल्म, यकृत, प्लीहा वृद्धि आदि में लाभकारी हैं।

बैद्यनाथ सौंफ अर्क (आ०सा०सं०)

घटक द्रव्य–सौंफ बीज

गुण और उपयोग–

संग्रहणी (स्प्रू) अतिसार, प्रवाहिका, आंवदोष, अरूचि, अम्लपित्त पेट की जलन में लाभदायक।

सेवन मात्रा– 20 मिली० से 80 मिली० प्रतिदिन 2–3 बार अकेले ही अथवा दही/मट्ठा, छांछ के साथ दें।

बैद्यनाथ अजवायन अर्क (आ०सा०सं०)

घटक द्रव्य–अजवायन बीज

गुण और उपयोग–

इस अर्क से सेवन से उदरशूल (पेट दर्द), मंदाग्नि, अजीर्ण (अपच) आंवदोष, गुल्म तथा कफ विकार नष्ट होते हैं।

सेवन मात्रा–10 से 50 मिली० प्रतिदिन दो–तीन बार समान भाग जल के साथ दें।

बैद्यनाथ उस्बा अर्क (आ०सा०सं०)

घटक द्रव्य–उस्बादेशी (अनन्त मूल)

गुण और उपयोग–

इस अर्क को लगातार कुछ समय सेवन करने से रक्तदोष (खून की खराबी) एवं त्वचा (चर्मरोग) खाज–खुजली, फोड़ा–फंसी आदि रोग दूर हो जाते हैं। उपदंश, शरीर में लाल चकत्ते पड़ना, चेहरे आदि त्वचा पर काले दाग मिटाकर रक्त/खून शुद्ध करने के लिए "सार्सापारीला" जैसा श्रेष्ठ रक्तशोधक हैं।

सेवन मात्रा–उस्बा अर्क 20 से 50 मिली० तक समान भाग जल में मिलाकर सुबह–शाम प्रतिदिन दो बार दें।

बैद्यनाथ गोरखमुण्ड अर्क (आ०सा०सं०)

घटक द्रव्य–गोरखमुण्डी फूल

ACE Scanner

गुण और उपयोग –

इस अर्क के सेवन से रक्तादि धातुओं की वृद्धि होकर फोड़ा–फुसी, दाग चकत्ते, विसर्प (एक प्रकार का फेलेन वाला चर्मरोग) एवं कुष्ठ रोग आदि विकार नष्ट होते हैं इसमें नैसर्गिक एक तिक्तक्षार तत्व (स्फिरैन्थीन) पाया जाता है। यह त्वचा और "लसीका" की विकृति को नष्टकर त्वचा का रंग सुधारता है तथा विषनाशक भी है। यह उपदंश एवं अपची (मांस की गांठ) आदि कष्टदायी रोगों की उपयुक्त औषधि है।

सेवन मात्रा –

गोरखमुण्डी अर्क 20 मिली0 से 50 मिली0 दिनरात में (4 से 10 चम्मच) चार बार समान भाग जल मिलाकर दें।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठादि अर्क (आ० सा०सं०)

घटक द्रव्य –

महामंजिष्ठादि क्वाथ के द्रव्यगुण और उपयोग – यह अर्क रक्तदोष, चर्मविकार, त्वचा एवं वातरक्त (गाऊट) खाज–खुजली, शीतपित्त, विसर्प तथा कुष्ट जैसी महाव्याधि में लगातार चार से 6 माह तक सेवन करने से लाभ होता है।

सेवन मात्रा –

प्रतिदिन 20 मिली0 से 100 मिली0 (4 से 20 चम्मच) 2–3 बार अकेला अथवा समभाग जल के साथ दें।

बैद्यनाथ दशमूल अर्क (आ०सा०सं०)

गुण व उपयोगयह अर्क उत्तम वात व्याधि नाशक सिरदर्द–शिरोरोग, चक्कर–भ्रम आदि में लाभदायक के साथ–साथ स्त्रियों में प्रसूत रोग (आफटर डिलेवरी डिजीज) एवं पुरुषों के वात वाही नाड़ियों को बल प्रदान करता है, वात विकार–खुश्की एवं स्नायु दौर्बल्य में मानसिक अशांति के कारण अनिद्रा में भी लाभदायक है।

सेवन मात्रा व अनुपान रोगानुसार–

10 मिली0 से 100 मिली प्रतिदिन अकेला अथवा वातनाशक औषधियों के साथ दें।

1– अनिद्रा में – दशमूल अर्क गर्म दूध के साथ दें इससे स्नायु दौर्बल्य (नर्वस वीकनेस) एवं अनिद्रा मिटती है।

2– हृच्छ्रल (एन्जाइनापेक्टोरिम–कार्डिकपेन) में वृहत वात चिन्तामणि रस 1 गोली के साथ दें।

3– हृदय की धड़कन (घबराहट) (हार्टवीट) में 2 गोली हृदयार्णव रस एवं मोती पिष्टी 125 से 250 मिग्रा0 के साथ दें। इस प्रकार बैद्यनाथ दशमूल अर्क वात व्याधि प्रसूत रोग अनिद्रा, हृदय रोग तथा शरीर में किसी भी सम्भाग की सूजन में लाभदायक है। इस अर्क को हृदय रोग में 2 गोली नागार्जुन रस अथवा अर्जुन छाल चूर्ण 1 ग्राम मोती पिष्टी 250 मिग्रा0 के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ ब्राह्मी अर्क

घटक द्रव्य – ब्राह्मी की पत्ती

गुण और उपयोग –

ब्राह्मी अर्क मस्तिष्क के विकारों (मानसिक रोगों) में मनोवाह स्त्रोतों को शक्ति व शीतलता प्रदान कर अपगार/मिर्गी (एपिलेप्सी) उन्माद (पागलपन), अनिद्रा बेहोशी, हिस्टीरिया, स्मरण शक्ति की कमी, मूर्छा (कोमा) दिमागी खुश्की, भ्रम, चक्कर आदि विकार नष्ट होते है।

ब्राम्ही अर्क सेवन मात्रा–

20 मिली0 से 50 मिली0 (4 से 10 चम्मच) प्रतिदिन 3 से 4 बार में अकेले अथवा औषधि यों के अनुपान रूप में प्रयोग करावें।

बैद्यनाथ महमंजिष्ठादि अर्क (आ०सा०सं०)

गुण और उपयोग –

यह अपने विशिष्ट गुण धर्मों के कारण समस्त प्रकार के ज्वर (बुखार) विषम ज्वर, सतत ज्वर, इकतारा (मलेरिया) तिजारी चौथे दिन आने वाले ज्वर में सेवन कराने से रक्त में तीन दोषों को नष्ट कर रस–रक्त आदि धातुओं को शुद्धकर कुनैन से खून में बढ़ी हुई गर्मी को भी शान्त करता है और कानों में सायं–सायं की आवाज रक्तपित्त रक्त विकार पाण्डु तथा पुराना बुखार (जीर्ण ज्वर) आदि विकार शान्त होते हैं।

महासुदर्शन अर्क

सेवन मात्रा – 20 मिली० से 30 मिली० (4 से 6 चम्मच) प्रतिदिन 2–3 बार अकेले अथवा सम्बन्धित रोग औषधियों के साथ अनुपान रूप में दें।

बैद्यनाथपुनर्नवा अर्क (आ० सा०सं०)

घटक द्रव्य – पुनर्नवा मूल

गुण और उपयोग –

यह अर्क उत्तम शोथ नाशक सूजन को मिटाकर कामला पाण्डु, हलीमक, रक्ताल्पता एवं (ज्वाइंडिस) मूत्रकृच्छ/पेशाब की कमी, रक्त पित्त, वृक्क विकार/गुर्दे का रोग, मूत्राशय एवं गर्भाशय की सूजन, यकृत शोथ रोग नाशक है।

रोगानुसार अनुपान –

मूत्रकृच्छ /पेशाब की कमी व जलन में 500 मिग्रा० यवक्षार मिलाकर दें। कामला/पीलिया, पाण्डु–हलीमक रक्ताल्पता में गन्ने का रस समभाग मिलाकर दें अथवा बैद्यनाथ ग्रीष्मा 4 से 6 चम्मच (20 से 30 मिलीव) शर्बेत दो गुना जल के साथ दें।

PDF Scanner ACE Scanner

रक्तपित्त में – आंवला रस 10 मिली0 व मिश्री 5 ग्राम मिलाकर दें। गर्भाशय शोथ व सभी प्रकार की सूजन में – समान भाग दशमूल अर्क के साथ दें।

सेवन मात्रा –

बैद्यनाथ पुनर्नवा अर्क 20 मिली0 से 80 मिली0 4 से 16 चम्मच दिन रात में 3–4 बार 5 ग्राम मधु मिलाकर दें अथवा रोगानुसार औषधियों के साथ अनुपान रूप में दें।

अन्य उपयोगी द्रव्य समूह

बैद्यनाथ अर्क गुलाब

पित्त शामक, शीतल एवं मन की प्रसन्नता के लिए इसका प्रायेग जल के साथ करने से लाभकारी होता है। आँखों की जलन में भी इसका प्रयोग चिकित्सक के परामर्शनुसार लें।

बैद्यनाथ एरण्ड तैल (निघन्टु रत्नाकर)

वायु प्रधान कोष्ट वालों के लिए उत्तम जुलाब है।

बैद्यनाथ गिलोय (अमृता) सत्व

हाथ–पैरों की जलन, दाह तथा पित्त विकारों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ मधु

यवक्षार, शीत, लघुग्राही, अग्नि दीपक और नेत्र हितकारी है। अनुपान के लिये उपयोगी, शक्तिवर्द्धक है।

अंजन वर्ति सुरमा मंजन

बैद्यनाथ चन्द्रोदयावर्ति

नेत्र के जाले, फूले में उपयोगी है। सुबह–शाम पानी में घिसकर अंजन करें। नेत्र–सुप्रसिद्ध आयुर्वेदीय औषधि है। ऊपर के पर्दे पर मांस के बढ़ने व चेचक आदि के कारण फुली पड़ने में उपयोगी है।

बैद्यनाथदन्त मंजन लाल

यह मंजन दाँत तथा मसूड़ों की रोग नाशक आयुर्वेदीय दवाओं द्वारा तैयार किया जाता है मसूड़ों से खून–मवाद का आना, ठन्डे जल से चीस लगना आदि कवकास इसके नियमित व्यवहार से जाते हैं।

बैद्यनाथनेत्रामृत सुरमा

नेत्रामृत सुरमा लगाने से आँखों से दोष निकल जाते हैं तथा आंखों में शीतलता आती है। शीशी का मुँह खुला न छोड़ें।

बैद्यनाथ ममीरे का सुरमा

इसके लगाने से आँखों की लाली, दुखना, पानी गिरना, नेत्रों की सूजन आदि में लाभकारी है।

ACE Scanner

बैद्यनाथ अनुभूत औषधियाँ

जो नुस्खें या योग अत्यन्त गुणकारी सिद्ध हुये हैं, उन्हें अनुभूत औषधियों के नाम से बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में प्रचलित किया है। भारत वर्ष के प्रधान चिकित्सकों से अनुमोदन प्राप्त यह योग जनता के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुये हैं। इसके सेवन से लोग शीघ्र रोगमुक्त होते हैं। इनकी घटक द्रव्य मात्रा शीशी के पैकिंग पर लिखी होती है।

बैद्यनाथ आमलकीय रसायन (रस तंत्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह)

मुख्य घटक– आंवाला कली चूर्ण

रोगाधिकार – अम्लपित्त प्रमेह

अपथ्य – चावल का आटा, तेल उष्ण, नमकीन, खट्टी, विदाही, गुरू अन्न।

मात्रा एवं अनुपान – 5–10 ग्राम जल के साथ लगभग 15 दिनों तक या चिकित्सक के परामर्शानुसार।

बैद्यनाथ अमीबिका टेबलेट

अपथ्य – तीक्ष्ण–चरपरे, गरिष्ठ–मांस आदि। श्रम, दूध ।

मुख्य घटक द्रव्य – अतीस । कुटकी, कुटज, नागरमोथा आदि।

रोगाधिकार – पेचिस, डिसेन्ट्री, अमीबियासिस, मरोड़ में।

साथ में – बैद्यनाथ इसेब्बेल हर्बल बैद्यनाथ लिवरेक्स, टेबलेट।

कुटजारिष्ट जल के साथ मात्रा – 1–2 टेब. दिन में दो बार गर्म जल से लगभग 1 सप्ताह अथवा चिकित्सा परामर्शानुसार।

बैद्यनाथ अम्लपित्तान्तक योग

अपथ्य – तीखा, मिर्च मसाला, मांस आदि (मदिरा) नींबू, टमाटर का सेवन वर्जित, दही, तक्र आदि।

मुख्य घटक – अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, मण्डूर, आंवला चूर्ण, शंख भस्म।

रोगाधिकार – खट्टी डकारें, जी मिचलाना, वमन, गले में जलन अम्लपित्त में।

साथ में – बैद्यनाथ पुदीना अर्क

बैद्यनाथ अम्लपित्तान्तक लौह

बैद्यनाथ गैसान्तक बटी

मात्रा – 1–2 टेब. भोजन से– से पूर्व दिन में दो बार गर्म जल के साथ।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ रक्तशोधक सीरप

अपथ्य– अम्लीय पदार्थ, गरिष्ठ / भारी शुद्ध भोजन त्यागना चाहिए।

मुख्य घटक द्रव्य– अनन्त मूल, नागर मोथा, लोध्र छाल

रोगाधिकार– खाज–खुजली, चर्मरोग, फोड़ा फुंसी आदि मे ।

साथ में– बैद्यनाथ सुरक्ता सीरप

बैद्यनाथ रक्त शोधक बटी

बैद्यनाथ चर्म रोगारि मलहम (वाहय प्रयोगार्थ)

मात्रा– 10–20 मिली. जल के साथ मिलाकर दो बार। परामर्शानुसार

बैद्यनाथ कब्जहर दाने (ग्रेन्युल्स)

अपथ्य– मुख्य आहार, ऊष्म तीक्ष्ण पदार्थ, स्निग्ध पदार्थ

मुख्य घटक– सनाय पत्र, काला नमक, निशोथ, अजवायन

रोगाधिकार– कब्ज, जलन, अरूचि

साथ में– बैद्यनाथ कुमारी आसव भोजन के बाद जल के साथ।

बैद्यनाथ विरेचनी टेबलेट

मात्रा– 5 ग्राम रात्रि में सोते समय (प्रायः) अथवा चिकित्सा परामर्श पर।

बैद्यनाथ गैसान्तक बटी

अपथ्य– गुड़, अभिवंचित, तीक्ष्ण, कटु पदार्थ

मुख्य घटक– शंख भस्म, यवक्षार, सोंठ, कालानमक, शु. हींग

रोगाधिकार– पेट फूलना, वायु उदर, सीने में जलन

साथ में– बैद्यनाथ कब्ज हर दाने। बैद्यनाथ पुदीना अर्क बैद्यनाथ पंचासव जल के साथ।

मात्रा– 1–2 टेब. भोजन के बाद सुबह शाम अथवा चिकित्सक परामर्श पर

बैद्यनाथ गोदन्ती मिश्रण

मुख्य घटक– गोदन्ती भस्म, जवाहर मोहरा खताई भस्म

रोगाधिकार– विषम ज्वर, निमोनिया, मलेरिया इत्यादि।

साथ में– आनन्द भैरव रस (ज्वर)

बैद्यनाथ "प्राणदा"

मात्रा– 1–1 टेब. सुबह / शाम दूध के साथ अथवा चिकित्सक की देखरेख में।

अपथ्य– मैदा, बेसन, उड़द, इमली, केला, ककड़ी, अमरूद, आलू, मांस, शीतल पेय, तैलाभयंग, मैथुन, स्नान आदि।

बैद्यनाथ जन्मधूंटी

मुख्य घटक– अंजीर, मुनक्का, सौंफ, बड़ी हरें, वायविडंग

रोगाधिकार– बच्चों में होने वाले पेट दर्द, वमन, नाशक एवं पाचन, बलवर्धक, पुष्टिकारक

ACE Scanner

(बाह्य प्रयोगार्थ)
साथ में– बैद्यनाथ लालतैल की मालिश करना।
मात्रा– जन्म–1 वर्ष –7 बूंद जल से।
3 वर्ष– 15 बूंद जल से।

बैद्यनाथ जुकानो

अपथ्य– शीत वीर्य के पदार्थ एवं शीतलता। दही, बेसन, उड़द, आलू
मुख्य घटक– गुलबनप्सादि क्वाथ, मुलैठी, अडूसा, कन्टकारी
रोगाधिकार– सर्दी जुकाम, ज्वर, खांसी, आदि ।
साथ में– बैद्यनाथ कासामृत सीरप
लक्ष्मी विलास रस (नारदीय)
मात्रा– 10 मिली. तक बच्चों को 5 मिली. चिकित्सक के परामर्शानुसार दें।

बैद्यनाथ दिमाग दोषहरी टेबलेट

मुख्य घटक– असगंध, सर्पगन्धा, मकरध्वज, जटामांसी आदि ।
रोगाधिकार– घबराहट, चक्कर आना, स्मृति भ्रंश एवं अनिद्रा।
साथ में– बैद्यनाथ शंखपुष्पी सीरप
बैद्यनाथ ब्रेन टेबलेट
ब्राह्मी वटी (वृ.व.)
मात्रा– 1–2 टेब. दिन में दो बार 1– माह तक/चिकित्सक परामर्श

बैद्यनाथ दिमाग पौष्टिक रसायन

मुख्य घटक– शंख पुष्पी, ब्राह्मी
रोगाधिकार—– बुद्धिवर्धक, स्मृतिनाश में।
साथ में– बैद्यनाथ दिमाग दोषहरि टेब. बैद्यनाथ ब्रेन टेबलेट बैद्यनाथ शंख पुष्पी सीरप
मात्रा– 1–2 टेब. दूध के साथ 15 दिनों तक।

बैद्यनाथ पथरीना टेबलेट

अपथ्य– मधुर मुख्य–स्निग्ध पदार्थ, अधिक श्रम दूध सेवन ।
मुख्य घटक– सफेदजीरा, कबाव चीनी, चंदन, कलमी शोरा।
रोगाधिकार– अश्मरी में मूत्रकृच्छ, दर्द के साथ पेशाब होना।
साथ में– चंद्रप्रभा वटी चंदनादि वटी
मात्रा– 1–2 टेब. दिन में तीन बार जल के साथ।

बैद्यनाथ पायराइड्स टेबलेट

मुख्य घटक– अर्शोघ्नी वटी, प्रवाल पिष्टी, नागकेशर, आंवला, बोल आदि।

PDF Scanner ACE Scanner

रोगाधिकार– अर्श–रक्तार्श (खूनी–बादी)
साथ में– 2 अभयारिष्ट बैद्यनाथ विरेचनी टेबलेट
बैद्यनाथ बवासीर मलहम (वाहय प्रयोग)
साथ में– पायराइड्स टैबलेट 15 से 20 मिली. 3 से 4 चम्मच
2– अभयारिष्ट 15– से 20 मिली. समान भाग जल के साथ दें।
मात्रा– 1–2 टेबलेट प्रतिदिन जल के साथ।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक टेबलेट

मुख्य घटक– असगंध, विधारा, बड़ी इलायची, माजूफल, त्रिवंग भस्म आदि।
रोगाधिकार– स्त्री में "प्रदर रोग" (श्वेत प्रदर) में।
साथ में– बैद्यनाथ सुंदरी कल्प फोर्ट (सीरप)
बैद्यनाथ प्रदरान्तक रस
बैद्यनाथ अशोकारिष्ट
मात्रा– 2–3 टेब. चावल मांड के साथ / चिकित्सक परामर्श पर

बैद्यनाथ ब्रेनटेब

अपथ्य– अत्यधिक तनाव, भारी भोजन।
मुख्य घटक– ब्राह्मी, शंख पुष्पी प्रवाल पिष्टी, जटामांसी रोग– दिमागी परिश्रम में, स्मरण शक्ति वर्धक साथ में– बैद्यनाथ शंख पुष्पी सीरप बैद्यनाथ दिमाग पौष्टिक रसायन
मात्रा– 1–2 टेब. सुबह / शाम दूध से।

बैद्यनाथ बाम

अपथ्य– सर्दी, ठंड एवं शीतल पेय।
रोगाधिकार– सिर दर्द, सर्दी, जुकाम, आदि में वाह्य प्रयोगार्थ दिन में दो तीन बार एवं
साथ में– बैद्यनाथ जुकामों
बैद्यनाथ कासामृत सीरप

बैद्यनाथ महासुदर्शनघन बटी

अपथ्य– गोदन्ती मिश्रण की भांति।
मुख्य घटक– महासुदर्शन क्वाथ घन सत्व
रोगाधिकार– ज्वर में, सभी प्रकार के पुराने बुखार (ज्वर) में।
साथ में– बैद्यनाथ लवंगादि बटी
मात्रा– 1–2 टेब. तीन बार जल के साथ अथवा चिकित्सक के परामर्श पर।

बैद्यनाथ रक्तशोधक बटी

अपथ्य– रक्तशोधक सीरप की भांति
मुख्य घटक– मंजीठ, छोटी हर्रे, त्रिफला, शु. गंधक

ACE Scanner

उपयोग व सेवन मात्रा–

यह वातनाशक गर्भाशय, शोधक तथा दुग्धवर्धक है। प्रसूताओं को तथा कमजोर एवं शरीर से बहुत कृश स्त्रियों के लिये यह औषधि बहुत लाभदायक है। 15 मि.ली. से 20 मि.ली. तक समान जल मिलाकर भोजन के बाद सुबह–शाम दें। यह दुर्बल स्त्री पुरूषों को समान लाभकारी है।

बैद्यनाथ विटा-एक्स (गोल्ड) कैप्सूल

बैद्यनाथ वीटाएक्स गोल्ड नैसर्गिक शक्तिवर्धक रसायन है। इसके नित्य प्रति सेवन से त्रिवल (सहजबल, ऋतुबल और युक्तिबल) शारीरिक शक्ति व ऊर्जा जवानी से और वृद्धावस्था एक दाम्पत्य जीवन (शादी–शुदा जिन्दगी) सुखमय, सौहार्दपूर्ण वातावरण स्वास्थ्य कायम रखने की अपार क्षमता है क्योंकि इसमें जो घटक द्रव्य हैं उसमें स्वर्ण (सोना) भस्म, चांदी भस्म, सफेद मूसली, अश्वगंधा, शोधित शिलाजीत, वंगभस्म, शतावरी सेमल मूसली, मुलेठी, कोंच बीज, अकरकरा, विदारिकन्द, केशर, कान्तलौह भस्म, जायफल, जावित्री, सफेद चन्दन, सालम मिश्री, ब्राह्मी, पान स्वरस, गोखरू बीज, दिव्य रसायन, बाजीकरण, रक्तवर्धक, वीर्यपोषक एवं शरीर में सम्पूर्ण नाड़ी मण्डल की सक्रियता को रोग प्रतिरोधक शक्तिदायक बनाता है। वीटाएक्स गोल्ड रस रक्तादि धातुओं का पोषण कर सम्पूर्ण शारीरिक शक्ति प्रदान करता है। इसमें उपरोक्त वनस्पतियों (जड़ी–बूटियों) का घनसत्व (एक्सट्रेट) के रूप में तथा स्वर्ण–चांदी आदि द्रव्यों को भस्म (क्लॉक्स) शास्त्रोक्त विधि से मिश्रित कर कैपसूल में तैयार किया गया है।

बैद्यनाथ वीटा एक्स गोल्ड सेवन मात्रा–

विशेष गुणधर्म व मात्रा–

स्वर्णयुक्त एंक श्रेष्ठ बलदायक औषधि है। थकान, कमजोरी तथा यौन सम्बन्धों में आने वाली कठिनाईयाँ दूर करती है। एक से दो कैप्सूल दिन में दो बार दूध से दें।

बैद्यनाथ लाल तैल

मुख्य घटक– लाख

रोग– बच्चों में सूखा रोग एवं बच्चों के बलवर्धक

मात्रा– दिन में 2–3 बार बच्चों में मालिश

साथ में– बैद्यनाथ बालामृत सीरप

बैद्यनाथ रोगन बादाम

मुख्य घटक– बादाम गिरी

रोग– कब्ज, बल वर्धक कान्ति वर्धक

मात्रा– 5–10 मिली. दूध में मिलाकर सेवन करें।

बाह्य प्रयोग में– मालिश भी कर सकते है। इस तेल की मालिश से त्वचा मुलायम रहती है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ रुमार्थो गोल्ड (कैप्सूल) (स्वर्ण युक्त) (अनुभूत)

आमवात–संधिवात (रूमेटिज्म–अर्थराइटिस) से उत्पन्न विकारों के कारण शरीर में सूजन–रक्ताल्पता, जोड़ों में सुई चुभने जैसी वेदना (पेन) होना स्म्पूर्ण शरीर में ज्वर जैसी अनुभूति बनी रहना आदि इन जटिल तकलीफों का उपाय "बैद्यनाथ रूमार्थो गोल्ड'' है क्योंकि इस कल्प में स्वर्णभस्म (सोना भस्म) है। स्वर्णभस्म को शास्त्रों में आयुष्य (उम्र बढ़ाने वाला) और योगवाही रसायन (जिस वस्तु में मिलाएं, उस वस्तु को शक्तिदायक गुणवृद्धि पावरफुल) करने वाला होता है।

नया औषधि विज्ञान प्रमुख द्रव्य–

त्रिवंग भस्म, लौहभस्म, गुग्गुल, अश्वगंधा, अभ्रक भस्म, शोधित कुचला बीज, संरंजान कड़वी ''सलाई गुग्गुल'' महारास्नादि क्वाथ घनसत्व एवं स्वर्ण भस्म (सोना भस्म) आदि है।

1– त्रिवंग भस्म–

इसका प्रभाव मूत्रपिण्ड (यूरेटर) मूत्र वाहिनी नली में विशेष होता है। आमवात व संधिवात में मूत्राम्लता (यूरिकएसिड) बढ़ने से मूत्र का विसर्जन कम होने लगता है और मूत्र में यूरिक एसिड रूककर रक्त में ब्लड यूरिया की वृद्धि होने से संधियों/जोड़ों में सूजन व दर्द बढ़ जाता है। इस दोष को दूर करने के लिए त्रिवंग भस्म सर्वोत्तम है।

2– लौह भस्म–

लौह भस्म रक्ताणु वर्धक और पाण्डु (एनिमिया) रक्ताल्पता नाशक है। लौह भस्म के सेवन से रक्ताणुओं की वृद्धि होकर शरीर में उत्पन्न दर्द व सूजन को मिट जाती है।

3– योगराज गुग्गुल–

वात व्याधि के कारण–वात वाहिनी मज्जा तन्तु नाड़ियों (नवर्स) दुर्बल पड़ जाती हैं और उनकी गति मन्द हो जाती है जिससे शरीर के जोड़ों में लचीलापन नहीं होता और वे नसें कठोर सख्त होने लगतती है। उस दोष को दूर करने के लिए योगराज गुग्गुलु गुणकारी है।

4– अश्वगंधा–

स्नायु दौर्बल्य नाशक, त्रिदोष शामक, शक्तिवर्धक गुणकारक है। वात व कफदोष विकार नाशक है।

5– अभ्रक भस्म–

अभ्रक भस्म एवं लौह भस्म को एक साथ मिश्रण कर सेवन करने से रक्ताल्पता, पाण्डू कामला एवं पाचन संस्थान की विकृति दूर होती है। अनुपान भेद से अभ्रक भस्म अनेक रोगनाशक है क्योंकि यह योगवाही रसायन गुणकारक है।

6– शोधित कुचला बीज– (रुमार्थो गोल्ड में)

द्रव–वात – कफ दोष नाशक, नाड़ी दौर्बल्य (नर्वस वीकनेस) दूर कर संधिवात (जोड़ों के दर्द) के कारण अवरूद्ध शिराओं में रक्त संचार गति प्रदान करता है।

ACE Scanner

बैद्यनाथ मधु मेहारि योग (स्वर्णयुक्त) सेवन मात्रा व प्रमुख गुण :- रक्तशर्करा (ब्लडशुगर) एवं मूत्रशर्करा (यूरिन शुगर) मधुमेह की अवस्थाओं में :- 1 से 2 टेबलेट प्रतिदिन दो बार अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार दें।

अपथ्य– शर्करा युक्त पदार्थ, श्रम, मैथुन आदि।

मुख्य घटक– गुड़मार, जामुन गुठली, करेला, स्वर्ण भस्म।

रोग– "मधुमेह" विशेष में।

साथ में– बैद्यनाथ शिलाजीत कैप्सूल

मात्रा– 1 से 2 टेबलेट प्रतिदिन सुबह/शाम अथवा रोगानुसार।

बैद्यनाथ सर्पगंधा टेबलेट

मुख्य घटक– सर्पगन्धा चूर्ण

रोग– अनिद्रा, भ्रम, उच्च रक्त चाप

साथ में– बैद्यनाथ शंखपुष्पी सीरप, बैद्यनाथ ब्रेन टेब.

मात्रा– 1 से 2 टेब. रात्रि में सोते समय।

बैद्यनाथ पुदीना अर्क

अपथ्य– अम्लपित्तान्तक योग के सामान

मुख्य घटक– पुदीना रस

रोग– अजीर्ण, वमन, पेट दर्द

साथ में– बैद्यनाथ अम्ल पित्तान्तक योग

मात्रा– 1 से 2 टेब. जल के साथ।

बैद्यनाथ फीवरकट (टैबलेट)

प्रमुख घटक द्रव्य– महासुदर्शन चूर्ण, घनसत्व, कटकी आदि।

गुण और उपयोग– ज्वर, आदि सभी प्रकार के त्रिदोष (वातपित्त कफ) ज्वरप्रति बन्धक, विषमज्वर (मलेरिया) वात स्लेमिक ज्वर फ्लू आदि में लाभदायक है।

सेवन मात्रा– 1 से दो टैबलेट प्रतिदिन 2–3 बार जल अथवा महासुदर्शन अर्क से दें।

बैद्यनाथ आर्थो टेबलेट

प्रमुख घटक द्रव्य :– सलाई गुग्गुल, सुरंजान, असगन्ध त्रिवंग भस्म शोधित कुचला आदि।

सेवन मात्रा एवं गुण धर्म :– 1 से 2 टेबलेट संधिवात आमवात एवं समस्त वातदोष से उत्पन्न जोड़ों के दर्द में दें।

अनुपान महारास्नादि काढ़ा के साथ भोजन के बाद।

बैद्यनाथ शक्तिरस (अनुभूत)

प्रमुख घटक द्रव्य :– कौंचबीज, सफेद मूसली, असगंध, मकरध्वज, विदारिकन्द, जायफल, खरैरी बीज आदि।

गुण व उपयोग :– इसके सेवन से रस, रक्त, वीर्य/शुक्र आदि धातुओं की वृद्धि व पोषण होकर शक्ति प्राप्त होती है।

सेवन मात्रा :– एक से दो कैप्सूल दूध अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार दें।

PDF Scanner ACE Scanner

नाम औषधि	गुणधर्म प्रयोग
बैद्यनाथ स्वर्ण महायोग राज गुग्गुल	प्रमुख घटक द्रव्य– स्वर्ण भस्म, महायोगराज गुग्गुल, रास्ना, सप्तक क्वाथ घनसत्व आदि। इसमें – 1– स्वर्ण भस्म– योगवाही है, योगवाही उस द्रव्य को कहते हैं जिस द्रव्य में मिश्रण किया जाए उस द्रव्य योग के रोग प्रतिरोधक शक्तिवर्धक गुणों में वृद्धि करें। अतः स्वर्णभस्म रोग प्रतिरोधक शक्तिवर्धक (यूमिनिटी पॉवरफुल) त्रिदोष विकार नाशक, रक्तशोधक, रक्तवर्धक, शीतलगुण कारक हृदय रोग एवं विषनाशक है। स्वर्ण भस्म रक्तादि धातुओं और शरीर की लस्ससीका तन्तुओं का संवर्धन कर उन्हें विष व जीवाणुओं से बचाता है। जिससे स्वर्ण भस्म रक्तार्बुद–मांसार्बु (कैंसर) आदि दुसाध्य रोग नाशक है। 2– महायोगराज गुग्गुल– इसमें शोधित गुग्गुल, दशमूल क्वाथ तथा वातनाशक, रक्तवर्धक औषधि द्रव्य लौह भस्म, अभ्रक भस्म व रस सिन्दूर, वंग भस्म, नाग भस्म, चांदी भस्म के मिश्रण से आमवात, वातरक्त आदि 80 प्रकार के वात रोग, 40 प्रकार के पित्तज रोग और 20 प्रकार के रक्तचर्म कफज रोग नाशक गुणों से युक्त है। 3– रास्नासप्तक क्वाथ– रास्ना, गोखरू, गिलोय, देवदारू, पुनर्नवा, सोंठ अमलतास गूदा, वातनाशक मूत्रल, ज्वरपित्त दोष नाशक, रक्तवर्धक, पाचक–सारतत्व गुणयुक्त द्रव्यों के मिश्रण से भावित स्वर्ण महायोगराज गुग्गुल वातव्याधि नाशक, रोग प्रतिकार, शक्तिवर्धक रसायन गुणकारी है।

ACE Scanner

स्वर्ण महायोगराज गुग्गुल के प्रमुख गुण व सेवन मात्रा–

आमवात संधिवात आदि सम्पूर्ण वात दोष व जोड़ों के दर्द में लाभदायक रोग प्रतिकार शक्तिवर्ध रसायन। 1 से 2 टेबलेट दूध अथवा जल के साथ प्रतिदिन दो बार।

बैद्यनाथ स्वर्ण मकरध्वज टैब० (स्वर्ण केशरयुक्त)	प्रमुख घटक द्रव्य– स्वर्ण भस्म, मकरध्वज, त्रिवंग भस्म, केशर आदि तथा गिलोय अपराजिता व जीवन्ती शतावरी, ब्राम्ही शालपर्णी पुनर्नवा क्वाथ स्वरस से भावित उपरोक्त योगवाही आयुरक्षक, शक्ति व ऊर्जा व रक्तवर्धक रसायन गुणकारक, प्रजनन शक्ति तथा धातुपौष्टिक गुणयुक्त औषधि द्रव्यों निर्मित "बैद्यनाथ स्वर्ण मकरध्वज टैबलेट" रसायन व बाजीकरण की सर्वोत्तम औषधि है। इसके सेवन से पुरुष की नपुंसकता, स्नायुदौर्बलता, शुक्राणुदोष मिटता है तथा स्त्रियों की प्रजनन शक्तिक्षीणता में भी उपयोगी है। सेवन मात्रा – 1 से 2 टेबलेट प्रतिदिन मधु दूध के साथ दें। बल वीर्य वर्धक, शुक्रधातु पोषक, शक्तिवर्धक रसायन एक से दो टेबलेट प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करें।
बैद्यनाथ मधुमेहारि (ग्रेन्यूल्स) दाने	अधिक पौष्टिक (प्रोटीनयुक्त) आहार का सेवन अधिक करने तथा शारीरिक परिश्रम न करने और आनुवांशिक बीजदोष (हेरिडिटी) से उत्पन्न मधुमेह (डायबिटीज मिलिटस) रोग होने से शरीर में अग्न्याशय रस (इन्सूलिन) की बेहद कमी हो जाती है जिससे शरीर दुर्बल, उत्साहहीन और थकान अधिक प्यास व हृदय दौर्बल्यता आदि अनेक रोग लक्षण होने लगता है। उक्त रोग के लक्षणों से उत्पन्न विकारों में लाभदायक है।

ACE Scanner

इसमें प्रमुख घटक द्रव्य–

शिलाजीत, त्रिवंग भस्म, जामुन गुठली (मिगी) चूर्ण, गुड़मार पत्ते, विजय सार, करेला तथा आंवला एवं स्वर्णमाक्षिक भस्म का मिश्रण है।

प्रमुख गुणधर्म–

प्रमेह, मधुमेह (यूरिन शुगर–ब्लड शुगर) से उत्पन्न दुर्बलता एवं मूत्रातिसार को नियंत्रित कर शरीर में रक्त की पूर्तिकर अग्न्याशय रस (इन्सुलीन) को आपूर्ति करने में लाभदायक है।

सेवन मात्रा–

3 से 5 ग्राम प्रतिदिन दो बार जल के साथ अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार दें। मधुमेह के सभी अवस्थाओं मूत्र शर्करा–रक्त शर्करा में उपयोगी शिलाजीतयुक्त शक्तिवर्धक रसायन गुणयुक्त।

बैद्यनाथ सर्वदोषान्तक गुटिका	शीतपित्त (अनूर्जी/एलर्जी) जन्य त्वचा दोष, लाल चकते, खुजली आदि विकारों में लाभदायक। सेवन मात्रा– 2–2 टेबलेट गर्म जल के साथ प्रतिदिन दो–तीन बार दें।
बैद्यनाथ सर्वगंधा टैबलेट	उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) के कारण अनिद्रा, घबराहट सिर दर्द में लाभदायक एक से दो टेबलेट शीतल जल के साथ सेवन करें।
बैद्यनाथ हिमानी कल्याण तैल	इस तेल की मालिश एवं सिर के बालों में लगाने से सिरदर्द और बालों का गिरना मिटता है।
बैद्यनाथ आंवला तैल	प्राकृतिक सुधातत्व (कैलशियम) युक्त शीतल एवं कैशवर्धक गुणयुक्त सुभासित सुगंधित तैल सिर के बालों . को सुन्दर, घना एवं रूषी रहित रखता है।
बैद्यनाथ ईसब्बेल हर्बल	प्रमुख घटक द्रव्य– ईसबगोल, बेलफलगूदा (बेलगिरी) कुटजछाल, सौंफ, धनियां, नागर मोथा (मुस्तक), इन्द्रजोश आदि।

ACE Scanner

असमय आहार वस्तु सेवन, अजीर्ण (इन्डाइजेशन–एक्यूट एण्ड पॉइजन) एवं जीवाणु प्रदूषण ही अतिसार (डायरिया) का कारण है तथा कुछ त्रिदोष विकार के कारण भी होता है। वातज, पित्तज एवं रक्तज, रक्तातिसार एवं आगान्तुक, इस प्रकार बैद्यनाथ ईसब्बेल हर्बल सभी प्रकार के अतिसार–आंव पेचिस प्रवाहिका–अमीबियासिस, अमेबिक डिसेट्री एवं रक्तातिसार व रक्तार्श (बेसलरीडिसेट्री ऑफ पाइल्स) में भी लाभदायक है साथ ही ज्वर के साथ दस्त (अतिसार) होना ग्रीष्म एवं वर्षाऋतु मई से जुलाई–अगस्त के मध्य होने वाले सभी प्रकार के अतिसार/दस्त (डायारिया) में भी विशेष लाभदायक है।

1–इसमें ईसबगोल एवं बेलगिरि आंवपित्त पाचक है तथा 2– कुटज– इन्द्रजौ एवं सौंफ, रक्तरोधक, ज्वरशामक तथा दीपन पाचन गुणकारक है। 3–धनियां, नागरमोथा से प्यास, ज्वर तथा "लू" (सनस्ट्रोक) गर्मी को शान्त कर शीतलता एवं ऊर्जा प्रदान करता है। सेवन मात्रा – वयस्कों के लिए 3 से 5 ग्राम ग्रेन्यूलस प्रतिदिन 3–4 बार जल के साथ दें। 2 से 5 वर्ष के आयुवर्ग बच्चों के लिए 1/2 ग्राम तक दो बार 6 से 10 वर्ष के आयुवर्ग बच्चों के लिए 2 ग्राम से 3 ग्राम तक प्रतिवार प्रतिदिन 3 बार जल, अनार का रस अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार दें। ग्रीष्म एवं वर्षा काल में होने वाले आंव, पेचिश (डिसेन्ट्री) तथा ज्वरयुक्त अतिसार में रक्तातिसार में भी लाभदायक सेवन मात्रा 3 से 5 ग्राम जल के साथ।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश रॉयल

शरीर पुष्टिकारक लौह खनिज विटामिन्स तत्वों से भरपूर रसायन गुणकारक। सेवन मात्रा 10 से 20 ग्राम 200 मिली. दूध के साथ 2 से 4 टैब.

ACE Scanner

जल के साथ भोजन के बाद।

बैद्यनाथ पाचक बटी

अजीर्ण, अम्लपित्त, अरूचि दूर कर आहार रस का पाचन कर भूख की वृद्धि होती है।

बैद्यनाथ रूमार्थो टेबलेट

आमवात एवं वातरोगों से उत्पन्न जोड़ो की सूजन संधिवात/गठियावात के लिए लाभदायक।

सेवन मात्रा–1 से 2 टेबलेट भोजन के बाद जल के साथ दें।

बैद्यनाथ कासामृत हर्बल

प्रमुख घटक द्रव्य –

सोमलता, मुलैठी (यष्ठि मधु) वासकमूल, पिप्पली (पीपली) कण्टकारी, शक्कर आदि कास/खांसी, वात, पित्त, कफदोष विकार के कारण अथवा अन्य किसी रोग के कारण भी खांसी बाल–युवा, वृद्ध सभी आयुवर्ग में होती है। खान–पान की विकृति एवं मौसम (ऋतु) परिवर्तन काल में भी खांसी होती है। वयस्क एवं बच्चों के लिए एक ही कल्प (फार्मूला) है जो सभी को असानी से सेवन कराया जाए। फार्मूले में कोई केमिकल और नशा लाने वाली औषधि द्रव्य भी नहीं हो, इस विचार के बाद "बैद्यनाथ कासामृत हर्बल" की प्रस्तुति की गयी है इसमें सोमलता और पीपल–श्वास–प्रसार की गति को अपने प्रभाव गुण से नियंत्रित करती है। कण्टकारी–मुलैठी में वातपित्त शामक गुण प्रभाव एवं कफ निसारक कण्ठ/गले व स्वर–श्वास नली की सूजन को कम कर कफ को मूत्र व मल मार्ग से शरीर से बाहर करने का नैसर्गिक गुण प्रभाव है। इसमें वासकमूल (अडूसा) एवं वातपित्त शामक, मृदुविरेचक–मूत्रल बलदायक गुण प्रभाव से ज्वर नाशक है। वातदोष हर, वात–पित्तज, खांसी काली व कुक्करखांसी (हुपिनकफ) में लाभदायक है। साधारण खांसी होते ही इस सीरप का सेवन कराना चाहिए ताकि खांसी में शीघ्र लाभ हो। सेवन मात्रा दृ 2 से 3 चम्मच (10 से 15 मिली0) प्रतिवार दिन में 3–4 बार दें।

बच्चों के लिए—1 वर्ष से 3 वर्ष आयु वर्ग को 1/2 चम्मच (2 से 3 मिली0) तक प्रतिदिन 3—4 बार दें।

4 वर्ष से 10 वर्ष आयु वर्ग को 1 से 2 चम्मच (5 से 10 मिली०) तक प्रतिदिन 2—3 बार दें। सभी प्रकार की सूखी व कफयुक्त खांसी में तथा ज्वर व श्वांस से उत्पन्न खांसी में लाभदायक।

बैद्यनाथ चर्मरोगारि मलहम (गंधक युक्त)

इस मलहम को त्वचा में लगाने से खाज—खुजली, फोड़ा—फुन्सी एवं घाव से राहत मिलती है।

बैद्यनाथ दादुरीन मलहम

दादुरीन लोशन से यह दादुरीन क्रीम सौम्य व त्वचा में उत्पन्न दाद, खाज, छाजन, एग्जिमा आदि रोग दूर होते हैं तथा त्वचा स्वच्छ, साफ व मुलायम होती है। इसे त्वचा में मलकर लगाना चाहिए।

बैद्यनाथ बालामृत सीरप

घटक द्रव्य—

मुलैठी, अजवायन, अतीस, काकडासिंगी, वच परिश्रुत चूर्णोदक (डिस्टलेट लाइम वाटर), हरीतकी, वायविडंग एवं शक्कर आदि। नवजात बच्चा जब 7—8 माह की आयु वर्ग में पहुंचता है तब उसे अन्न रस एवं फलों का जूस भी दिया जाने लगता है। वही अवस्था दांत निकलने/जानने की भी होती है, उस समय बच्चों के शरीर को नैसर्गिक सुधातत्व (कैल्शियम) की अत्यन्त आवश्यकता होती है साथ ही पाचन—क्रिया की कमी से भूख की कमी हो जाती है। यदि उस समय से ही इस पाचक एवं सुधा/कैल्शियम तत्व की पूर्ति नहीं होती तो बच्चे की अस्थियों का विकास एवं रसरक्तादि धातुएं विकसित नहीं होती और बच्चा शिशु से किशोर अवस्था तक दुर्बल अविकसित, मानसिकता का हो जाता है। शिशु से किशोर अवस्था तक भूख की वृद्धि और शरीर के विकास के लिए बैद्यनाथ ने प्रस्तुत किया "बैद्यनाथ बलामृत (सीरप)" में पाचन

ACE Scanner

शक्ति और कैल्शियम की पूर्ति के लिए चूर्णोदक (लाइम वाटर) एवं अजवायन आदि नैसर्गिक पाचक एवं उर्जावर्धक तत्व है तथा नैसर्गिक रसायनगुण एवं मानसिक विकास के लिए। रोगनाशक सप्तधातु पोषक नैसर्गिक तत्वयुक्त मुलैठी, वायविडंग, बच, हरें (हरीतकी) और अतीस, शक्कर आदि से नैसर्गिक विटामिन्स व कैल्शियम की आपूर्ति के लिए प्रस्तुत है।

बच्चों की आयु अनुसार मात्रा–

6 माह से 1 वर्ष आयु वर्ग के लिए 1/2 से 1 चम्मच (2 से 5 मिली०) प्रतिदिन 2–3 बार दें। दो से 12 वर्ष आयु वर्ग के लिए 1 चम्मच से 2 चम्मच प्रतिदिन 2–3 बार दें।

बच्चों के लिए प्राकृतिक विटामिन्स व कैलशियम खनिज तत्वों से भरपूर गुणकारक एवं पाचन क्रिया सुधारकर भूख बढ़ाता है। यह सुमधुर रूचिवर्धक पेय (शर्बत) है।

बैद्यनाथ अर्कपुदीना पर्ल (पुदीना)	अजीर्ण–अपच के कारण उत्पन्न पेट दर्द एवं गर्मी के कारण वमन/कै, उल्टी में शीघ्र लाभदायक। सेवन मात्रा– 1 से 2 कैपसूल (पर्ल)। जल के साथ प्रतिदिन 2–3 बार।
बैद्यनाथ स्पिरूविन एक्टिव टेबलेट	घटक द्रव्य – स्पूविन यह विश्व भर में चुनिन्दा "वनस्पति परिवार" की समृद्ध एवं सर्वाधिक नैसर्गिक आहार के रूप में रोग प्रतिरोधक क्षमतायुक्त शक्तिवर्धक रसायन है। स्पिरुलिना में निम्नलिखित नैसर्गिक प्रमुख तत्व होते हैं। 1– क्लोरोफिन– शरीर के अवशिष्ट पदार्थों को पोषण में सहायक पोषकतत्व जो अंग प्रयत्यों को मजबूती देता है।

ACE Scanner

2– इन्जाईमस/पाचक तत्व–
शरीर के पाचन क्रिया को स्वस्थ व सन्तुलित रखते हुए शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को स्थायी रखता है।

3– वयस्थापक रसायन/एण्टी ऑक्सीडेण्ट विशेषकर विटाकेरोटिन की आपूर्ति करता है।

4– इसमें एक नैसर्गिक गमालिनोलेनिक एसिड/ अम्ल होता है जिसे वैज्ञानिक जीएल0ए0 कहते हैं इससे महिलाओं के मासिक धर्म एवं गर्भावस्था में होने पर उपयुक्त आधार प्रदान करता है। वैज्ञानिकों द्वारा विकसित रोग प्रतिरोधक – एन्टीबायोटिक कृत्रिम औषधियों की संसार भर में भरमार है जिनका अब तक के परीक्षणों से सिद्ध हो चुका है कि कृत्रिम रोग प्रतिरोधक नैसर्गिक वनस्पतियों से निर्मित औषधियों की बराबरी में रोग शामक नहीं बल्कि विकृति सामने देखने को मिल रही है। ऐसी स्थिति में सन्तुलित आहार/भोजन के आवश्यक तत्व, लौह, प्रोटीन, कैल्शियम, केरोटीन इत्यादि भरपूर पोषण "बैद्यनाथ स्प्रूविन एक्टिव" प्रतिदिन सेवन करने से प्राप्त होते हैं जो शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को नैसर्गिक रूप से बनाये रखने में सक्षम हैं।

चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि स्प्रूविन के 1 ग्राम औषधि में अण्डों से 6 से 8 गुना और दूध से 20 गुना शक्ति संचय होता है। इस पर्यावरण दुर्भिक्ष युग में प्रदूषण समस्या से बढ़ते हुए अनेक रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है। यह स्वस्थ एवं रोग अवस्था में समान दुर्बलतानाशक हृदय रोग, बढ़ती उम्र तथा तनावग्रस्त मानसिकता में भी लाभदायक है।

सेवन मात्रा –
2 टेबलेट प्रतिदिन जल दूध अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार बच्चों को आधी मात्रा (1 टेबलेट प्रतिदिन) दें।

ACE Scanner

नियमित 2 टेबलेट सेवन करने से सन्तुलित आहार (भोजन) के आवश्यक तत्व लौह, प्रोटीन कैलशियम कैरोटीन इत्यादि का भरपूर पोषण मिलता है। सेवन मात्रा–2 टेबलेट प्रतिदिन प्रातः जल के साथ।

बैद्यनाथ स्ट्रेसविन कैपसूल

घटक द्रव्य–

अश्वगंधा घनसत्व, ब्राम्ही (मण्डूक पर्णी) जटामांसी घनसत्व आदि।

इस अर्थयुग में दैनिक शारीरिक एवं मानसिक कार्य की अधिकता के कारण तन और मन दोनों प्रकार की थकान स्नाविक दौर्बल्यता (नर्वसवीकनेस) के कारण अनिद्रा रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) का बढ़ना अथवा लो ब्लड प्रेशर (निम्न रक्तचाप) आदि कारणों से तनाव / स्ट्रेस हो जाता है उस अवस्था में मदकारक औषधियों से शीघ्र आराम की दृष्टि से नशीली वस्तुओं की अपेक्षा–बैद्यनाथ द्वारा प्रस्तुत स्ट्रेसविन (कैपसूल) का सेवन करना चाहिए। इसमें "अश्वगंधा घनसत्व" सम्पूर्ण शरीर के नाड़ी मण्डल (नर्वस सिस्टम) की "लस्सीकाग्रंथियों एवं शिराओं में वातदोष की विकृति दूर कर उन (स्नायुमण्डल) में रक्त संचार नियमित कर वातपित्त दोष का शमन का काम करता है। अश्वगंधा नैसर्गिक शक्ति स्फूर्तिदायक है।

ब्राम्ही (मण्डूकपर्णी) मेंध्य रसायन है इसकी क्रिया विशेष कर मस्तिष्क स्नायु तन्तुओं पर होती है। यह मस्तिष्क की मज्जा तन्तुओं को शक्ति प्रदान कर शीतलता / ठण्डक पहुंचाती है जिससे अनिद्रा, अपस्मार, उन्माद और उच्च रक्तचाप में भी लाभदायक है। इसमें जटामांसी घनसत्व होने से – रक्ताभिसरण क्रिया की कमी और अधिकता में विशेष लाभदायक है। यह सिरदर्द, थकान, अनिद्रा एवं चक्कर आना, बेहोशी आदि में भी लाभदायक

ACE Scanner

बैद्यनाथ पेटेण्ट व फार्मोकोपियल दवाएं

बैद्यनाथ ईसब्बेल

आँव, दस्त, पेचिस, मरोड़, आमातिसार, खून के दस्त तथा पुराने आमाशं के कारण पेट में वायु का प्रकोप और गैस होने पर तत्काल फायदा होता है। 5 से 10 ग्राम तक जल के साथ लेनी चाहिए।

बैद्यनाथ कासामृत

इसके सेवन से पुरानी से पुरानी और बार–बार होने वाली खाँसी, कुक्कुर खाँसी, इन्फ्लूएन्जा, फुफ्फुस, श्लेष्म संस्थान से सम्बन्धित सभी रोगों में शीघ्र लाभ होता है। 1 से 2 चम्मच तक जल के साथ लें।

बैद्यनाथ गुल्लरीन

टांसिल का बढ़ना, मुँह में छाले एवं सूजन, मसूढ़ों से खून व मवाद का आना, दुर्गन्ध, दांतों का हिलना, कीड़े का लगना, पायरिया आदि में लाभदायक है। 2–2 बार रूई के फाहे में लगाकर प्रयोग करना चाहिए।

बैद्यनाथ प्राणदा

बैद्यनाथ प्राणदा से हर साल मलेरिया बुखार के लाखों रोगी जीवन पाते है, इसलिए इसका नाम प्राणदा बिल्कुल सही है, एकतारा, तिजारी, चौथिया, पसली, जूड़ी–पारा का बुखार, बखट और ताप, तिल्ली आदि मलेरिया के विभिन्न नाम रूप हैं। मलेरिया बुखारों को हर हालत में यह तुरन्त फायदा पहुँचाती है। खून को बढ़ाकर ताकतवर बनाती है। मिश्री, मुनक्का, खिलाने के बाद एक चम्मच पिलानी चाहिए।

बैद्यनाथ चर्मरोगारि

इस दवा के लगाने से त्वचा पर होने वाले तरह–तरह के रोग जैसे घाव, अपरस, फुन्सी, खाज–खुजली आदि में जल्द से आराम मिलता है।

बैद्यनाथ दन्तवेष्टारि

मसूढ़ों से खून गिरना, दांतों का हिलना, मसूढ़ों को दबाने से मवाद निकलना और मूँह से दुर्गन्ध आना आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी है। 10–15 बूँद दवा चम्मच में डालकर रूई से मसूढ़ों पर मलना चाहिए।

बैद्यनाथ दादुरीन (लिक्विड लोशन)

पुराने से पुरानी दाद अर्थात दाद के अति सूक्ष्म कीड़े चमड़ी के अन्दर रहते है उन कीड़ों को यह दवा चमड़े के अन्दर पहुंचकर पूर्ण रूप से नष्ट करती है। रूई के फाए में लगातार सुबह–शाम लगाना चाहिए।

बैद्यनाथ दाद मलहम

इसके एक दो मालिश से ही दाद की खुजलाहट प्रायः मिट जाती है इसके लगातार मालिश से दाद जड़मूल से दूर हो जाती है और पुनः उमड़ने का डर नहीं रहता है।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ मलेरिया टैब.

मलेरिया बुखार की उत्तम दवा है 1–1 गोली सुबह–शाम खाना चाहिए।

बैद्यनाथ बालामृत (मुलैठी, अतीस, काण्डायोगी, वच)

खून की कमी से पतले हो जाने पर बच्चे रोगी हो जाते हैं और पनपते नहीं है उन्हें खाना अच्छा नहीं लगता, दाँत ठीक समय पर नहीं निकलते तथा दस्त, उल्टी, बुखार आदि अनेक रोग हो जाते हैं इन समस्त के लिए लाभ पहुँचा कर शरीर में शक्ति पहुँचाकर फुर्ती से चलने, खड़े होने में तथा कफ, खाँसी, अजीर्ण, फेफड़ों की कमजोरी तथा शरीर को हष्ट–पुष्ट बलवान बनाती है। बच्चे की आयु अनुसार दवा पिलानी चाहिए।

बैद्यनाथ विरेचनी टैबलेट

कोष्ठबद्धता में उपयोगी है। इसके सेवन से पेट की सफाई, कब्ज तथा दस्त साफ करता है। एक–एक गोली सुबह–शाम खाना चाहिए।

बैद्यनाथ वातरीना टैबलेट

प्रमुख घटक द्रव्य – सुरंजान, सोंठ, असगन्ध

गुण और उपयोग – आमवात, संधिवात गठिया जोड़ों का दर्द तथा विशेषकर गृन्ध सीवात (साइटिकापेन) में विशेष लाभदायक है। इसमें सुरंजान पाचन क्रिया को प्रत्यक्ष उत्तेजना प्रदया कहती है तथा यकृत को उत्तेजना देकर पित्त संचाल क्रिया को व्यवस्थित कर मूत्र विसर्जन क्रिया को बढ़ाता है। इसमें मृदुविरेचन–मूत्रल गुण प्रभाव से जोड़ों का दर्द व सूजन कम होती है। यह उष्ण गुण प्रभाव से रक्त वाहिनियों व स्नायुजाल में रक्त संचार क्रिया करक है। इसमें गृधसी (साइटिका पेन) में भी लाभदायक है।

वातीना टैब. में सोंठ होने से वात कफ दोष का पाचन होता है और असगन्ध से स्नायु दौर्बल्य मिटकर सम्पूर्ण नाड़ी मण्डल (नर्वस सिस्टम) को शक्ति मिलती है।

सेवन मात्रा – 1 से 2 टैबलेट महारास्नादि काढ़ा जल, दूध अथवा रोगानुसार उचित अनुपान से दें।

लेप्रीन (टेबलेट)

प्रमुख घटक द्रव्य – निरगुण्डी जड़ी (मूलकन्द) संगजराहत, बबूल गोद आदि। गुण और उपयोग – सुदीर्घ अनुसन्धान के बाद लेप्रीन टेबलेट को कठिन चर्म रोग एवं कुष्ठ (लेप्रोसी) में विशेष उपयोगी पाया गया है। इसमें निर्गुणी के मूल (जड़) में एक विशेष कन्द के रूप में प्राप्त जड़ी से बनाया जाता है। साथ ही संगजराहत बबूल गोड़ के संयोजन से निर्मित 'बैद्यनाथ लेप्रीन' वात रक्त, कुष्ठ तथा कठिन चर्मरोग नाशक है।

सेवन मात्रा – 1 से 2 टैबलेट जल अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ ग्रीष्मप्राश

यह आमला, गाय (घृत), अश्वगन्धा, शतावरी, चन्दन, खस, बिल्ब, अग्निमंथ, पाटला, शालपर्णी, प्रश्नपर्णी, गुलकंद, शुगर, दालचीनी, मोती पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, केसर, इलायची आदि से मिलकर बना हुआ एक रसायन है।

गुण और उपयोग :

यह विशेष रूप से गर्मियों के लिए शीतल फूड है। यह शरीर की अत्याधिक प्यास, हीट स्ट्रोक और जलन को कम करने में मदद करता है। शक्ति से भरपूर रोग प्रतिरोधक क्षमता और अंदरूनी शक्ति बढ़ाये। यह शरीर और मन को फिर से जीवंत करने के लिए ऊर्जा का अच्छा स्त्रोत है। असरदार एंटी ऑक्सिडेंट।

मात्रा :

1–2 चम्मच दूध के साथ सुबह शाम।

बैद्यनाथ हरिद्रा टेबलेट / अमृत हल्दी

यह हल्दी एक्सट्रेक्ट व हल्दी पाउडर से बना हुआ एक योग है। जोकि त्वचा एवं श्वसन सम्बन्धी एलर्जी को कम करने में सहायक तथा रोग प्रतिरोधक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक है।

गुणधर्म :

हल्दी में रोग के निवारण और चिकित्सा में उपयोग करने के गुण होते हैं। हल्दी का उपयोग भारत में वैदिक संस्कृति के लगभग 4000 वर्ष से हम इसका प्रयोग करते आ रहे है। आधुनिक अध्ययनों से पता चलता है कि हल्दी एक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट, एंटीवायरल, एंटीफंगल व एंटी बैक्टीरियल एजेंट है।

मात्रा :

1 टेबलेट दिन में दो बार दूध के साथ लेना चाहिए।

10–10 बूँद दिन में दो बार दूध या पानी के साथ।

बैद्यनाथ अमृत तुलसी / तुलसी अर्क

बैद्यनाथ अमृत तुलसी 5 प्रकार की तुलसियों के अर्क से बनाया गया है, यह विशेष आसवन विधि से तैयार किया जाता है।

गुणधर्म :

तुलसी में एण्टीऑक्सीडेंट गुण पाये जाते है, जिसके कारण यह इम्यूनिटी बढ़ाने में उपयोगी हैं यह प्राकृतिक जीवाणु रोधी, एण्टी एजिंग व संक्रमण रोधी है। इसके सेवन से मानसिक तनाव दूर होता है।

मात्रा :

अमृत तुलसी– 1–5 ड्रॉप 1 कप पानी के साथ सुबह शाम।

तुलसी अर्क– 5–10 मिली. जल के साथ दिन में दो बार।

PDF Scanner ACE Scanner

बैद्यनाथ औषधि विज्ञान

बैद्यनाथ आयुर्वेदीय प्रकाशन -

बैद्यनाथ प्रतिष्ठान केवल औषधि निर्माणशाला ही नहीं है बल्कि शुद्ध अर्थ में यह आयुर्वेद की मूर्तरूप संस्था है, जो आयुर्वेद के पूर्ण ज्ञान के साथ ''आयुर्वेद'' का अतीत गौरव का प्रत्यक्ष संसार के समक्ष पुन्नरोत्थान की दिशा में विगत 100 वर्षों से भी अधिक समय से कार्यरत् व प्रयत्नशील है। एक ओर जहां उत्तमोत्तम औषधि निर्माण द्वारा आयुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा करता है वहीं दूसरी ओर इसके उत्तमोत्तम और प्रमाणित ग्रंथों के प्रकाशन की समुचित और युगानुरूप पाश्चात्य (आधुनिक) विज्ञान शैली के साथ समन्वयता युक्त प्रबन्ध भी है। आयुर्वेद के प्राचीन एवं आधुनिक प्रमाणिक ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ बैद्यनाथ प्रतिष्ठान के संस्थापक स्व. वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा जी ने जो अथक प्रयास किया था वह आज एक विशाल वट वृक्ष की भांति आयुर्वेद जगत में प्रचलित पुष्पित और सघन छायायुक्त अपने 64 प्रमाणिक ग्रन्थों से आयुर्वेद जिज्ञासुओं को सम्बल प्रदान कर रहा है। इनमें से कुछ आयुर्वेद महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में कुछ औषधि निर्माण मानक ग्रन्थ के रूप में और कुछ ग्रन्थ शोध (रिसर्च) कर्ताओं के मार्गदर्शन में उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। और कुछ ग्रन्थ पाठ्य आलोच्य एवं संग्रह ग्रन्थ आयुर्वेद में ऐतिहासिक दृष्टि से उपयोगी है।

1— अभिनव शारीरम (संस्कृत) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या—580

2— अभिनव शारीरम (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ट संख्या—640

3— अष्टांग संग्रह (सूत्रस्थान) हिन्दी चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या—900

4— अष्टांग संग्रह (उत्तरास्थान) हिन्दी प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या—950

5— अष्टांग संग्रह (शरीर, निदान, चिकित्सा कल्पसिद्ध स्थान) संस्कृत—हिन्दी प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या—1167

6— अष्टांग संग्रह की वनौषधियां एवं वर्गीकरण (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या—120

7— अम्लपित्त प्रकरण (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या —27

8— आरोग्य प्रकाश (हिन्दी) छबबीसवां संशोधित संस्करण पृष्ठ संख्या—546

9— आरोग्य प्रकाश (मराठी) चौबीसवां संस्करण पृष्ठ संख्या—566

10— आरोग्य प्रकाश (गुजराती) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या—667

11— आरोग्य प्रकाश (अंग्रेजी पार्ट—1) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या —443

12— आरोग्य प्रकाश (अंग्रेजी पार्ट—2) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या—629

13— आयुर्वेद क्रिया शरीर (हिन्दी) अष्टम संस्करण पृष्ठ संख्या—957

14— आयुर्वेद सार संग्रह (हिन्दी) इक्कीसवां संस्करण पृष्ठ संख्या—742

15— आयुर्वेद व्याधि विज्ञान पूर्वार्ध (हिन्दी) पंचम संस्करण पृष्ठ संख्या—132

PDF Scanner ACE Scanner

16– आयुर्वेद व्याधि विज्ञान उत्तरार्ध (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–286
17– आयुर्वेद पदार्थ विज्ञान (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–288
18– आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान (हिन्दी) षष्ठम संस्करण पृष्ठ संख्या–715
19– आयुर्वेदीय हितोपदेश (हिन्दी) सप्तम संस्करण पृष्ठ संख्या–296
20– औषधि विज्ञान शास्त्र (हिन्दी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–833
21– बैद्यनाथ औषधि विज्ञान (हिन्दी) संकलन पृष्ठ संख्या–47
22– आयुर्वेदीय औषधि सेवन विधि (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–112
23– किशोर रक्षा और ब्रम्हचर्य (हिन्दी) षष्टम संस्करण पृष्ठ संख्या–166
24– आयुर्वेदीय औषधि सेवन विधि (मराठी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–116
25– आयुर्वेदीय औषधि सेवन विधि (गुजराती) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–140
26– आत्यधिक चिकित्सा (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–250
27– अग्न्यतिसार संग्रहणी कोष्ट वात प्रकरणनि (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–437
28– उपचार पद्धति (हिन्दी) एकादस 11वां संस्करण पृष्ठ संख्या–107
29– किशोर रक्षा और ब्रम्हचर्य (हिन्दी) षष्ठम संस्करण पृष्ठ संख्या–116
30– चर्मरोग निर्देशित (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–504
31– चरक एवं सुश्रुत के दार्शनिक विषय का अध्ययन (हिन्दी–संस्कृत) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या –175
32– त्रिदोष तत्व विमर्श (हिन्दी) पंचम संस्करण पृष्ठ संख्या–194
33– द्रव्यगुण विज्ञान पूर्वार्ध (हिन्दी–संस्कृत) षष्ठम संस्करण पृष्ठ संख्या–360
34– निदान चिकित्सा हस्तामलक प्रथम खण्ड (हिन्दी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–816
35– निदान चिकित्सा हस्तामलक द्वितीय खण्ड (हिन्दी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–717
36– निदान चिकित्सा हस्तामलक तृतीय खण्ड (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या620
37– निदान चिकित्सा हस्तामलक चतुर्थ खण्ड (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–672
38– नेत्र चिकित्सा (संस्कृत) प्रथम भाग– द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–288
39– नेत्र विज्ञान (संस्कृत) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या –201
40– नेत्र रोग विज्ञान (मराठी) षष्ठम संस्करण पृष्ठ संख्या–202
41– पदार्थ विज्ञान (हिन्दी) षष्ठम संकरण पृष्ठ संख्या–264
42– परिषर्ध शब्दार्थ शारीरम (संस्कृत) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–279
43– प्रारम्भिक रसशास्त्र (मराठी)
44– मानस रोग विज्ञान (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ संख्या–223
45– मोटापा कम करने का उपाय (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–148
46– मानस आयुर्वेद (मराठी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–132
47– यूनानी चिकित्सा सार (हिन्दी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–576
48– यूनानी सिद्धयोग संग्रह (हिन्दी)पंचम संस्करण पृष्ठ संख्या–237

PDF Scanner ACE Scanner

49– यौवन विज्ञान पर नया प्रकाश (हिन्दी)द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–208
50– वनौषधि शतक (हिन्दी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–208
51– संदिग्ध वनौषधि दर्शिका (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–380
52– वैद्य सहचर (हिन्दी) नवम संस्करण पृष्ठ संख्या–349
53– बैद्यनाथ आयुर्वेद ज्ञान की पुस्तिका (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–60
54– सिद्धयोग संग्रह (हिन्दी) दशम संस्करण पृष्ठ संख्या–176
55– संक्रामक रोग विज्ञान (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–818
56– शारंगधर संहिता (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–608
57– शालाक्य तंत्र कर्णनाशी (मराठी) भाग1 पंचम संस्करण पृष्ठ संख्या
58– शालाक्य तंत्र मुखरोग पार्ट–2 (मराठी) भाग–2 षष्ठम संस्करण पृष्ठ संख्या–230
59– शालाक्य तंत्र कर्णनाशा पार्ट–1 (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–188
60– शालाक्य तंत्र मुखरोग पार्ट–2 (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–220
61– शरीर क्रिया विज्ञान (हिन्दी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–279
62– शरीर क्रिया विज्ञान (मराठी) तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या–279

श्री शर्मा आयुर्वेद मंदिर, दतिया के आयुर्वेदीय प्रकाशन

63– द्रव्यगुण विज्ञानम उत्तरार्द्ध (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण संस्करण पृष्ठ संख्या–482
64– पारद विज्ञानम (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–355
65– भारतीय रसशास्त्र (हिन्दी) द्वितीय संस्करण पृष्ठ संख्या–592

बैद्यनाथ के आयुर्वेदिक अंग्रेजी प्रकाशन

66– थैराप्यूटिक गाइड (अंग्रेजी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या–102
67– साइंस एण्ड फिलोशफि ऑफ इण्डियन मेडीसिन (अंग्रेजी) प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या –351
68– टेट्रीज ऑन 30 इम्पोरटेन्ट बैद्यनाथ प्रोडक्ट्स (अंग्रेजी) प्रथम संकरण पृष्ठ संख्या–100
69– दि प्रोब्लम्स ऑफ आयुर्वेदिक रिसर्च (अंग्रेजी) पृष्ठ संख्या–120
70– बेसिक प्रिसंपल ऑफ आयुर्वेदिक रिसर्च (अंग्रेजी) चतुर्थ संस्करण पृष्ठ संख्या–150
71– बैद्यनाथ बुक ऑफ आयुर्वेद नॉलेज (अंग्रेजी)
72– कॉन्सेप्ट ऑफ आयुर्वेद फोन प्रफेक्ट हेल्थ एण्ड लौंगविटी

ACE Scanner

for

Covid Recovered

patients

- **अश्वगंधा कैप्सूल/अश्वगंधादि चूर्ण/ अश्वगंधा चूर्ण/अश्वगंधारिष्ट**
  श्रम व क्लम में लाभकारी
- **नवजीवन रस/सिद्ध मकर ध्वज**
  मांस पेशियों व जोड़ो में होने वाले दर्द में लाभदायक
- **ब्राम्ही वटी(गोल्ड)**
  तंत्रिका तंत्र व मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी
- **लक्ष्मी विलास रस**
  फेफड़ों के लिए रसायन
- **सितोपलादि चूर्ण/प्रवाल पिष्टी**
  श्वसन तंत्र के लिये रसायन
- **अगस्त्य हरीतकी/वासा अवलेह/कंटकारी अवलेह**
  श्वसन तंत्र के लिये रसायन

For Co-Morbid Patients with or without Covid

- **For Diabetics:** बसन्त कुसुमाकर रस/ मधुमेहारी योग/Diawin-DS
- **For Asthamaetics:** श्वांस कल्प/श्वांस चिंतामणि रस/ त्रैलोक्य चिंतामणि/वासा अवलेह
- **Hyperacidity:** अमलपित्तान्तक योग/ अमलपित्तान्तक योग/मुक्ता पन्चामृत/प्रवाल पन्चामृत
- **Thyroidism:** Stresswin/पंचकोल चूर्ण
- **Obesity:** मेदोहर गुग्गलु + दशमूल अर्क/ पुनर्नवादि अर्क
- **Anexity:** सर्पगंधा टेबलेट/Stesswin/ Brain
- **Heart:** नागार्जुनाभ्र रस/योगेंद्र रस/Cadiwin-DS

*Dose Specifications may be needed as per patient age or others parameters so kindly consult a qualified Ayurvedic Physician/Vaidya.

If any one is

Covid +ve

then following can be used

- **फीवर कट/महासुर्दशन घन वटी**
  ज्वारावस्था के लिए।
- **वासा अवलेह/अगस्त्य हरीतकी अवलेह/ गुल वनप्सादि काढ़ा**
  गलशोथ, गलपाक, कास के लिए।
- **श्वांस चिन्तामणि/त्रैलोक्य चिन्तामणि/ महा लक्ष्मी विलास रस**
  श्वांस, कास, शोथ के लिए।
- **जय मंगल रस/स्वर्ण बसन्त मालती**
  तीव्र ज्वारावस्था में उपयोगी।
- **श्रृगाराभ्र रस/लक्ष्मी विलास रस/श्वांस कल्प**
  कृच्छ श्वांस, कफाधिक्य जन्य कास, प्राणवह स्रोतों रोध

Immunity Boosters

for Covid +ve family members

- **गिलोय घन वटी**
  सभी के लिए।
- **संशमनी वटी (अतीस युक्त)**
  8 साल तक के बच्चों के लिए।
- **पंचकोल चूर्ण**
  1 कप गर्म पानी में 2 चुटकी डाल कर पियें।
- **लिवरैक्स टैबलेट/सिरप**
  हैल्दी डायजेशन के लिए।
- **ब्रेन टैब/स्ट्रेसविन**
  स्ट्रेस एवं ऐनजाइटी से लड़ने में सहायक।
- **अणु तैल**
  1-2 बूंद नाक में सुबह-शाम डालें।

*Dose Specifications may be needed as per patient age or others parameters so kindly consult a qualified Ayurvedic Physician /Vaidya.



PDF Scanner ACE Scanner